श्रेष्ठ विदेशी उपन्यास

अनुवादक
इलाचन्द्र जोशी
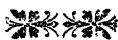
प्रकाशक
रामनारायण लाल
पब्लिशर और बुकसेलर
इलाहाबाद

१९४१

प्रथमबार] [मूल्य २॥)

1629
852-11/100
96519

प्रस्तावना

प्रस्तुत पुस्तक में विश्व-साहित्य के २१ श्रेष्ठ उपन्यासों का सार दिया गया है। चेष्टा यह की गई है कि प्रत्येक उपन्यास के कथानक के साथ ही उसकी कलात्मक विशेषता का आभास भी पाठकों को प्राप्त हो जाय। इसमें कहाँ तक सफलता प्राप्त हुई है इसका निर्णय करने के अधिकारी हम नहीं हैं। प्रत्येक उपन्यास के लेखक का संक्षिप्त परिचय देना भी हमने आवश्यक समझा है। जितने भी लेखकों की रचनाओं का सार इसमें संगृहीत हुआ है, वे सभी चोटी के हैं।

—:o:—

वित्तर हूगो

वित्तर मारी हूगो का जन्म २९ फरवरी, १८०२ को फ्रान्स के अन्तर्गत बेसांसों नामक स्थान में हुआ। जन्म के समय वह इतना अधिक क्षीण और दुर्बल था कि उसके अधिक दिन जीने की आशा किसी को नहीं थी। उसका पिता नेपोलियन के अधीन एक ख्याति-प्राप्त सैनिक था। हूगो ने जिस वंश में जन्म लिया वह कुलीन नहीं था। उसके पूर्वज साधारण किसान थे।

हूगो को फ्रांस तथा स्पेन में अच्छे ढंग से शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा मिली थी। स्पेन में तब नेपोलियन के भाई का राज था और उसका पिता वहाँ नौकर था। बचपन से ही हूगो की प्रतिभा अपना चमत्कार दिखाने लगी थी। बहुत छोटी अवस्था में वह गद्य तथा पद्य-मिश्रित सुन्दर नाटक लिखने लगा था। अपने बीसवें वर्ष तक वह सुन्दर कविता-रचना के लिये कई बार प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त कर चुका था। पर जब अपनी माँ की मृत्यु के कारण उसे अपनी जीविका का उपाय स्वयं करना पड़ा, तो साहित्य-रचना द्वारा पेट पालना उसके लिये कठिन हो गया। वह आर्थिक कष्ट का समना करता हुआ बड़ी कठिनाई से अपना जीवन बिताने लगा। पर शीघ्र ही उसकी रचनाओं ने प्रसिद्धि प्राप्त कर ली, और उसकी आर्थिक स्थिति भी सुधर गई। इक्कीस वर्ष की अवस्था में

उसने आदेल फूशे नाम की एक लड़की से विवाह कर लिया। उस लड़की को वह छुटपन से ही जानता था और उसके साथ उसने खेला कूदा था। उसका विवाहित जीवन बहुत सुखी रहा, पर उसकी अवधि केवल दस वर्ष तक की रही। इसके बाद ह्यूगो एक अभिनेत्री से प्रेम करने लगा, और पचास वर्ष तक उसने उस प्रेम को निबाहा।

२२ मई, १८८५ को उसकी मृत्यु हुई। अपनी युवावस्था से मृत्यु-काल तक उसने अनेक काव्य, नाटक और उपन्यास लिखे। अपने राजनीतिक विचारों के कारण वह कुछ समय के लिये निर्वासित भी किया गया। अपने जीवन-काल में ही उसने जैसी अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ली थी वैसी बहुत कम लेखकों के भाग्य में बदी होती है। विख्यात अंगरेज़ कवि स्विनबर्न का कहना था कि शेक्सपीयर की मृत्यु के बाद ह्यूगो से बड़ा मनुष्य संसार में दूसरा उत्पन्न नहीं हुआ है। उसका विश्व-विख्यात उपन्यास 'ले मिज़ेराब्ल', जिसका संक्षिप्त कथानक 'अभागे' शीर्षक से वर्तमान संकलन में दिया जा रहा है, सन् १८६२ में प्रकाशित हुआ था।

अभागे

फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के युग में जां वालजां नाम का एक मजूर रहता था। उसकी एक विधवा बहन थी, जिसके सात बच्चे थे। जां वालजां मजूरी करके जो कुछ कमाता था वह सब अपनी बहन और उसके बच्चों के पालन-पोषण में खर्च कर डालता था। पर उसकी आय इतनी कम थी कि उतने से बच्चों को भर पेट भोजन नहीं मिल पाता था। एक बार यहाँ तक नौबत पहुँची कि बच्चों के भूखों मरने की संभावना दिखाई दी। जां वालजां ने जब कोई उपाय न देखा तो वह कहीं से रोटी चुरा लाया। वह पकड़ लिया गया और उसे पाँच वर्ष की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई। उसने दो बार भाग निकलने की चेष्टा की, पर दोनों ही बार असफल रहा। फल यह हुआ कि उसे उन्नीस वर्ष तक कठिन कारादण्ड भोगना पड़ा। अन्त में सन् १८१५ में वह मुक्त हुआ। इस दीर्घ अवधि में उसके मन में समाज और संसार के प्रति भयंकर विद्रोह का भाव उत्पन्न हो चुका था। उसका सहज सहृदय स्वभाव समाज के कठोर-व्यवहार से विषमय बन गया था।

कारावास से मुक्त होने पर उसे न तो किसी सराय में एक रात के लिये भी रहने को स्थान मिला, न किसी गृहस्थ-परिवार ने उसे आश्रय देना स्वीकार किया। अन्त में जब वह आल्प्स की तलहटी में 'मोसेन्यर मीरियल नामक एक उदार-स्वभाव पादड़ी के यहाँ पहुँचा, तो उसका बड़ा सत्कार हुआ। पादड़ी ने उसे अच्छी तरह खिलाया-पिलाया, और एक सुसज्जित कमरे में बढ़िया पलंग पर उसके सोने का प्रबन्ध कर दिया। पर आधी रात के समय जां वालजां पादड़ी की कुछ चाँदी की तश्तरियां

उसने आदेल फूशे नाम की एक लड़की से विवाह कर लिया। उस लड़की को वह छुटपन से ही जानता था और उसके साथ उसने खेला कूदा था। उसका विवाहित जीवन बहुत सुखी रहा, पर उसकी अवधि केवल दस वर्ष तक की रही। इसके बाद ह्यूगो एक अभिनेत्री से प्रेम करने लगा, और पचास वर्ष तक उसने उस प्रेम को निबाहा।

२२ मई, १८८५ को उसकी मृत्यु हुई। अपनी युवावस्था से मृत्यु-काल तक उसने अनेक काव्य, नाटक और उपन्यास लिखे। अपने राजनीतिक विचारों के कारण वह कुछ समय के लिये निर्वासित भी किया गया। अपने जीवन-काल में ही उसने जैसी अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ली थी वैसी बहुत कम लेखकों के भाग्य में बदी होती है। विख्यात अंगरेज़ कवि स्विनर्बन का कहना था कि शेक्सपीयर की मृत्यु के बाद ह्यूगो से बड़ा मनुष्य संसार में दूसरा उत्पन्न नहीं हुआ है। उसका विश्व-विख्यात उपन्यास 'ले मिज़ेराब्ल', जिसका संक्षिप्त कथानक 'अभागे' शीर्षक से वर्तमान संकलन में दिया जा रहा है, सन् १८६२ में प्रकाशित हुआ था।

अभागे

फ्रान्स की राज्यक्रान्ति के युग में जां वालजां नाम का एक मजूर रहता था। उसकी एक विधवा बहन थी, जिसके सात बच्चे थे। जां वालजां मजूरी करके जो कुछ कमाता था वह सब अपनी बहन और उसके बच्चों के पालन-पोषण में खर्च कर डालता था। पर उसकी आय इतनी कम थी कि उतने से बच्चों को भर पेट भोजन नहीं मिल पाता था। एक बार यहाँ तक नौबत पहुँची कि बच्चों के भूखों मरने की संभावना दिखाई दी। जां वालजां ने जब कोई उपाय न देखा तो वह कहीं से रोटी चुरा लाया। वह पकड़ लिया गया और उसे पाँच वर्ष की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई। उसने दो बार भाग निकलने की चेष्टा की, पर दोनों ही बार असफल रहा। फल यह हुआ कि उसे उन्नीस वर्ष तक कठिन कारादण्ड भोगना पड़ा। अन्त में सन् १८१५ में वह मुक्त हुआ। इस दीर्घ अवधि में उसके मन में समाज और संसार के प्रति भयंकर विद्रोह का भाव उत्पन्न हो चुका था। उसका सहज सहृदय स्वभाव समाज के कठोर-व्यवहार से विषमय बन गया था।

कारावास से मुक्त होने पर उसे न तो किसी सराय में एक रात के लिये भी रहने को स्थान मिला, न किसी गृहस्थ-परिवार ने उसे आश्रय देना स्वीकार किया। अन्त में जब वह आल्प्स की तलहटी में 'मोसेन्यर मीरियल' नामक एक उदार-स्वभाव पादड़ी के यहाँ पहुँचा, तो उसका बड़ा सत्कार हुआ। पादड़ी ने उसे अच्छी तरह खिलाया-पिलाया, और एक सुसज्जित कमरे में बढ़िया पलंग पर उसके सोने का प्रबन्ध कर दिया। पर आधी रात के समय जां वालजां पादड़ी की कुछ चाँदी की तश्तरियां

चुराकर भागा। जब पुलिस के कर्मचारी उसे तश्तरियों सहित पकड़ कर मोसेन्यर मीरियल के पास लाए, तो उस महाप्राण धर्माध्यक्ष ने उनसे कहा कि जां वालजां ने चोरी नहीं की है, बल्कि वे तश्तरियाँ उसे दान स्वरूप दी गई हैं। मोसेन्यर मीरियल की बात सुन कर जां वालजां स्तब्ध रह गया। उसे विश्वास नहीं होता था कि कोई मनुष्य इस हद तक उदार हो सकता है। जीवन के कड़वे अनुभवों के कारण मानव-स्वभाव की भलाई पर से उसका विश्वास उठ चुका था; पर आज जीवन में प्रथम बार उसने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जो चोर को चोर नहीं, बल्कि एक मनुष्य समझता था।

पुलिस कर्मचारियों के चले जाने पर मोसेन्यर मीरियल ने जां वालजां को उसकी चुराई हुई तश्तरियों के अतिरिक्त चांदी के दो बत्तीदान दिए और कहा—"इन चीज़ों को ले जाओ, और आज से एक सच्चा और भला आदमी बनने की चेष्टा करो। यह समझ लो कि मैंने तुमसे तुम्हारी आत्मा मोल ले ली है। उसमें अब तुम्हारा कोई अधिकार नहीं रहा। मैं चाहता हूँ कि उसे तुम अब ईश्वर को अर्पित कर दो!"

पादड़ी की बात का बड़ा गहरा प्रभाव जां वालजां पर पड़ा। पर चूँकि वर्षों से उसकी आदत बिगड़ी हुई थी, इसलिये जब वह पादड़ी के यहाँ से चला, तो रास्ते में एक लड़के के हाथ से उसने दो फ्रां छीन लिए। पर तत्काल उसे अपने इस कार्य के लिये अत्यन्त पाश्चात्ताप हुआ। लड़के को उसके पैसे वापस करने के लिये जब वह लौटा, तो लड़का तब तक लापता हो चुका था।

इस घटना के प्रायः दो वर्ष बाद एक परदेसी व्यक्ति फ्रांस के एक छोटे से शहर में पहुँचा। उसका वेष मजूरों का सा था। उसके शहर में पहुँचते ही टाउन हाल में आग लग गई। परदेसी ने दो बच्चों को जल मरने से बचा लिया। वे बच्चे पुलिस कप्तान

के थे। परदेसी के पास पासपोर्ट नहीं था, पर उक्त बच्चों की रक्षा करके उसने जिस सेवा-भाव का परिचय दिया था उसके कारण वह पासपोर्ट के झंझट से बच गया। वह उसी शहर में बस गया। उसने एक औद्योगिक आविष्कार किया, जिसके कारण शीघ्र ही वह धनी बन गया। इसके बाद उसने बड़ी-बड़ी फैक्टरियाँ खोलीं, शिक्षालयों की स्थापना की और एक अस्पताल को दान दिया। अपने मजूरों को वह जितना वेतन देता था उतना फ्रान्स की कोई भी औद्योगिक संस्था नहीं देती थी। धीरे धीरे उसने बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली और वह शहर के मेयर का पद पा गया। शहर में वह मोशियो मादलीन के नाम से परिचित था। यह कोई नहीं जानता था कि वह दानशील मोशियो मादलीन किसी ज़माने में जां वालजां नामक प्रसिद्ध डाकू था।

मोशियो मादलीन की एक फैक्टरी में फांतीन नाम की एक तरुणी काम करती थी। वह बहुत सुन्दरी थी। जब वह पैरिस में रहती थी, तो एक व्यक्ति से उसका प्रेम हो गया था। उसके उस स्वार्थी प्रेमिक ने उसके साथ अत्यन्त कपटतापूर्ण बर्ताव किया, और उसे धोखा देकर एक दिन वह भाग खड़ा हुआ। उसने एक लड़की को जन्म दिया, जिसका नाम कोज़ेत रखा गया। समाज के भय से फांतीन ने अपनी उस लड़की को तेनादिए नामक एक दुष्ट व्यक्ति और उसकी पत्नी की संरक्षकता में छोड़ दिया। उसे पता नहीं था कि तेनादिए एक भयंकर गुण्डा है। वह उसकी और उसकी स्त्री की चिकनी-चुपड़ी बातों के फेर में आ गई, और लड़की के पालन-पोषण का व्यय भेजने का वचन देकर वह शहर में जाकर मोशियो मादलीन की फैक्टरी में काम करने लगी। जब इस बात का पता लोगों को लग गया कि फांतीन ने एक जारज लड़की को जन्म दिया है, तो मोशियो मादलीन के कर्मचारियों ने उसे फैक्टरी से निकाल दिया। पर इस बात की कोई सूचना मोशियो मादलीन

को नहीं दी गई। फैक्टरी से अलग किये जाने पर फांतीन की दशा अत्यन्त शोचनीय हो उठी वह स्वयं भूखों मरने लगी; तिस पर तेनादिए बार-बार उसके पास पत्र पर पत्र भेजता चला गया कि वह अपनी लड़की के भरण-पोषण के लिये शीघ्र खर्चा भेजे। कोई उपाय न देखकर फांतीन ने अपने सुन्दर सुनहले बाल काटकर उन्हें बेचा. और जो कुछ मिला वह तेनादिए के पास भेज दिया। रुपया मिलने के कुछ समय बाद तेनादिए ने झूठमूठ यह लिख मारा कि कोज़ेत बीमार है, और उसके इलाज के लिये और सौ फ्रां (प्रायः पैंसठ रुपया) चाहिये। फांतीन ने लड़की की ममता की वेदना से विकल होकर अपना एक सुन्दर-सा अगला दांत एक दांतसाज़ के यहाँ बेच डाला। एक दिन वह अपनी दीन और दयनीय दशा से विह्वल और नाना दुश्चिन्ताओं में मग्न होकर अन्यमनस्क-सी एक सड़क में चली जा रही थी। अकस्मात् एक मनचले. बाँके युवक ने उसके कपड़ों के भीतर उसकी पीठ में बरफ़ डाल दी। फांतीन उस युवक की इस दुष्टता से ऐसी विचलित हो उठी कि उसने मारे क्रोध के अपने नखों से उसका मुँह उधेड़ दिया। जावर नामक पुलिस-इन्सपेक्टर ने उसके इस 'काण्ड' के लिये उसे गिरफ़्तार कर लिया। जावर एक बड़ा ज़ालिम, भयंकर और कठोर प्रकृति का व्यक्ति था। वह जां वालजां को भली भाँति जानता था, और उसके मन में बहुत दिनों से यह सन्देह बना हुआ था कि मोशियो मादलीन एक फ़रार अभियुक्त है।

मोशियो मादलीन ने मेयर की हैसियत से फांतीन को पुलिस के जाल से मुक्त कर दिया। इधर फांतीन की यह धारणा थी कि मेयर ने ही उसे फैक्टरी से निकालकर उसे कहीं का नहीं छोड़ा है। इसलिये उसने सबके सामने उसके मुँह पर थूक दिया। मोशियो मादलीन उर्फ़ जां वालजां ने उसकी दयनीय दशा का अनुभव करके उसकी उस निपट घृणा तथा घोर अपमान-सूचक

व्यवहार को चुपचाप सह लिया, और इस बात की जाँच की कि वास्तव में उसकी शिकायत क्या है। दुःख, शोक और निराहार के कारण फांतीन को क्षयरोग ने पकड़ लिया था। जां वालजां ने उसके भोजन-वस्त्र और चिकित्सा का पूरा प्रबन्ध कर दिया और उसे इस बात का वचन दिया कि वह उसकी लड़की की देखभाल करेगा।

इसी समय पुलिस ने एक अपरिचित व्यक्ति को जां वालजां समझ कर गिरफ़्तार कर लिया। जां वालजां की आत्मा एक निरपराध व्यक्ति को अपने स्थान में गिरफ़्तार होते देख शान्त न रह सकी। आरास नामक स्थान में उस अपरिचित व्यक्ति का विचार होने वाला था। अनेक कठिनाइयों को पार करके जां वालजां आरास के न्यायालय में ठीक ऐसे समय जा पहुँचा जब जज कल्पित 'जां वालजां' को दण्ड की आज्ञा सुना रहा था। वास्तविक जां वालजां ने अपना सच्चा परिचय न्यायाधीश को दे दिया, और कहा कि वही वह व्यक्ति है जिसने पादड़ी की चाँदी की तश्तरियाँ चुराई थीं, और एक लड़के के हाथ से दो फ्रां छीनकर ले लिए थे। जज ने उसे छोड़ दिया, पर पुलिस-इन्सपेक्टर जावर उसके पीछे पड़ा ही रहा।

फांतीन की शारीरिक अवस्था दिन पर दिन चिन्ताजनक होती चली जाती थी। उसकी मृत्यु के समय जां वालजां उसके पास ही था। उसने फांतीन को यह विश्वास दिलाया कि उसकी मृत्यु के बाद वह उसकी लड़की कोज़ेत की संरक्षकता का पूरा भार अपने ऊपर लेगा, और उसे अपनी ही लड़की के समान पालेगा। वह फांतीन से बातें कर ही रहा था कि जावर ने उसे अकस्मात् घेर लिया और गिरफ़्तार कर लिया। वह जेलखाने में क़ैद कर लिया गया। पर वह बड़ा शक्तिशाली था, एक दिन क़ैदखाने का दरवाज़ा तोड़कर वह भाग निकला। अपने घर पहुँचकर वह

अपना सब सञ्चित धन बटोर लाया और उस धन को उसने माफर्माई के गहन-वन में जाकर एक गुप्त स्थान में गाड़ दिया। कुछ समय बाद वह फिर गिरफ्तार कर लिया गया, और उसे आजीवन कठोर कारावास का दण्ड दिया गया।

नौ महीने बाद तूलों नामक बन्दरगाह में वह फिर अपनी हथकड़ी-बेड़ी तोड़कर भाग निकला, और उसने एक मल्लाह की जान बचाई। वह मल्लाह जहाज की चोटीवाले मास्तूल से नीचे लटक रहा था। मल्लाह की प्राण रक्षा करके वह स्वयं समुद्र में कूद पड़ा, और सबको इस बात पर विश्वास हो गया कि वह डूब गया है।

इसी बीच वाटरलू का प्रसिद्ध युद्ध समाप्त हो चुका था, जिसमें नेपोलियन की भयंकर पराजय हुई थी। तेनादिए, जिसकी संरक्षकता में फांतीन ने अपनी लड़की को सौंप रखा था, अच्छा अवसर देखकर युद्धभूमि में जा पहुँचा और वहाँ मृत सैनिकों का माल-टाल लूटकर स्वयं सम्पन्न बन गया। उसने माफर्माई के निकट एक स्थान में एक सराय खोल दी। फांतीन की लड़की कोजेत के प्रति उसका और उसकी पत्नी का व्यवहार अत्यन्त नीचतापूर्ण और निष्ठुर था। सन् १८२३ के क्रिसमस के दिन उस अनाथ लड़की की दुर्दशा चरम सीमा को पहुँच गई थी। भयंकर सर्दी पड़ रही थी। ऐसे मौसम में रात के समय तेनादिए की स्त्री ने उसे माफर्माई के भयंकर भूतग्रस्त जंगल से पानी भर लाने के लिये भेजा। वह छोटी-सी बच्ची एक भारी डोल लिए प्रायः रोती हुई, जाड़े से काँपती हुई उस निपट अन्धकार में चली जा रही थी। रास्ते में एक अपरिचित व्यक्ति, जो बहुत साधारण से कपड़े पहने था, उसे मिला। उसने बड़े प्रेम से कोजेत को पुचकारा और उसका डोल स्वयं पकड़कर वह उसके साथ पानी भरने गया। पानी भरने के बाद जब कोजेत अपरिचित व्यक्ति के

साथ सराय में पहुँची, तो तेनादिए की स्त्री ने उसे देर करने के लिये बहुत धमकाया और कहा कि इस अपराध के लिये उसे भयंकर रूप से दण्डित किया जायगा। असहाय लड़की चुप हो रही, पर अपरिचित व्यक्ति ने लोभी स्त्री को कुछ दे-दिलाकर शान्त किया। दूसरे दिन तेनादिए को एक हज़ार पाँच सौ फ्रां देकर वह अपरिचित व्यक्ति कोज़ेत को अपने साथ पैरिस ले गया। वह अपरिचित व्यक्ति जां वालजां ही था।

जां वालजां पैरिस की चारदीवारी के बाहर एक अज्ञात कोने में एक प्रायः भग्नावशेष मकान में कोज़ेत के साथ रहने लगा। जिस स्थान में वह मकान था वह ऐसा भयावह और निर्जन था कि दिन-दहाड़े वहाँ भय मालूम होता था। जां वालजां ने सोचा कि उस निर्जन स्थान में, उस टूटे-फूटे मकान में वह सुरक्षित रहेगा, और उसके प्रति किसीका ध्यान आकर्षित न होगा। पर उसकी दानशीलता के कारण उसके मकान की मालकिन की ईर्ष्या-दग्ध गृद्ध-दृष्टि उस पर प्रतिक्षण लगी रही। उस बुढ़िया को सन्देह होने लगा कि फटेहाल रहनेवाला वह परदेसी परोपकार में इतना रुपया ख़र्च केवल इसीलिये कर पाता है कि उसने चोरी-चकारी और डकैती से माल जमा कर रखा है।

एक दिन जां वालजां ने रास्ते में चलते हुए अपने पुराने शत्रु जावर को देख लिया। उसे निश्चित रूप से यह विश्वास हो गया कि जावर को उसके गुप्तवास का ठिकाना मालूम हो गया है। वह कोज़ेत को लेकर वहाँ से भाग निकला। पर जावर अपने आदमियों को साथ लेकर उसका पीछा करता चला गया। जावर ने उसे घेरकर पकड़ ही लिया होता, पर जां वालजां पुराना पापी था और एक बहुत ऊँची दीवार पर चढ़कर वहाँ से दूसरी ओर उतर उसने अपनी और कोज़ेत की रक्षा की। दीवार की दूसरी ओर एक 'कानवेन्ट' से लगा हुआ एक बाग़ था। उस बाग़ का माली

जां वालजां का परिचित निकला। जां वालजां ने किसी समय उसके प्राणों की रक्षा की थी। माली ने कृतज्ञतावश उसे अपना भाई बताया और आश्रम की अध्यक्षा से प्रार्थना करके उसे अपना सहायक नियुक्त करा लिया। कोज़ेत 'कानवेन्ट' के शिक्षालय में पढ़ने लगी।

ज्यों-ज्यों कोज़ेत की अवस्था बढ़ती चली गई, त्यों त्यों उसका रूप निखरता चला गया। पिता से भी अधिक स्नेह करनेवाला एक संरक्षक मिल जाने के कारण उसका स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा हो गया था, और वह वसन्त ऋतु में खिलनेवाले 'चेरी' नामक वृक्ष के नव-मुकुलित कुसुम-गुच्छों की तरह विकसित हो उठी। जां वालजां उसे अपने प्राणों से भी अधिक चाहता था। उसकी आत्मा के अणु-अणु से अनुपम पितृस्नेह की भावना उमड़ने लगी थी और कोज़ेत को दिन पर दिन स्वास्थ्य, सौन्दर्य और शालीनता में उन्नति करते देखकर वह आनन्द से गद्‌गद्‌ होने लगा था। एक परम पवित्र निधि के समान कोज़ेत की रक्षा करना ही उसके जीवन का एकमात्र व्रत बन गया।

तेनादिए पैरिस आ पहुँचा था और डाकुओं के एक दल में सम्मिलित हो गया था। यह बात जां वालजां से छिपी न रही। वह जानता था कि तेनादिए को उसका पता लगते ही वह उसका और कोज़ेत का अनिष्ट करने में कोई बात उठा नहीं रखेगा। वास्तव में एक दिन तेनादिए ने उसका पता लगा लिया, और उसके दल के साथ जां वालजां की मुठभेड़ भी कई बार हुई। अपनी आश्चर्यजनक शक्ति और साहस से जां वालजां ने प्रति-बार उस भयंकर दस्युदल से अपनी और कोज़ेत की रक्षा की। इधर जावर निरन्तर उसके पीछे पड़ा हुआ था। एक दिन के लिये भी जां वालजां निश्चिन्त जीवन बिताने में असमर्थ था।

सन् १८३० में फ्रान्स में फिर से राज्यक्रान्ति मची। उस क्रान्ति

में जां वालजां ने प्रजातन्त्रवादी जनता का साथ दिया और युद्ध में भाग लिया। इसी सिलसिले में उसने अपने चिरशत्रु, ज़ालिम पुलिस अफ़सर जावर के प्राणों की रक्षा की। इस घटना से जावर का मनोभाव उसके प्रति बदल गया, और वह जां वालजां को श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगा।

सब प्रकार के भीषण ख़तरों से कोज़ेत को सुरक्षित रखने में सफल होने पर भी एक ख़तरे से वह उसकी रक्षा करने में स्वभावतः निपट असमर्थ रहा। वह ख़तरा था मानव-हृदय की सहज मनोवृत्ति—प्रेम। वह जानता था कि किसी भी सुन्दरी और सहृदय तरुणी की आत्मा प्रेम की काव्य-कलनामयी आकांक्षा से ख़ाली नहीं रह सकती ; पर साथ ही यह बात भी निश्चित थी कि उस प्रेम की सार्थकता के परिणामस्वरूप कोज़ेत को उससे सदा के लिये अलग होना पड़ेगा।

मारियस नाम का एक युवक एक बेरन का लड़का था। उसका पिता मर चुका था, पर उसका दादा जीवित था। बुड्ढा अपने एकमात्र पोते को बहुत चाहता था ; पर चूंकि वह राजवादी था और मारियस प्रजातन्त्रवादी, इसलिये दादा और पोते में अनबन हो गई थी। मारियस ने एक दिन कोज़ेत को एक पार्क में देखा था। तबसे प्रतिदिन उसी पार्क में दोनों एक-दूसरे से मिलने लगे थे और दोनों में आपस में घनिष्ठ प्रेम हो गया था। क्रान्ति के युद्ध में मारियस घायल होकर बेहोश हो गया था। जां वालजां उसे चुपचाप अपने कन्धे में रखकर विपक्षियों की दृष्टि से उसे बचाने के उद्देश्य से ज़मीन के भीतर एक बहुत गहरे और मीलों लम्बे नाले के भूलभुलैया चक्कर से होकर उसे ले गया और अन्त में उसके बूढ़े दादा के पास उसे पहुँचा दिया। सेवा-शुश्रूषा करने से जब वह चंगा हो गया, तो बुड्ढा सब वैमनस्य भूलकर अपने पोते के प्रति अत्यन्त सदय हो उठा। कोज़ेत के समान एक अत्यन्त

साधारण समाज की लड़की से अपने पोते का विवाह करने के पक्ष में बुड्ढा क़तई नहीं था। पर मारियस ने भी यह निश्चय कर लिया था कि वह किसी दूसरी लड़की से विवाह नहीं करेगा। अन्त में बूढ़े बेरन को राज़ी होना पड़ा। जां वालजां ने अपना गड़ा हुआ धन निकालकर छ लाख फ्रां दहेज़ के स्वरूप मारियस को दिए।

जां वालजां की आत्मा इस बात से अत्यन्त अशान्ति का अनुभव कर रही थी कि मारियस उसके अपराधी जीवन के सम्बन्ध में एकदम अपरिचित है। इसलिये एक दिन उसने अपने जीवन का सच्चा हाल प्रारम्भ से अन्त तक सुना दिया। मारियस ने उसके हृदय की महानता, उदारता और सचाई को न समझकर उससे कहा कि वह कोज़ेत से मिलने के लिये न आया करे! कुछ समय बाद तेनादिए बेरन के पास आया। यद्यपि जां वालजां की निन्दा के उद्देश्य से तेनादिए ने उसके जीवन की बहुत सी बातें कह सुनाईं, तथापि उन बातों का मारियस पर उलटा प्रभाव पड़ा। वह समझ गया कि अपराधी जीवन से मुक्त होने की चेष्टा में जां वालजां को किन भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है, और कोज़ेत को पालने में उसने कैसे महान त्याग, उदारता और सहृदयता का परिचय दिया है। वह उसी दम कोज़ेत को साथ लेकर उस स्थान में गया जहाँ बुड्ढा जां वालजां मृत्यु-शय्या में पड़ा हुआ अन्तिम साँसें गिन रहा था। मरने के पहले कोज़ेत को अपने पास देखकर उसकी प्रसन्नता की सीमा न रही। मारियस ने अपने व्यवहार के लिये उससे क्षमा चाही। दोनों को आशीर्वाद देकर उस पुण्यात्मा अपराधी ने सदा के लिये आँखें बन्द कर लीं।

थैकरे

इंगलैण्ड के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार विलियम मेकपीस थैकरे का जन्म १८ जुलाई, १८११ को कलकत्ते में हुआ था। उसका पिता भारतवर्ष में एक सिविल सर्वेन्ट था। उसकी शिक्षा-दीक्षा लण्डन में ही हुई। उसका विवाहित जीवन बहुत शोचनीय रहा। इसका कारण यह था कि सन् १८४० में उसकी स्त्री अचानक पागल हो गई, और तब से अन्त तक उसका पागलपन बना रहा।

स्कूल तथा कालेज-जीवन में थैकरे अध्ययन के संबंध में बहुत उदासीन रहा करता था। हंसी खेल में उसके दिन बीतते थे। मित्रता जोड़ने और राग-रंग में रमे रहने का उसे बहुत शौक़ था। २१ वर्ष की अवस्था में उसने लण्डन से एक पत्र निकाला। पर अमितव्ययी होने के कारण उसने इतना रुपया उड़ा दिया कि २५ वर्ष की अवस्था में उसके पास एक पैसा भी बचा न रहा। पर इस बीच उसे जीवन का विशेष अनुभव प्राप्त हो चुका था।

वह विभिन्न साहित्यिक विषयों पर लिखता चला गया। कभी उसकी लेखनी से हास्य-विस्फोट निकलता था कभी करुणा चित्र। कभी वह गद्य में लिखता था कभी पद्य में।

उसका प्रथम उपन्यास 'बैरी लिन्डन' एक कूटचक्रपूर्ण जीवन का

इतिहास था। पर उसके मानव-चरित्र-चित्रण की विशेषता 'वैनिटी फ़ेयर' नामक उपन्यास में ही सब से अधिक प्रस्फुटित हुई है। इसके बाद उसने 'पेन्डेनिस' नामक उपन्यास लिखा। इस उपन्यास में उसका आत्म-जीवनी का आभास मिलता है। आर्थिक कारणों से उसने साहित्यिक विषयों पर लेकचर देने का काम स्वीकार कर लिया। इसके बाद उसने क्रम से 'एस्मारड', न्यूकमर्स', वर्जीनियन्स' तथा 'डेनिस डुवाल' नामक उपन्यास लिखे। 'डेनिस डुवाल' को समाप्त करने के पहले ही वह इस संसार से चल बसा २४ दिसम्बर, १८६३ को लण्डन में उसकी मृत्यु हुई।

—:०:—

'वेनिटी फेयर' या माया-मरीचिका

मिस पिंकरटन के स्कूल में छः वर्ष तक की पढ़ाई समाप्त करने के बाद जब एमेलिया सेडली घर पहुँची, तो वह एक सभ्य और सुसंस्कृत तरुणी महिला समझी जाने लगी। एमेलिया जैसी सुन्दरी थी, उसका स्वास्थ्य भी वैसा ही अच्छा था। वह सब समय प्रसन्न रहती थी। पर साथ ही वह बड़ी भावुक थी, और जब वह किसी बिल्ली को चूहा पकड़ते हुए देखती, तो चूहे की दुर्दशा देखकर वह रो पड़ती। स्कूल से लौटते समय वह अपनी संगिनी रेबेका उर्फ बेकी शार्प को भी अपने साथ ले आई थी। रेबेका के घरवालों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, और वह शीघ्र ही किसी सम्पन्न परिवार में 'गवर्नेस' नियुक्त होकर अपना निर्वाह करने का विचार रखती थी।

रेबेका के चेहरे का रंग कुछ पीलापन लिए हुए था और उसके बाल मटमैले रंग के थे। पर उसकी आँखें बड़ी निराली और अत्यन्त आकर्षक थीं। उसकी माँ एक अभिनेत्री और नर्तकी रह चुकी थी, और उसका पिता शराबी और कलाकार था। मां-बाप के उन सब गुणों का आभास किसी-न-किसी रूप में रेबेका में वर्तमान था। इस कारण स्वभावतः उसके रूप-रंग और चाल-ढाल में एक ऐसी मादकता भरी हुई थी जो असावधान पुरुषों को सहज में उन्मत्त बना देती थी।

सेडली-परिवार में कुछ दिन रहने पर एमेलिया के भाई जोजफ पर रेबेका की आँखें गड़ गईं। जोजफ एक निकम्मा, आलसी और शराबी युवक था। उसका व्यक्तित्व अत्यन्त साधारण था। पर रेबेका ने अपना पहला जाल उसी पर डालने का निश्चय

किया, और एमेलिया से कहने लगी कि "तुम्हारा भाई बहुत सुन्दर है।" उसका उद्देश्य यह था कि वह बात जोजफ के कानों में चली जाय। जोजफ उसके चक्रों के फेर में पड़ ही गया होता, पर जार्ज आसबार्न नामक एक युवक ने, जो एमेलिया के रूप का प्रशंसक था, उसके कूटचक्रों को सफल न होने दिया। रेबेका व्यर्थ-मनोरथ होकर एमेलिया के यहाँ से चली गई।

वहाँ से वह सर पिट क्राली के यहाँ पहुँची। सर पिट क्राली के दूसरे लड़के का नाम राडन क्राली था। उनकी एक आजीवन अविवाहिता बहन भी थी। सर क्राली की यह बहन बहुत धनी थी और वह राडन क्राली के प्रति बड़ी सदय थी। लोगों का यह विश्वास था कि मरने के पहले वह अपना सब धन राडन क्राली को दे जायगी। पर क्राली-परिवार के कई दूसरे व्यक्ति उसे अपनी ओर खींचने की चेष्टा में सब समय लगे रहते थे, और प्रत्येक व्यक्ति मिस क्राली का पोष्यपुत्र बनने की चिन्ता में रहता था।

राडन क्राली को कप्तान की पदवी प्राप्त हो चुकी थी। वह वास्तव में एक 'बाँका सिपाही' था। सब समय वह सुसज्जित अवस्था में रहता था, उच्च स्वर में बोलता था, और बात-बात में गालियाँ बका करता था। रेबेका को देखकर उसने कहा—"वाह! वह तो बड़े कमाल की लड़की है!" उसकी फूफी भी रेबेका को चाहने लगी थी। रेबेका ने अपनी सम्मोहन-कला के प्रयोग से उन दोनों पर जादू फेर दिया था।

इधर लण्डन में एमेलिया का यह हाल था कि उसका व्यक्तित्व रेबेका के समान आकर्षक न होने पर भी लण्डन का तरुण सम्प्रदाय उसके साथ नाचने के लिये विशेष उत्सुक रहता था। उसकी मुखाकृति में मोम की गुड़िया की सरलता, स्निग्धता और कोमलता भरी हुई थी, पर रेबेका के समान सतेज भाव उसमें

नहीं था। फिर भी, न जाने क्यों, युवकों को उसका भोलापन अपनी ओर खींचता था। जार्ज आसबार्न से उसका विवाह होने की बात पक्की हो चुकी थी। जार्ज आसबार्न की बहनें आपस में इस बात के लिये आश्चर्य प्रकट किया करती थीं कि एमेलिया सेडली के समान आकर्षणहीन लड़की को उसने क्यों पसन्द किया। वे अपनी इस सम्मति को बार-बार इस हद तक दुहराती गई कि अन्त में स्वयं जार्ज को एमेलिया के विशेषत्व पर सन्देह होने लगा, और वह विवाह के सम्बन्ध में हिचकिचाहट का-सा भाव व्यक्त करने लगा। पर एमेलिया उसे हृदय से चाहती थी। कैप्टेन डाबिन, जो जार्ज आसबार्न का मित्र था, और एमेलिया के रूप और गुणों का स्वयं भी प्रशंसक था, एमेलिया के हृदय की बात जान गया था। उसने जार्ज आसबार्न को अपने कर्तव्य से विचलित नहीं होने दिया। कुछ समय बाद जार्ज आसबार्न लेफ़्टनेन्ट होकर अपनी सेना को लेकर व्यस्त रहने लगा। एमेलिया समय-समय पर उसे अत्यन्त भावुकतापूर्ण प्रेम-पत्र लिख भेजती थी। पत्र पढ़कर वह मन-ही-मन कहता—"बेचारी एम्मी!—वह मुझे कितना चाहती है!" नेपोलियन के सिपाही सारे यूरोप को रौंद रहे थे और इंगलैण्ड भी उसके कारण बहुत चिन्तित हो उठा था। पर एमेलिया उन युद्धों के प्रति एकदम उदासीन थी। उसके लिये सारे यूरोप का भाग्य लेफ़्टनेन्ट-जार्ज आसबार्न पर केन्द्रित था।

इस बीच मिस क्राली अपने भाई सर पिट के यहाँ से लौटकर लण्डन में अपने घर वापस चली आई। अपने साथ वह मिस रेबेका शार्प को भी लेती आई। रेबेका ताश के खेलों में अत्यन्त निपुण होने के कारण मिस क्राली की परम आवश्यक संगिनी बन गई थी। इधर कैप्टेन राडन क्राली भी अपनी फूफी के यहाँ अक्सर आने लगा। इसी बीच एक दिन लेडी क्राली की मृत्यु

हो गई। सर पिट पत्नी की मृत्यु के कुछ ही समय बाद अपनी बहन के यहाँ आ पहुँचे और उन्होंने अपने परिवार की भूतपूर्व गवर्नेस रेबेका को फिर से अपने यहाँ वापस ले जाने का प्रयत्न किया।

रेबेका इस प्रस्ताव से बहुत घबरा उठी। उसने कहा—"चूँकि अब आप अकेले रह गए हैं, इसलिये आपके साथ मेरा रहना किसी प्रकार भी उचित नहीं है।"

पर बुड्ढा किसी दशा में भी उसे छोड़ना नहीं चाहता था। उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा—"मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी पत्नी—लेडी क्राली—बनकर मेरे साथ चलो।"

रेबेका के समान एक साधारण नारी के लिये इससे बढ़कर सम्मान की बात और कोई नहीं हो सकती थी। 'लेडी क्राली' बनने से वास्तव में उसके बहुत दिनों की महत्त्वाकांक्षा पूरी हो जाती थी। पर दुर्भाग्य से वह अपने ही जाल में जकड़ चुकी थी। ऐसा अच्छा प्रयोग नष्ट होते देख वह रो पड़ी। उसने कहा—"ओह, सर पिट! ओह!—मैं नहीं जानती थी—मैं—मैं विवाह कर चुकी हूँ!"

बाद में मालूम हुआ कि रेबेका सर पिट के लड़के कैप्टेन राडन क्राली से गुप्त रूप से विवाह कर चुकी है। यह संवाद सुनकर सर पिट की बहन को ऐसा भयंकर आश्चर्य हुआ कि उसे हिस्टीरिया के से 'फिट' आने लगे, और स्वयं सर पिट अपने लड़के के प्रति क्रोध और घृणा से उत्तेजित हो उठे, और साथ ही रेबेका के प्रति उनका प्रेमोन्माद और अधिक तीव्र रूप से भड़क उठा।

इस पर रेबेका के गुप्त पति—कैप्टेन क्राली—ने अपनी पत्नी से कहा—"बेक, अब तुम्हीं इस कठिन समस्या से हम लोगों का उद्धार कर सकती हो—मैं जानता हूँ, तुम में यह योग्यता है। इस तरह के कामों में तुम एक ही उस्ताद हो!"

जार्ज आसबार्न यद्यपि आर्थिक रूप से अपने पिता पर निर्भर करता था, पर वास्तव में वह उसके हृदय की संकीर्णता के कारण उससे घृणा करता था। जब बुड्ढे आसबार्न ने अपने बेटे को एमेलिया से विवाह करने से निषेध किया, तो बेटे ने बाप से असहयोग कर दिया; और एमेलिया से विवाह कर लिया। इस विवाह-कार्य के सम्पन्न होने में एमेलिया को कैप्टेन डाबिन से, जो उसका सच्चा उपासक था, बड़ी सहायता मिली। एमेलिया की प्रसन्नता का पारावार नहीं था। वह अपने पति के साथ 'हनीमून' मनाने के लिये ब्राइटन नामक स्थान में चली गई।

ब्राइटन में उन लोगों की भेंट राडन क्राली और उसकी पत्नी से हो गई। रेबेका एक ठाठदार मकान में अपने पति के साथ रहती थी। अपने व्यक्तित्व के जादू का प्रयोग उसने विवाह होने पर भी नहीं छोड़ा था, और उसके घर में नित्य उसके प्रशंसकों और उपासकों की भीड़ लगी रहती थी। इन उपासकों में पैसेवाले व्यापारियों की संख्या अधिक थी। इसका फल यह देखने में आता था कि उसे और उसके पति को काफ़ी से ज्यादा रुपया उधार के रूप में मिल जाता था, पर उधार देनेवालों पर रेबेका की मोहिनी का जादू फिर जाने के कारण वे ऋण वापस माँगने का साहस नहीं करते थे। इस प्रकार बिना किसी आय के राडन क्राली और बेकी (रेबेका) क्राली बड़ी शान और शौक़त के साथ रहते थे।

इस घटना के कुछ ही समय बाद वाटरलू के सुप्रसिद्ध युद्ध की तैयारियाँ होने लगीं, और एमेलिया का पति लेफ्टनैन्ट जार्ज आसबर्न तथा कैप्टेन राडन क्राली अपनी पत्नियों के साथ ब्रूसेल में ड्यूक आफ़ वेलिंगटन के 'कैम्प' में जाकर रहने लगे। जार्ज बेकी की मोहिनी पर मर मिटा था, और विवाह के केवल छः सप्ताह बाद से ही एमेलिया से उकता उठा था। उसने एक दिन

नाच-पार्टी के अवसर पर एक गुलदस्ते के भीतर एक पत्र छिपाकर रेबेका को दे दिया। उस पत्र में उसने रेबेका से प्रार्थना की थी कि वह उसके साथ भाग चलने के लिये सम्मत हो जाय। पर उस पत्र का उत्तर मिलने के पहले ही युद्ध का बिगुल बज उठा, और लेफ्टनेन्ट आसबार्न अवैध प्रेम के सब कूटचक्रों को भूलकर प्रेमपूर्वक एमेलिया से अन्तिम बार मिलकर वाटरलू की युद्धभूमि में जा पहुँचा। वहाँ उसकी मृत्यु हो गई।

राडन क्राली उसी युद्ध में वीरता का परिचय देकर कर्नल के पद को प्राप्त हो गया। उसने और उसकी पत्नी ने सन् १८१५ का शीतकाल बड़े ठाठ के साथ पैरिस में बिताया। पैरिस में बड़े-बड़े ऊंचे पदों के व्यक्ति बेकी के उपासक बनकर उसे चारों ओर से घेरने लगे। उसने अपने घर में प्रतिष्ठित व्यक्तियों का एक जुआ-घर खोल दिया। अपने पति कर्नल क्राली को उसने ताशों के ऐसे-ऐसे करिश्मे बताए कि वह एक दिन के लिये भी नहीं हारा, और जुए की जीत से क्राली दम्पति की अच्छी-ख़ासी आय हो गई।

इधर एमेलिया जब से विधवा हुई तब से उसका बहुत बुरा हाल था। अपने एक छोटे बच्चे के लालन-पालन की कोई सुविधा उसके पास नहीं थी। उसके अर्थ-पिशाच ससुर ने उसे अपना मुँह दिखाने से भी निषेध कर दिया था। उसके माँ-बाप की आर्थिक स्थिति इस क़दर शोचनीय थी कि वे स्वयं अपनी बेटी पर निर्भर करके अपना निर्वाह करते आ रहे थे। बेचारी अपने भाग्य को कोस कर रह जाती थी। बेकी भी एक लड़के की माँ बन चुकी थी। पर उसे न तो अपने लड़के की कोई चिन्ता थी, न पति की। वह केवल चिर-जीवन विलासिता की तरंग में बहते रहना चाहती थी। अपने पति को धोखा देकर उसने लार्ड स्टीवन नामक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर लिया था। कर्नल क्राली को एक दिन यह बात मालूम हो गई। उसने उक्त लार्ड को

एक दिन खूब पीटा और अपनी पत्नी को त्याग दिया। पति से अलग होने पर बेकी एक दम निर्द्वन्द्व हो गई। समाज में प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने की उसकी महत्त्वाकांक्षा जाती रही, और वह अपने सहज कूटचक्रों का जाल निरन्तर बुनती चली गई। कभी उसके ऋण-दाता अपने रुपयों के बदले प्रेम-रस प्राप्त करने के लिये उसे घेरे रहते, और कभी कोई धनी उपासक उसे अपनी प्रेमिका बनाए रहता।

पर इस प्रकार का जीवन कब तक स्थायी रह सकता है! रेबेका की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति दिन पर दिन गिरती चली गई। अन्त में जब उसकी दुर्गति चरमावस्था को पहुँच गई, तो एक दिन एमेलिया और उसके भाई जोज़फ से उसकी भेंट हुई। रेबेका को कहीं आश्रय न मिलते देख एमेलिया ने अपनी उस दुश्चरित्रा बाल-संगिनी को अपने यहाँ लाकर रखा। एमेलिया के पुराने मित्र और उपासक डाबिन ने इस बात का विरोध किया। उसने कहा कि रेबेका ने अपने को एक बाज़ारू स्त्री से भी नीचे गिरा दिया है। एमेलिया ने उसकी इस बात पर आपत्ति प्रकट की।

डाबिन एमेलिया से कई बार विवाह की प्रार्थना कर चुका था। एक बार उसने फिर प्रार्थना की। पर एमेलिया ने इस बार भी अस्वीकार कर दिया, और यह जताया कि जार्ज की मृत्यु के बाद किसी दूसरे से विवाह करके वह अपने मृत पति के प्रति अश्रद्धा प्रकट नहीं कर सकती। डाबिन लाचार होकर दुःखित मन से चला गया। बाद में रेबेका ने एमेलिया को सूचित किया कि जार्ज ने उसके पास एक पत्र भेजा था, जिसमें अपना प्रेम प्रदर्शित करके उसने उसके साथ भाग चलने का प्रस्ताव किया था। रेबेका ने यह प्रमाणित करके कि जार्ज एमेलिया से प्रेम नहीं करता था, एमेलिया का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया कि डाबिन

बराबर उसका सच्चा उपासक और हितैषी रहा है, और उसके अतिरिक्त और किसी भी दूसरी स्त्री के प्रति वह कभी आकर्षित नहीं हुआ। इस बात की यथार्थता एमेलिया की समझ में आ गई। उसने डाबिन को फिर से बुलाया, और उससे विवाह कर लिया। एमेलिया का द्वितीय बार का विवाहित जीवन सच्चे अर्थ में सुखी रहा।

रेबेका जीवन के मीठे और कड़वे अनुभवों के बाद भी अपने कूटचक्रों से बाज़ न आई। उसने एमेलिया के भाई जोजफ पर डोरे डालना आरंभ कर दिया। जोजफ को उसने अपना क्रीतदास-सा बना लिया। वह उसकी प्रेमिका के रूप में रहने लगी। जोजफ ने उस नागन की सलाह मानकर उसके पक्ष में एक गहरी रक़म का जीवन-बीमा करा लिया। बीमा कराने के कुछ ही समय उसकी मृत्यु हो गई। बेकी बीमा का रुपया पाकर अपने चक्रजाल की सफलता से प्रसन्न हो उठी।

कुछ समय बाद कर्नल राडन क्रार्ली की भी मृत्यु हो गई। उसके लड़के ने अपनी मां का मुख देखने से अस्वीकार किया। रेबेका ने अन्त में एक दूसरा ही ढोंग रचा। वह धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में दान देकर अपने बाज़ारूपन की कुख्याति को मिटाने का प्रयत्न करने लगी। कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति इस ढोंग को न समझकर उसके प्रति वास्तव में श्रद्धा का भाव प्रकट करने लगे!

चार्लोट ब्रांटे

चार्लोट ब्रांटे का जन्म २१ अप्रैल, १८१६ को हुआ। उसका पिता आयरिश था। वह दुर्बल-शरीर और सनकी था। चार्लोट की माँ जब अपनी तीन लड़कियों को अपने सनकी पति की निगरानी में छोड़कर चल बसी, तो तीनों बहनें एक ओर अपने पिता की सेवा करने, और दूसरी ओर, लिखने-पढ़ने में अपना समय बिताने लगीं। चार्लोट की दो बहनों में से एक का नाम एमिली और दूसरी का एनी ब्रांटे थे। तीनों बहने कल्पना-लोक में विचरने में विशेष आनन्द पाती थीं। आर्थिक संकट से परिवार की रक्षा करने के उद्देश्य से चार्लोट को अध्यापन का काम करना पड़ता था। घर के सब काम-धंधों की देख-रेख उसी को करनी पड़ती थी। तिस पर भी वह साहित्यिक विषयों का अध्ययन करने और कविताएँ लिखने का समय अपने लिये निकाल लेती थी।

सन् १८४६ में तीनों बहनों ने मिलकर अपनी कविताओं का एक संग्रह छपाया। पुस्तक में उन्होंने अपने वास्तविक नाम न देकर ये काल्पनिक नाम दिए—करेर, एलिस और ऐक्टन बेल। उस कविता-संग्रह की ओर किसी का ध्यान नहीं गया। इसके बाद तीनों बहनें एक-एक उपन्यास लिखने बैठ गईं। एमिली ने 'वूदरिंग हाइट्स' शीर्षक उपन्यास लिखा, एनी ने 'एग्नेस ग्रे' लिखा और चार्लोट ने 'प्रोफ़ेसर'। एमिली और

एनी को प्रकाशक मिल गए, पर चार्लोट का उपन्यास छापने को कोई तैयार न हुआ। फिर भी वह निराश न हुई, और उसने 'जेन आयर' लिखना आरम्भ किया। सन् १८४७ में वह उपन्यास प्रकाशित हुआ। उसके प्रकाशित होते ही हमारे साहित्य-संसार में तहलका मच गया। लोग पूछने लगे कि उसकी लेखिका 'करेर बेल' कौन है ? इसके बाद चार्लोट ने 'शर्ली' नामक उपन्यास लिखा, तब उसके असली नाम से लोग परिचित हुए और चार्लोट का नाम श्रेष्ठ औपान्यासिकों के साथ लिया जाने लगा। उसकी अन्तिम रचना 'विलेट' १८५३ में प्रकाशित हुई। इसके दूसरे वर्ष निकल्स नामक एक पादड़ी से उसका विवाह हो गया। पर विवाह होने के एक वर्ष बाद ही उसकी मृत्यु हो गई।

जेन आयर

जेन आयर जीवन के प्रारंभ में ही अनाथ बन गई थी। उसकी विमाता, मिसेज़ रीड ने दस वर्ष तक उस अनाथ लड़की को अपने पास रखा। उन दस वर्षों के बीच उस दीन-हीन, असहाय छोकरी के साथ ऐसा निष्ठुरतापूर्ण व्यवहार किया गया कि जब उसे लोवुड स्कूल में रहने और पढ़ने के लिये भेज दिया गया, तो जेन ने अपने को कृतार्थ समझा। वह अर्द्ध-दातव्य स्कूल था। वहाँ जेन ने बड़ी लगन के साथ, परिश्रमपूर्वक पढ़ा। उसकी योग्यता देखकर स्कूल के अधिकारी उसके प्रति बहुत प्रसन्न हो उठे। शिक्षा समाप्त करने पर वह उसी स्कूल में शिक्षयित्री नियुक्त हो गई।

कुछ समय बाद उसने स्कूल में पढ़ाना छोड़ दिया और थार्नफील्ड नामक स्थान में एडवर्ड राचेस्टर नामक एक ज़मींदार के यहाँ गवर्नेस नियुक्त हो गई। वहाँ वह आडेला वारेन्स नाम की एक लड़की की देखभाल करने लगी। थार्नफील्ड में वह बड़े आराम से रहने लगी। मकान काफ़ी बड़ा था। वहाँ उसे रहने के लिये एक बहुत सुन्दर और सुसज्जित कमरा दे दिया गया। एक अच्छा सा पुस्तकालय भी अध्ययन के लिये उसे मिल गया। सामने एक बहुत सुन्दर बाग़ था, और उसके आगे एक बहुत लम्बा, खुला हुआ मैदान था, जिसमें स्थान-स्थान पर छोटे-छोटे कांटेदार पेड़ों की सुन्दर क़तारें दिखाई देती थीं।

यदि एडवर्ड राचेस्टर एक सुन्दर व्यक्तित्ववाला रूपवान युवक होता, तो जेन कभी उसके यहाँ निश्चिन्त होकर न रह सकती। पर वह एक चिन्ताशील प्रकृति का उदास-चित्त और कुरूप प्राणी था। जेन को उसके सामने किसी प्रकार का संकोच नहीं मालूम

पड़ा जैसे कोई व्यक्ति सहायता के लिये पुकार रहा है। जब वह हॉल में पहुँची, तो सब अतिथि भी चौंककर उठ बैठे थे। इतने में राचेस्टर हाथ में एक जली हुई मोमबत्ती लेकर सीढ़ियों से नीचे उतरते हुई दिखाई दिया। उसने अतिथियों के पास आकर कहा—"घबराने की कोई बात नहीं है; एक नौकर दुःस्वप्न देखकर चिल्ला उठा था।" यह सुनकर सब लोग निश्चिन्त होकर अपने अपने कमरे में सोने के लिये चले गए। पर जेन ने देखा कि मिस्टर मेसन की एक बाँह में और कन्धे में सख्त चोट आई है। वह रात भर उसकी शुश्रूषा में रही। नौकरों से पूछने पर जो अस्पष्ट बातें जेन को मालूम हुई, उनसे वह केवल इतना ही अनुमान लगा पाई कि किसी एक स्त्री ने उस पर आघात किया है। शीघ्र ही एक डाक्टर बुलाया गया, और प्रातःकाल के पहले ही राचेस्टर ने उस घायल अतिथि को डाक्टर की रखवाली में किसी दूसरे स्थान में भेज दिया।

एक दिन जेन की विमाता मिसेज़ रीड ने अचानक उसे बुला भेजा। मिसेज़ रीड मृत्यु शय्या में पड़ी हुई थी। उसने जेन के हाथ में एक पत्र दिया। वह पत्र मदीरा नामक स्थान से जान आयर ने लिखा था। जान आयर जेन का चचा लगता था। उसने पत्र में लिखा था कि चूँकि वह अविवाहित और सन्तान-रहित है, इसलिये वह अपनी भतीजी जेन आयर को गोद लेना चाहता है। उसने यह इच्छा प्रकट की थी कि जेन आयर शीघ्र उसके पास चली आवे। वह पत्र तीन वर्ष पहले लिखा गया था। मिसेज़ रीड नहीं चाहती थी कि जेन अपने चचा के पास जाकर सुख से रहे, इसलिये उसने आज तक वह पत्र उसके पास नहीं भेजा था। पर चूँकि अब वह मरने जा रही थी, इसलिये उस पत्र को अधिक समय तक रोके रहना उसने उचित नहीं समझा।

विमाता की मृत्यु के बाद जेन थार्नफील्ड को वापस चली गई। इस बार उसके पहुँचते ही राचेस्टर ने उससे विवाह का प्रस्ताव किया। जेन के प्रति वह प्रारंभ से ही आकर्षित हो गया था, पर आज तक अपने मन के इस भाव को उसने प्रकट नहीं होने दिया था। जेन भी उसके स्वभाव की सचाई और सहृदयता पर मुग्ध थी, इसलिये उसने उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। एक महीने बाद विवाह हुआ। विवाह के समय, जब पादड़ी मन्त्र पढ़ रहा था, तो अकस्मात् उस प्रशान्त गिर्जे में किसी की स्पष्ट वाणी गूंज उठी—"यह विवाह नहीं हो सकता। इसमें एक भयंकर बाधा है।"

जिस व्यक्ति ने यह कहा, उससे जब पादड़ी ने पूछा कि वह बाधा क्या है, तो उसने अपने पास से एक दस्तावेज़ निकाला, जिससे यह प्रमाणित होता था कि राचेस्टर विवाहित है और उसने पन्द्रह वर्ष पहले जामेका के अन्तर्गत स्पेनिश टाउन में बर्था मेसन नाम की एक स्त्री से विवाह किया था, जो अभी तक जीवित है और थार्नफील्ड में ही रहती है। इस घटना के साक्षी के बतौर मिस्टर मेसन को पादड़ी के सामने खड़ा कर दिया गया।

एडवर्ड राचेस्टर ने स्वीकार किया कि वह विवाहित है, और उसकी पत्नी थार्नफील्ड में ही रहती है; उसने वर्षों से उसे गुप्त रूप से अपने यहाँ रखा है। इसका कारण उसने यह बताया कि वह एकदम पागल है। केवल वही नहीं, उसका सारा वंश ही पागल रहा है। तीन पुश्तों से उस कुल में जितने भी व्यक्ति उत्पन्न हुए हैं उनमें से प्रायः सभी या तो पागल हुए हैं, या सिड़ी या बुद्धू। उसे इन सब बातों का पता पहले नहीं था। उसकी पागल स्त्री के पिता और भाई ने धन के लोभ से जाल रचकर उसे ऐसी परिस्थिति में डाल दिया कि उसे विवश होकर विवाह करना पड़ा। राचेस्टर ने पादड़ी को इस बात के लिये आमन्त्रित किया

कि वह मिस्टर मेसन और उसके वकील को साथ लेकर उसके साथ थार्नफील्ड चले, और वहाँ चलकर सब लोग अपनी आँखों से देखें कि जिस जन्तु के साथ विवाह करने के लिये उसे विवश किया गया है, उसकी आकृति-प्रकृति और शील-स्वभाव किस प्रकार का है; इसके बाद वे लोग इस बात पर निष्पक्षतापूर्वक विचार करें कि उस विवाह-बन्धन को तोड़ना न्यायसंगत है या नहीं।

उन लोगों को साथ लेकर राचेस्टर थार्नफील्ड पहुँचा, और तीसरी मंज़िल में उन्हें ले गया। एक ऐसे कमरे में सब लोग पहुँचे जहाँ एक भी खिड़की नहीं थी। वहाँ आग जल रही थी, और छत से लगी हुई एक जंजीर के निचले सिरे पर एक लैम्प लटक रहा था। एक नौकरानी आग के पास झुकी हुई सी थी। स्पष्ट ही वह कुछ खाना पका रही थी। कमरे के एक प्रायान्धकार किनारे में एक विचित्र सी मूर्ति एक सिरे से दूसरे तक निरन्तर चक्कर लगा रही थी। उसकी आकृति स्पष्ट नहीं दिखाई देती थी। वह हाथों और पाँवों के बल जानवरों की तरह चल रही थी, और एक विचित्र हिंसक पशु की तरह बीच बीच में ग़ुर्राती जाती थी। उसके सिर पर और मुख पर शेर की अयाल की तरह लम्बे-लम्बे बाल बिखरे हुए पड़े थे। दर्शकों की समझ ही में नहीं आता था कि वह अनोखा जन्तु कौन है।

राचेस्टर ने कहा—"देखा आप लोगों ने? यही मेरी 'स्त्री' है।"

इसके बाद सब लोग बाहर चले आए।

जेन उसी रात थार्नफील्ड से भाग निकली। उसके पास जो थोड़े से पैसे बचे थे उन्हें एक गाड़ी वाले को देकर उसने कहा कि उतने पैसों से जहाँ तक का किराया चुकता हो वहाँ तक वह उसे पहुँचा दे। छत्तीस घण्टे की यात्रा के बाद गाड़ी वाले ने एक निर्जन स्थान में उतार दिया। वहाँ से उसे पैदल चलना पड़ा।

पड़ा। दूसरी आँख में सूजन आ गया, और उसकी भी ज्योति जाती रही। जेन ने जब यह क़िस्सा सुना तो वह दुःख और शोक से स्तम्भित रह गई। उसे सूचित किया गया कि इस समय राचेस्टर थार्नफील्ड से तीस मील की दूरी पर फर्नडीन नामक स्थान में रहता है—वहाँ भी उसकी अपनी ज़मीन है।

जेन तत्काल उस स्थान के लिये रवाना हुई। वहाँ पहुँचने पर उसने राचेस्टर को दयनीय हीन अवस्था में एकाकी और असहाय सा पाया। उसने अपूर्व त्याग और प्रेम का परिचय दिया और उससे विवाह कर लिया। संयोग से राचेस्टर की आँख में फिर से ज्योति आ गई। जब जेन ने पहले बच्चे को जन्म दिया तो राचेस्टर ने देखा कि उसकी आँखें वैसी ही बड़ी और उज्ज्वल हैं जैसी किसी समय उसकी अपनी आँखें थीं। उसने भगवान् को इस बात के लिये हृदय से धन्यवाद दिया कि उसकी कर्तव्यनिष्ठा और धैर्य का उसे समुचित पुरस्कार मिला है।

कुछ समय बाद डायना और मेरी, दोनों बहनों का विवाह हो गया। वर्ष में एक बार दोनों में से कोई एक बहन जेन और राचेस्टर से मिलने के लिये अवश्य आ जाती। सेन्ट जान धर्म प्रचार करने के उद्देश्य से भारत चला गया।

—:०:—

लिओ टाल्सटाय

कौन्ट लिओ टालसटाय का जन्म सन् १८२८ में रूस के अन्तर्गत यास्नाया पोल्याना नामक स्थान में हुआ। प्रारंभ में उसने प्राच्य भाषाओं का अध्ययन किया, उसके बाद क़ानून की शिक्षा प्राप्त की और अन्त में सेना में भर्ती होकर उसने क्रीमियन युद्ध में भाग लिया। युद्ध के विभीषिकापूर्ण दृश्यों से उसके विचारों में बड़ा परिवर्तन आ गया और तब से वह विश्व-शान्ति का उपासक बन गया।

सब से पहले उसकी 'छुटपन' और 'किशोरावस्था' शीर्षक रचनाएं प्रकाशित हुईं। उन रचनाओं से उसकी कला की सुन्दरता, सचाई और मार्मिकता का प्रथम परिचय विशेषज्ञों को मिला। इसके बाद उसने अपने सैनिक जीवन-सम्बन्धी अनुभवों को लिपिबद्ध किया। किसी भी विषय के वाह्याडम्बर के भीतर छिपी हुई यथार्थता को खोज निकालने की कला में उसकी पटुता प्रारंभ से ही अविवादास्पद रही। सेना से अलग होने के बाद उसने किसानों की उन्नति की ओर ध्यान दिया, और उनकी सेवा को अपने जीवन का प्रधान लक्ष्य बना लिया। उसने बहुत-सी छोटी मोटी रचनाओं के अतिरिक्त सन् १८६४—६६ के बीच "युद्ध और शान्ति" शीर्षक एक महा-उपन्यास लिखा, और "अन्ना कैरेनिना" की रचना १८७९—७६ में हुई। "अन्ना कैरेनिना" की गिनती संसार

के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में है। जीवन की यथार्थता, कला की कमनीयता और चरित्र-चित्रण की सूक्ष्मता की जो ख़ूबी इस उपन्यास में पाई जाती है, वह वास्तव में अद्वितीय है। जीवन के सच्चे आदर्श के सम्बन्ध में उसने अपने मौलिक विचारों को अपनी विभिन्न कलात्मक रचनाओं तथा निबंधों द्वारा व्यक्त किया। उसके जीवन-काल में ही उसके विचारों ने सारे संसार में तहलका मचा दिया और उसकी गिनती संसार के श्रेष्ठ महात्माओं में होने लगी, दूर-दूर से लोग उसके दर्शनों के लिये आने लगे और उसका निवास-स्थान यास्नाया पोल्याना एक तीर्थस्थान बन गया।

जीवन के अन्तिम समय में उसने संसार त्यागने का निश्चय किया। एक दिन वह घर के किसी भी व्यक्ति को कोई सूचना न देकर चुपचाप घर से निकल भागा, पर कुछ ही दूर जाते ही बीमार पड़ गया। उसी बीमारी में सन् १९१० में उसकी मृत्यु हो गई। सारे संसार में उसकी मृत्यु के संवाद से सनसनी फैल गई।

अन्ना कैरेनिना

अन्ना कैरेनिना के जीवन की ट्रेजेडी का मूल कारण यह था कि उसका विवाह एक ऐसे व्यक्ति से हुआ था, जो उससे बीस वर्ष बड़ा था, और जिसके प्रति प्रेम की कोई अनुभूति प्रारंभ से अन्त तक उसके मन में उदित नहीं हो पाई। फिर भी अपने विवाहित जीवन के प्रथम आठ वर्ष तक अन्ना ने पातिव्रत-धर्म को पूर्ण रूप से निबाहा। इस लम्बे अर्से तक उसके मन में कभी यह प्रश्न ही नहीं उठा कि उसका पति उसके योग्य है या नहीं, और न इस सम्बन्ध में किसी प्रकार का सन्देह ही उत्पन्न हुआ कि वह उससे प्रेम करती है या नहीं। वह नियमित और निश्चिन्त रूप से गृहस्थ-धर्म का पालन करती चली गई।

कैरेनिन बड़ा कामकाजी व्यक्ति था। वह एक बहुत ऊँचे सरकारी पद पर नियुक्त था, और रात-दिन राजनीतिक विषयों की चर्चा और चिन्ता में ही व्यस्त रहता। वह अधिकतर ऐसे ही व्यक्तियों से मिलता था जो राजनीतिक विषयों के वाद-विवाद में दिलचस्पी लेते थे। पर अन्ना सब प्रकार के सामाजिक प्राणियों से हेलमेल रखती थी। वह आश्चर्यजनक रूप से सुन्दरी थी, और उसका स्वभाव बहुत ही मधुर था। साथ ही वह बड़ी समझदार की थी। कैरेनिन बहुत ही नीरस प्रकृति का व्यक्ति था। अपनी पत्नी के प्रति बाह्य कर्तव्यों के पालन में वह लेशमात्र त्रुटि भी कभी नहीं होने देता था, पर यह बात उसकी बुद्धि के अतीत थी कि नारी की आत्मा की तुष्टि के लिये किस प्रकार के आन्तरिक व्यवहार की आवश्यकता है। प्रेम की मार्मिकता की अनुभूति वह जीवन में कभी कर नहीं पाया। अन्ना का स्वभाव उसके

बिलकुल विपरीत था। उसके हृदय में प्रेम का रस लबालब भरा हुआ था, और उमड़ कर बाहर निकलने के लिये सब समय अशान्त रहता था। सारा प्रेम वह अपने आठ वर्ष के बच्चे सेर्ज्ञा पर उंड़ेल कर अपने मन को शान्त कर लेती थी।

आठ वर्ष तक कैरेनिन-परिवार में शान्ति और शृंखला बनी रही, यद्यपि सब समय उसके नीरस वातावरण में उमंग और उत्साह, प्रेम और आनन्द का अभाव रहा। उस निर्विचित्र शान्ति में एक दिन अकस्मात् तूफ़ानी तरंग लहरा उठी, और अन्ना तथा उसके पति के जीवन में अशान्ति का एक भयंकर बवंडर मच गया। इस अशान्ति का मूल कारण था अलक्से व्रान्सकी नामक एक संभ्रान्त कुल का धनी और सुरूप मिलिटरी आफ़िसर। अन्ना की भेंट उससे मास्को में हुई थी।

अन्ना अपने पति के साथ पीटर्सबर्ग में रहती थी। उसका भाई स्टीपेन आब्लान्सकी उर्फ़ स्टीवा मास्को में रहता था। आब्लान्सकी बड़े अच्छे स्वभाव का मिलनसार और लोकप्रिय व्यक्ति था। उसकी सुन्दरी पत्नी डाली कई बच्चों की मां थी और अतिशय पति-परायणा थी। आब्लान्सकी यद्यपि डाली को बड़ी श्रद्धा और प्रेम की दृष्टि से देखता था, पर विलास-प्रिय होने के कारण डाली के अनजान में नित्य नयी-नयी स्त्रियों से अस्थायी प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करता जाता था। उसके दुर्भाग्य से एक बार उसका एक प्रेम-पत्र डाली के हाथ लग गया। वह पत्र आब्लान्सकी ने अपने घर की एक भूतपूर्व फ्रेञ्च गवर्नेस के नाम भेजा था। डाली अपने पति के उस प्रेम-सम्बन्ध का आविष्कार करके मर्माहत हो गई। आब्लान्सकी ने उसे मनाने की बहुत चेष्टा की, गिड़गिड़ाया और क्षमा माँगी; पर कोई फल न हुआ। अन्त में उसने अन्ना को बुला भेजा, ताकि वह आकर डाली को समझावे, जिससे पारिवारिक संकट टल जाय। इसी सिलसिले में अन्ना

मास्को आई। स्टेशन में उसे कौन्ट व्रान्सकी मिला। प्रथम दृष्टि में ही दोनों दुर्निवार वेग से एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हो गए।

व्रान्सकी कुछ समय से मास्को आया हुआ था, और स्टीवा (आब्लान्सकी) की सुन्दरी साली किटी के प्रति आकर्षित हुआ था। किटी का पिता प्रिन्स श्चरबैट्स्की एक प्रतिष्ठित वंश का नामी व्यक्ति था। किटी की अवस्था विवाहयोग्य हो गई थी, और उसके माता-पिता इस बात की चिन्ता में थे कि किटी को कोई योग्य वर मिल जाय। किटी के उपासकों की संख्या बहुत थी, जिनमें से दो व्यक्तियों के सम्बन्ध में उसके मन में यह निश्चित धारणा थी कि वे उससे विवाह करने का इरादा रखते हैं। इन दो व्यक्तियों में से एक था व्रान्सकी, और दूसरा था लेविन।

कान्स्टेन्टिन लेविन भी सम्भ्रान्तवंशीय था। वह किटी को बहुत दिनों से जानता था। श्चरबैट्स्की परिवार में वह अक्सर आया-जाया करता था। उसकी अवस्था अब बत्तीस वर्ष की हो चुकी थी। किटी को वह अपनी सम्पूर्ण आत्मा से चाहता था। वह उससे केवल प्रेम ही नहीं करता था, बल्कि उसे एक स्वर्ग की देवी के समान समझकर उसके प्रति भक्तिभाव भी रखता था। उसे अपने सम्बन्ध में यह सन्देह था कि वह किटी के योग्य नहीं है। फिर भी उसने यह निश्चय कर लिया था कि वह एक बार अवश्य ही उससे विवाह का प्रस्ताव करेगा—फिर चाहे परिणाम कुछ भी हो।

व्रान्सकी और लेविन में से कौन पात्र किटी के लिये अधिक उपयुक्त है, इस सम्बन्ध में किटी के माता-पिता के बीच आपस में काफ़ी वादविवाद और झगड़ा चला करता था। किटी की माँ पूर्णतः व्रान्सकी के पक्ष में थी। वह सुन्दर व्यक्तित्व-सम्पन्न है, धनी है, और उसका भविष्य बहुत उज्ज्वल है, पर लेविन एक

देहाती जमींदार के अतिरिक्त और कुछ नहीं है—किटी की माँ की यह राय थी। पर उसके पिता का कहना था कि लेविन एक उत्तरदायित्वपूर्ण, कर्तव्यपरायण तथा स्नेहशील व्यक्ति है, इसलिये उससे अच्छा वर किटी के लिये दूसरा कोई मिल नहीं सकता। बुड्ढा प्रारम्भ से ही व्रान्सकी को घृणा की दृष्टि से देखने लगा था। उसकी धारणा थी कि वह (व्रान्सकी) किसी भी लड़की को धोखा दे सकता है।

किटी यद्यपि लेविन को चाहती थी, तथापि व्रान्सकी के व्यक्तित्व की तड़क-भड़क ने उस पर जादू-सा फेर दिया था। इसलिये उसने लेविन के विवाह-प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया, यद्यपि अस्वीकार करते हुए उसे हार्दिक दुःख हुआ था। वह इस आशा में बैठी थी कि उचित अवसर आने पर व्रान्सकी अवश्य ही उससे विवाह का प्रस्ताव करेगा। वह 'उचित अवसर' तब आया जब शहर में एक विराट् नृत्योत्सव हुआ। किटी को पूरा विश्वास था कि व्रान्सकी एक विशेष नाच में उससे अपने साथ नाचने के लिये कहेगा। पर व्रान्सकी ने उस नाच के लिये उसे नहीं बल्कि अन्ना को आमन्त्रित किया, जो उस नृत्योत्सव में उपस्थित थी। किटी की सारी आशाओं पर पानी फिर गया। भयंकर निराशा और मार्मिक अपमान की लज्जा से विह्वल और विभ्रान्त होकर किटी अन्ना और व्रान्सकी की ओर देखती रह गई। उनके मुखों के भावों से किटी को यह भांपने में देर न लगी कि वे दोनों एक-दूसरे के प्रेम में पूर्ण रूप से निमग्न हो गए हैं।

अन्ना के समान असाधारण रूपवती और तेजस्विनी नारी को प्रथम बार एक ऐसा पुरुष मिला जो उसके अनुपम रूप की क़द्र कर सकता हो, और उसके तेजोमय स्वभाव के महत्त्व को ठीक परख सकता हो। व्रान्सकी को भी प्रथम बार एक ऐसी नारी मिली, जिसे वह किसी प्रकार भी क्षणिक विलास की

सामग्री नहीं समझ सकता था, और जिसका रूप और शील उसे प्रतिपल अधिकाधिक रहस्यमय जान पड़ते थे। पर फिर भी व्रान्सकी के और अन्ना के मनोभावों में बहुत अन्तर था। व्रान्सकी शीघ्र से शीघ्र उससे प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करने के लिये विकल हो उठा था, पर अन्ना यह जानकर कि वह अप्रत्याशित रूप से प्रेम का शिकार बनने जा रही है, उस परिस्थिति से भागकर अपनी रक्षा करना चाहती थी। इसलिये डाली को समझा-बुझाकर उसके पति के साथ उसका मेल कराने में पूरी सफलता प्राप्त करके, वह निश्चित समय से पहले ही अपने पति और बेटे के पास जाने की तैयारी करने लगी।

पर जिस गाड़ी से वह पीटर्सबर्ग के लिये रवाना हुई, व्रान्सकी भी उसका पीछा करने के लिये उसी गाड़ी में बैठ गया। अन्ना की समस्या बड़ी विकट हो उठी। एक ओर उसका हृदय व्रान्सकी का प्रेम पाने के लिये अत्यन्त लालायित हो उठा था, दूसरी ओर उससे वह डरने भी लगी थी। उसने व्रान्सकी से कड़े शब्द कहकर कई बार उसे निरुत्साहित करने का प्रयत्न किया; पर व्रान्सकी उसकी आँखों के भाव से यह भाँप गया था कि मुख से वह चाहे कुछ भी कहे, पर अन्तर से वह उसे चाहती है। अन्ना जानती थी कि एक बार व्रान्सकी के प्रेम के प्रति आत्म-समर्पण कर देने से उसके इतने वर्षों के जीवन की सारी शृंखला टूट जायगी, और अशान्ति तथा अव्यवस्था उसे घर दबावेगी। पर भरसक चेष्टा करने पर भी वह अपने मन को वश में नहीं कर पाती थी। अन्त में एक दिन दीर्घ प्रतीक्षा के बाद व्रान्सकी की मनोकामना चरितार्थ हो गई। अन्ना ने बहुत अन्तर्द्वन्द्व के बाद अन्त में अपने को व्रान्सकी की वासना की आग में बलि दे दिया। प्रथम पाप-मिलन के बाद अन्ना बहुत रोई—विकल, विह्वल होकर रोई। पर बाद में उसे आदत पड़ गई, और धीरे-धीरे उसके स्वभाव में आश्चर्य-

उत्सुक हो उठा। फिर भी अपने आप वह कभी उससे मिलने न जाता : पर स्टीवा की एक चाल ने किटी से उसकी भेंट करा दी। जब किटी विदेश-यात्रा से लौटकर मास्को चली आई तो स्टीवा ने एक दिन अपने मित्रों को भोज दिया। लेविन भी उन दिनों किसी काम से मास्को आया हुआ था और एक होटल में ठहरा हुआ था। स्टीवा ने किटी को उस भोज में निमन्त्रित किया और लेविन को भी। प्रारंभ में दोनों एक दूसरे को देखकर अत्यन्त संकोच का अनुभव करने लगे। पर साथ ही एक अपूर्व आनन्द की अनुभूति भी दोनों को पुलक-व्याकुल कर रही थी। शीघ्र ही दोनों आपस में इस स्वच्छन्द प्रसन्नता से बातें करने लगे, जैसे उन दोनों के बीच मनोमालिन्य की कोई घटना कभी घटी ही न हो। भोज समाप्त होने पर घर वापस जाने के पहले ही दोनों को यह बात निश्चित रूप से मालूम हो गई कि वे एक-दूसरे को आन्तरिक हृदय से चाहते हैं। दूसरे ही दिन लेविन ने किटी के घर जाकर उससे दुबारा विवाह का प्रस्ताव किया। किटी ने प्रेमपूर्वक उसे आलिंगन करके अत्यन्त हर्षपूर्वक उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। लेविन की प्रसन्नता का पारावार न रहा।

इधर कैरेनिन अन्ना को यह शिक्षा देने की चेष्टा कर रहा था कि आज तक जो कुछ होना था हो चुका, अब भविष्य में अन्ना को संभल जाना चाहिये और अब भी यदि वह व्रान्सकी से गुप्त प्रेम-सम्बन्ध रखना चाहे तो रखे, पर प्रकट रूप से समाज को उस सम्बन्ध का परिचय देकर उसकी (कैरेनिन की) नाक न कटावे। अपने पति की इस कायरतापूर्ण समझौते की मनोवृत्ति से अन्ना बेतरह खीझ उठी और उसे भयंकर घृणा की दृष्टि से देखने लगी। कुछ समय बाद अन्ना ने एक लड़की को जन्म दिया। वह लड़की वास्तव में व्रान्सकी की थी। प्रसव के बाद ही वह बीमार पड़ गई और उसके जीने की कोई आशा न रही। उसके कहने पर

कैरेनिन को मास्को से तार द्वारा बुलाया गया। कैरेनिन के आने पर अन्ना ने प्रबल भावुकतावश उससे अपने पिछले व्यवहार के लिये क्षमा माँगी और व्रान्सकी को भी क्षमा कर देने के लिये कहा। व्रान्सकी अन्ना के पास बैठा हुआ रो रहा था। कैरेनिन को भी मृतप्राय पत्नी के भावुकतापूर्ण उद्गारों को सुनकर रुलाई आ गई। उसने अन्ना को क्षमा कर दिया और व्रान्सकी से हाथ मिलाया। अन्ना अच्छी हो गई। पर व्रान्सकी कैरेनिन के उदारतापूर्ण व्यवहार से दब गया। इससे भी अधिक दुःख उसे इस बात से हुआ कि पति से क्षमा माँगने के बाद अब अन्ना उसकी न रही। दुःख और ग्लानि से वह इस हद तक विकल हो उठा कि आत्म-हत्या करने पर उतारू हो गया। पर उसका प्रयत्न विफल गया और वह मरा नहीं।

स्वस्थ होने के बाद अन्ना की भावुकता जाती रही और अपने पति के प्रति उसके मन में फिर से घृणा उमड़ने लगी। वह समझ गई कि क्षमा माँगकर उसने बड़ी भूल की है और व्रान्सकी के बिना उसका जीवन विफल है। जब उसने सुना कि व्रान्सकी ने उसके कारण आत्महत्या करने का प्रयत्न किया है, तो वह उससे मिलने के लिये और भी अधिक व्याकुल हो उठी। अन्ना से बिछुड़न के कारण व्रान्सकी के मन में जीवन से विराग उत्पन्न हो गया था और उसने किसी दूरस्थित स्थान में मिलिटरी अफ़सर का पद स्वीकार कर लिया था। पर जाने के पहले वह एक बार अन्ना से मिलने के लिये उत्सुक था। एक महिला-मित्र की चेष्टा से दोनों का पुनर्मिलन हुआ। अन्ना ने स्वीकार किया कि वह उसके बिना नहीं रह सकती। व्रान्सकी का प्रस्ताव स्वीकार करके अन्ना उसके साथ भागकर इटली चली गई। वह जानती थी कि इस प्रकार भागने से अपने आठ वर्ष के प्यारे लड़के सेरेज़ा पर उसका कोई अधिकार न रहा। यह दुःख तीक्ष्ण काँटे के समान प्रतिपल उसके हृदय को

विद्ध कर रहा था। फिर भी उसके प्रेम ने ऐसा उन्मादक रूप धारण कर लिया था कि इटली में व्रान्सकी के साथ स्वच्छन्द जीवन बिताते हुए प्रारंभ में कुछ दिनों तक उसके आनन्द और उमंग की सीमा न रही। व्रान्सकी भी बहुत प्रसन्न था। पर कुछ समय बाद वह अपने लक्ष्यहीन जीवन से उकताने लगा और अन्ना को साथ लेकर रूस लौट चला। समाज की दृष्टि में अन्ना बहुत गिर गई थी। यदि उसे पति से तलाक़ मिल गया होता तो दूसरी बात थी। पर बिना तलाक़ मिले किसी दूसरे पुरुष के साथ खुल्लमखुल्ला रहने वाली स्त्री से समाज के स्त्री-पुरुषों ने मिलना-जुलना छोड़ दिया। यह बात ध्यान देने योग्य है कि जब अन्ना पति के साथ रह कर व्रान्सकी से प्रेम-सम्बन्ध रखती थी, तो समाज की आँखों में उसकी प्रतिष्ठा घटने के बजाय बढ़ गई थी। पर जब उसने ढोंग से तंग आकर व्रान्सकी के साथ स्पष्ट सम्बन्ध जोड़ लिया, तो उसका वह व्यवहार अत्यन्त निन्दनीय समझा जाने लगा!

अन्ना ने पीटर्सबर्ग वापस आने पर इस बात की बहुत चेष्टा की कि एक बार अपने प्राणों से भी प्रिय लड़के से मिले। पर कैरेनिन ने अपनी एक महिला-मित्र की सलाह मान कर उसे सेरेज़ा से मिलने की आज्ञा नहीं दी। अन्त में सेरेज़ा की वर्षगाँठ के अवसर अन्ना तड़के उठकर गुप्त रूप से कैरेनिन के यहाँ पहुँचकर सेरेज़ा से मिली और बार-बार उसका मुँह चूमकर बहुत रोई। उसके बाद शीघ्र ही वापस चली आई।

प्रारंभ में कैरेनिन तलाक़ के लिये राज़ी हो गया था और स्वयं अपने ऊपर दोष लेकर सेरेज़ा को उसे सौंपने के लिये तैयार था। पर शर्त यह थी कि अन्ना स्वयं इस बात के लिये प्रार्थना करे। पर अन्ना ने अपने पति की इस उदारता में अहम्मन्यता का भाव भरा हुआ पाया, जो उसे असह्य मालूम हुआ और उसने उसकी कृतज्ञता के भार से दबना अस्वीकार कर दिया। बाद में व्रान्सकी ने समाज

का रुख अच्छा न देखकर अन्ना से कहा कि वह अपने पति से तलाक़ के लिये निवेदन करे पर इस बार कैरेनिन ने एकदम अस्वीकार कर दिया। वास्तव में उसके मन में अन्ना के प्रति एक भयंकर प्रतिहिंसापूर्ण भाव उत्पन्न हो गया था और वह चाहता था कि तिल-तिल करके उसकी आत्मा प्रतिपल निर्मम रूप से पीड़ित होती रहे।

अन्ना को समाज की परवाह नहीं थी। उसके लिये व्रान्सकी ही सब कुछ था। पर व्रान्सकी समाज की पूर्ण अवज्ञा नहीं कर सकता था। व्रान्सकी बीच-बीच में समाज के लोगों से मिलता रहता था, पर चूंकि अन्ना के लिये समाज के द्वार बन्द हो गए थे, इसलिये वह घर से बाहर नहीं जा पाती थी। फल यह हुआ कि वह बहुत चिन्ताशील बन गई और व्रान्सकी के सम्बन्ध में उसके मन में इस सन्देह ने भयंकर रूप धारण कर लिया कि वह किसी दूसरी स्त्री से प्रेम करने लगा है। दुर्भाग्य से उसके प्रति व्रान्सकी के व्यवहार में भी थोड़ी-बहुत रुखाई आ गई थी। व्रान्सकी की माँ वास्तव में इस चेष्टा में थी कि प्रिन्सेस सोरोकिना नाम की एक नौजवान लड़की से उसका विवाह हो जाय। अन्ना को यह बात मालूम हो गई। एक दिन सोरोकिना किसी काम से व्रान्सकी से मिलने के लिये उसके यहाँ आई। अन्ना ने उसे देख लिया। ईर्ष्या के भूत ने उसके मस्तिष्क में प्रलयकाण्ड मचाना आरंभ कर दिया। सोरोकिना के चले जाने के बाद व्रान्सकी से अन्ना की कहा-सुनी हो गई। कुछ समय बाद व्रान्सकी बाहर चला गया। अन्ना अत्यन्त विकल हो उठी। वह जानती थी कि व्रान्सकी अपनी माँ के यहाँ गया होगा, क्योंकि वहीं वह सोरोकिना से मिला करता था। उसने एक आदमी दौड़ाकर स्टेशन से व्रान्सकी को वापस बुला लाने के लिये भेजा और उसके हाथ में एक पत्र दे दिया। पर व्रान्सकी को वह पत्र समय पर न मिला। अन्ना

में वह प्रथम बार प्रकाशित हुआ था और पाँच वर्ष के भीतर उसकी प्रायः पाँच लाख कापियाँ बिक गईं। उस पुस्तक का जनता पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा और देश भर में दास-प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन मच गया। इस प्रकार दास-प्रथा के निवारण में मिसेज़ स्टो ने पूर्वोक्त पुस्तक की रचना द्वारा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सहायता प्रदान की।

इस पुस्तक के बाद मिसेज़ स्टो ने और भी बहुत-से उपन्यास लिखे। पर उसकी विशिष्ट प्रतिभा को जो परिचय 'अंकिल टाम्स कैबिन' से मिलता है, वैसा किसी भी दूसरी पुस्तक से नहीं मिलता। इस अमर रचना का प्रधान नायक टाम एक हबशी है। उसके उन्नत आध्यात्मिक चरित्र का जो समवेदनापूर्ण यथार्थवादी चित्रण लेखिका ने किया है, वह वास्तव में अद्भुत है। सन् १८९६ में हार्टफोर्ड नामक स्थान में मिसेज़ स्टो की मृत्यु हो गई।

टाम काका

उस समय अमेरिका में दास-प्रथा का बोलबाला था। हवशी दासों की दुर्गति चरम सीमा को पहुँची हुई थी। केन्टुकी रियासत में शेल्बी नाम का एक ज़मींदार रहता था। उसकी ज़मीन में बहुत से हवशी दास काम करते थे। उनमें टाम नामक एक सहृदय-स्वभाव और प्रभु-भक्त दास भी था, जो सयाना होने के कारण टाम काका (अंकिल टाम) के नाम से पुकारा जाता था। शेल्बी ने उसे वचन दे रखा था कि उसकी जीवनव्यापी सच्ची सेवा के पुरस्कार-स्वरूप कुछ समय बाद वह उसे दासत्व के बंधन से मुक्त कर देगा। पर अकस्मात् शेल्बी की आर्थिक अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो उठी, और उसके ऊपर ऋण का जो भार लद गया था, उससे मुक्त होने के लिये उसे अपने कुछ दासों को बेचना पड़ा। अंकिल टाम को भी उसने इसी सिलसिले में बेच दिया।

जिस व्यक्ति ने उन दासों को खरीदा वह एक अर्थ-पिशाच व्यापारी था। वह सब दासों को दक्षिण मिसीसिपी के बाज़ारों में बेचकर मालामाल बनने के उद्देश्य से ले गया। टाम यदि चाहता, तो उसके भागने के लिये कई रास्ते खुले हुए थे। पर उसकी प्रभुभक्ति की भावना बड़ी प्रबल थी, और यह सोचकर कि उसके भाग निकलने से उसके मालिक पर कहीं कोई विपत्ति न आ पड़े, वह बिना किसी आपत्ति के उक्त व्यापारी के साथ चलने के लिये राज़ी हो गया। उसके जिन हितैषियों ने उसे भागने की सलाह दी उनसे उसने कहा—"मैं ईश्वर के हाथ बँधा हुआ हूँ, और जो ईश्वर यहाँ था वही वहाँ भी होगा।"

उसके मालिक का लड़का जार्ज अपने बाप के बुड्ढे प्रभुभक्त

ोर होकर स्वयं स्टेशन में जा पहुँची। उसकी बहुत दिनों की
ा और मानसिक उत्तेजना आज चरम सीमा को पहुँच चुकी
दूसरे स्टेशन में पहुँचकर कुछ देर तक प्लेटफ़ार्म में इधर-उधर
र लगाने के बाद आत्महत्या की एक अज्ञात प्रेरणा से वह
स्मात् सामने से आती हुई एक गाड़ी के नीचे कूद पड़ी और
र मर गई।

ान्सकी को इस दुर्घटना से कल्पनातीत आघात पहुँचा। कई
तक वह बीमार पड़ा रहा। अन्त में तत्कालीन सर्बियन युद्ध
ी होकर उसने अपनी प्राणघाती मानसिक पीड़ा को किसी
क भूलने का प्रयत्न किया।

इधर लेविन किटी के साथ सुख और शान्तिपूर्वक जीवन बिताने
। किटी ने एक सुन्दर बच्चे को जन्म दिया और पतिप्रेम तथा
ह के मंगलमय भावों की अनुभूति से वह नारी-जीवन की
ा को सार्थक समझने लगी। लेविन के मन में यह प्रेरणा जग
के उसका गृहस्थ-जीवन विश्वव्यापी जीवन का एक महत्त्वपूर्ण
है, जो भगवान् की अनन्त आनन्दमयी कल्याण-भावना से
प्रोत है।

हेरियट बीचर स्टो

हेरियट बीचर स्टो का जन्म अमेरिका के अन्तर्गत लिचफील्ड नामक स्थान में सन् १८११ में हुआ। उसका जन्म एक विख्यात पादड़ी-परिवार में हुआ था। उसकी धार्मिक भावना वंशगत थी, और छुटपन से ही उसके मन में यह विश्वास जम गया था कि भगवान की दृष्टि में सब मनुष्य समान हैं, और किसी भी व्यक्ति को यह अधिकार नहीं है कि वह किसी दूसरे व्यक्ति की विवशता का लाभ उठाकर उसे अपना दास बनाकर रखे।

उन दिनों अमेरिका में दास-प्रथा का प्रकोप भीषण रूप धारण किए हुए था, और हबशी दासों के ऊपर गोरे प्रभुओं के नृशंस अत्याचारों की सीमा नहीं थी। हेरियट बीचर का धर्म-परायण नारी-हृदय उन अमानुषिक अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह कर उठा। उसके ऊपर परिवार का बहुत भार था। सन् १८३६ में उसने काल्विन स्टो नामक एक पादड़ी से विवाह किया था। उसका पति निर्धन था और परिवार में बाल-बच्चों की संख्या काफ़ी थी। घर-गिरस्ती के भार से ग्रस्त रहने पर भी मिसेज़ स्टो ने 'अंकिल टाम्स कैबिन' शीर्षक एक उपन्यास लिखने का समय निकाला। इस उपन्यास में उसने हबशी दासों के ऊपर किए जाने वाले अत्याचारों का वर्णन अग्नि-शिखाओं के समान उद्दीप्त शब्दों में ऐसी मार्मिकता के साथ किया कि पढ़नेवालों के दिल दहल उठे। सन् १८५२

दास को विदा करते समय रो पड़ा, और कहने लगा—' मैं जानता हूँ, टाम, कि तुम्हारे साथ अत्यन्त नीचतापूर्ण व्यवहार किया जा रहा है। पर मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मैं एक दिन तुम्हारे पास आऊँगा और तुम्हें वापस ले जाऊँगा।"

जिस जहाज़ में टाम तथा उसके साथी लादे गए उसमें और भी बहुत-से दास लदकर मिसीसिपी में बिकने के लिये चले जा रहे थे। वह यात्रा बहुत ही करुण और शोचनीय दृश्यों से पूर्ण रही। केवल एक सहयात्री के साथ टाम का जो समय बीता वह अत्यन्त सुखमय रहा। वह परियों-सी सुन्दरी एक छोटी-सी लड़की थी जो सब समय मुस्कराती और खेलती रहती थी। उसने जब टाम को सुन्दर-सुन्दर खिलौनों के निर्माण में बहुत कुशल पाया, तो वह उससे बहुत प्रसन्न हो उठी। वह अक्सर उसके पास आकर उससे तरह-तरह के प्रश्न पूछती। एक दिन उसने पूछा—" टाम, तुम कहाँ जाओगे ?"

टाम ने उत्तर दिया—"बिटिया रानी, मैं कह नहीं सकता कि मैं कहाँ जाऊँगा। पर इतना अवश्य जानता हूँ कि मैं किसी आदमी के हाथ बेचे जाने के लिये जा रहा हूँ।"

लड़की बोली—"यदि यही बात है, तो मैं अपने पिताजी से कहती हूँ। वह तुम्हें अवश्य ही खरीद लेंगे।"

"मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ, बिटिया रानी!" कहकर टाम कृतज्ञतापूर्वक मुस्कराया।

घटनाचक्र कुछ ऐसा रहा कि वह छोटी-सी लड़की जिसका नाम ईवा था, खेलते हुए मिसीसिपी नदी में डूब गई। बूढ़े टाम ने तत्काल पानी में कूदकर उसकी जान बचाई। उस लड़की के बाप, सेन्ट क्लेयर ने कृतज्ञतावश दासों के व्यापारी से टाम को खरीद लिया।

सेन्ट क्लेयर और ईवा के साथ टाम उनके घर न्यू ओर्लियन्स पहुँचा। वहाँ वह कुछ समय तक परम प्रसन्नतापूर्वक रहा। सेन्ट क्लेयर का बर्ताव उसके प्रति अत्यन्त सदय और सहानुभूतिपूर्ण था। टाम के सरल, सहृदय और निष्कपट स्वभाव ने उसके मन पर यह धारणा जमा दी थी कि दास-प्रथा वास्तव में अत्यन्त अमानुषिक और निन्दनीय है। ईवा को टाम अपनी निजी लड़की के समान मानता था और वह भी उससे अत्यन्त स्नेहपूर्ण व्यवहार रखती थी। दो वर्ष तक उसका जीवन आनन्द के सागर में लहराता रहा। पर इसके बाद उसपर भयंकर वज्रपात हुआ। ईवा का स्वास्थ्य किसी रहस्यमय कारण से क्षीण से क्षीणतर होता चला जाता था। दासप्रथा के अत्याचारों का भी उसके सुकुमार हृदय पर बड़ा घातक प्रभाव पड़ा था। कारण कुछ भी हो, ईवा का स्वास्थ्य गिरते-गिरते यहाँ तक गिरा कि उसकी मृत्यु हो गई। सेन्ट क्लेयर और टाम दोनों उस वज्राघात से मर्माहत हो गए। टाम ने सेन्ट क्लेयर को सान्त्वना देते हुए भगवान् की अनन्त महिमा की ओर उसका ध्यान आकर्षित किया। टाम सेन्ट क्लेयर का दास नहीं, बल्कि जीवन का साथी बन गया। एक दिन उसने टाम को मुक्त कर देने का वचन दिया। टाम के मुख में आनन्द की आभा झलक उठी, जिसे देखकर सेन्ट क्लेयर का चित्त कुछ दुःखित हुआ। उसने कहा—"मुक्ति के नाम पर तुम्हें इतनी प्रसन्नता क्यों हुई, टाम? क्या तुम्हें मेरे यहाँ किसी बात का कष्ट है, जो मुझे छोड़ने की बात तुम्हें इतनी प्रिय लगी?"

टाम ने उत्तर दिया—"नहीं मालिक, मैं आपको छोड़कर कभी कहीं नहीं जा सकता। पर दास बनकर आपके साथ रहने में उतना सुख नहीं है जितना मुक्त होकर आपका साथी बनने में।"

पर मुक्ति मिल नहीं सकी। टाम को मुक्त करने के लिये लिखित रूप से जिस कार्रवाई की आवश्यकता थी, उसे तैयार

करने में सेन्ट क्लेयर ने आलस्यवश देर कर दी, और इसी बीच एक दिन दो शराबियों के झगड़े में बीच-बचाव करने के प्रयत्न में एक शराबी के छुरे से घायल होकर वह परलोक सिधार गया। उसकी मृत्यु के बाद जब उसकी सम्पत्ति का बटवारा होने लगा, तो टाम भी उस सम्पत्ति के अन्तर्गत होने से उसका नीलाम हुआ। जिस व्यक्ति ने सबसे अधिक दाम देकर टाम को नीलाम में ख़रीदा वह बड़ा ही क्रूर और निष्ठुर-स्वभाव था।

टाम के इस नये मालिक का नाम साइमन लेग्री था। वह एक नम्बर का बदमाश और शराबी था। न जाने कितनी भद्र महिलाओं पर वह अत्याचार कर चुका था। दीन-हीन, असहाय और अनाथ व्यक्तियों को अधिक से अधिक पीड़ित करने और असह्य कष्ट पहुँचाने में उसे एक प्रकार का नारकीय और पाशविक आनन्द प्राप्त होता था। अपने अत्यन्त नीच और घृणित स्वभाव से जब वह टाम की सहृदयता, सच्ची धार्मिकता और महानुभावता की तुलना करता, तो वह लज्जित होने के बदले और भी अधिक जल उठता; और टाम के मनोबल को हर तरह से नष्ट-भ्रष्ट करने का प्रयत्न करता रहता। वह इस बात की चिन्ता में रहता कि टाम के किसी भी काम में कहीं भी कोई त्रुटि मिले, तो उसे धर दबोचे। पर टाम ऐसा अवसर देता ही न था। इससे वह और अधिक खीझ उठता, और जी मसोस कर रह जाता। एक दिन उसे एक बहाना मिल गया। उसने टाम को आदेश दिया कि वह उसकी एक दासी को कोड़े लगावे। टाम जानता था कि उस दासी पर जो अभियोग लगाया जा रहा है वह झूठा है, इसलिये उसने वह नीच काम करने से स्पष्ट अस्वीकार कर दिया। लेग्री के जीवन में यह पहला अवसर था कि एक दास ने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया। उसने क्रोध से उन्मत्त होकर टाम के गाल में घूंसा जमा दिया, और गरज कर बोला—"तुम्हारा इतना साहस!

एक काले जानवर की इतनी बड़ी गुस्ताख़ी कि वह मेरी आज्ञा न माने !"

टाम ने कहा—"इस आज्ञा का पालन करने की अपेक्षा मैं मरना पसन्द करूँगा।"

"आया कहीं का महात्मा बनकर! कुत्ता कहीं का! कहता है कि मैंने बाइबिल पढ़ी है! क्या बाइबिल में यह नहीं लिखा है कि 'नौकरो, अपने मालिकों का कहना मानो'? क्या मैं तुम्हारा मालिक नहीं हूँ? क्या मैंने तुम्हें ख़रीदने के लिये बारह सौ डालर नहीं चुकाए हैं? क्या तुम शरीर से और आत्मा से मेरे अधीन नहीं हो?"

"नहीं, मालिक लेग्री, यह बात सत्य नहीं है,"—टाम ने शान्त भाव से कहा, यद्यपि उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी, और गाल से रक्त टपक रहा था—"मेरे शरीर पर आपका अधिकार हो सकता है, पर मेरी आत्मा पर आपका कोई अधिकार नहीं है। मेरी आत्मा को उस महाप्रभु ने मोल ले लिया है, जो उसकी रक्षा करने की योग्यता रखता है, आप मेरे शरीर को जितना चाहें पीड़ित कर सकते हैं, पर मेरी आत्मा को आप छू तक नहीं सकते।"

पापात्मा लेग्री जितना ही ज़ालिम था, उतना ही कायर और अन्धविश्वासी भी था। टाम की आत्मविश्वासपूर्ण बात सुनकर उसके मन में अपने घोर पाप कर्मों की स्मृति उमड़ पड़ने से उसके हृदय में एक प्रकार के अज्ञात भय का सञ्चार होने लगा। वह अपने जीवन में कितने ही व्यक्तियों की हत्या कर चुका था, और कितनी महिलाओं पर बलात्कार कर चुका था। ये सब भयंकर दुष्कर्म उसने उसी मकान में किए थे, जिसमें वह रहता था। टाम ने जब आत्मा की अक्षयता की बात कही, तो उसके मन में यद्यपि ज्ञान की भावना उत्पन्न नहीं हुई, तथापि इस कल्पना से

वह भयभीत हो उठा कि अपने जिन दासों तथा दासियों पर अत्याचार करके उसने उनकी हत्या की है, उनकी प्रेतात्माएँ जग कर कहीं उसे चारों ओर से घेर न लें।

इस प्रकार के भय की भावना उसके मन में उत्तरोत्तर बढ़ती चली गई। उसकी इस मनोवृत्ति से लाभ उठाकर 'कैसी' नाम की एक चतुर दासी ने इम्मेलीन नाम की एक सुन्दरी वर्णसंकर स्त्री के सहयोग से उसे आधी रात के समय डराना आरंभ कर दिया। कभी वे दोनों स्त्रियाँ प्रेतात्माओं का-सा भयंकर रूप धारण करके रात के सन्नाटे में लेग्री के सामने प्रकट होकर उसे भयभीत करतीं, कभी विकट शब्द करके उसे आतंकित कर देतीं। उन्होंने लेग्री को तथा उसके नौकर-चाकरों को यह विश्वास दिला दिया कि वे लेग्री के मकान से भागकर चली गई हैं। कुछ दूर तक वे सचमुच भागीं, पर जो लोग उन्हें पकड़ने के लिये उनका पीछा करने दौड़े थे, उनकी आँखों में धूल झोंककर वे अज्ञात रूप से फिर लेग्री के मकान में वापस चली आईं, और उस बहुत बड़े पुराने मकान के भीतर ही एक गुप्त कोठरी में रहकर नित्य रात में लेग्री को प्रेतात्माओं के रूप में डराने का क्रम उन्होंने जारी रखा।

लेग्री स्वयं उन स्त्रियों की खोज में निकला और अपने साथ बहुत से दासों और शिकारी कुत्तों को लेकर उसने सब दलदल और जंगल छान डाले। जब कोई फल न हुआ, तो वह अन्त में टाम के पीछे पड़ा। उसे विश्वास हो गया कि टाम निश्चय ही उन दो सुन्दरी दासियों का पता जानता है। उसने भयंकर क्रोध से गरजते हुए कहा—"काले कुत्ते, शीघ्र बता कि वे दोनों लड़कियाँ कहाँ हैं, नहीं तो मैं तुझे जान से मार डालूंगा।"

"मालिक लेग्री, आप शौक़ से मुझे मार डालें। मैं इस सम्बन्ध में आपको कुछ नहीं बता सकता।"

"सावधान! यह झूठ बात कहने का दुस्साहस मत कर कि तू उन लड़कियों के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता! बुड्ढे काले ईसाई!" यह कह कर लेग्री ने उस पर भयंकर रूप से प्रहार किया।

टाम ने शान्त भाव से उत्तर दिया—"मैं अवश्य जानता हूँ कि वे दोनों लड़कियाँ कहाँ हैं, पर मैं बताऊँगा नहीं। बताने की अपेक्षा मुझे मरना स्वीकार है।"

"सुनो टाम, इस बार मैं पक्का इरादा कर चुका हूँ कि या तो तुम्हें हार मानने के लिये बाध्य करूँगा या जान से मार डालूँगा। जब तक तुम मेरी बात नहीं मानोगे. तब तक मैं तुम्हारे शरीर के रक्त की एक-एक बूंद गिनता चला जाऊँगा।"

टाम ने कहा—"मालिक, यदि आप बीमार होते. या किसी कष्ट में होते, या मरने की हालत में होते, तो मैं अपने हृदय का रक्त बाहर निकाल कर आपकी सेवा में अर्पित करने के लिये तैयार हो जाता; और यदि मैं अपने शरीर का समस्त रक्त देकर आपकी आत्मा का उद्धार करने में समर्थ होता, तो मैं प्रसन्नतापूर्वक ऐसा करता,—जिस प्रकार प्रभु ईसा ने मुझ जैसे पापियों के लिये अपना रक्त दिया था। पर बात ऐसी नहीं है। इसलिये आपका जैसा जी चाहे करें। मेरे सब कष्टों का अन्त शीघ्र ही हो जायगा; पर यदि आप अपने किए हुए कर्मों के लिये पश्चाताप नहीं करेंगे, तो आपके कष्टों का अन्त न रहेगा।"

टाम के आत्मविश्वासपूर्ण शब्दों को सुनकर लेग्री कुछ समय तक स्तब्ध होकर देखता रह गया। पर शीघ्र ही उसकी दानवी प्रकृति फिर से जाग पड़ी। क्रोध से उन्मत्त होकर उसने टाम को पछाड़कर नीचे गिरा दिया और इसके बाद अपने दासों को आज्ञा दी कि कोड़ों की मार से उसके चिथड़े-चिथड़े उड़ा दिए जावें।

दो दिन बाद टाम के पुराने मालिक का लड़का जार्ज शेल्बी अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उसे मुक्त कराने के उद्देश्य से आया। पर कोड़ों की मार से टाम की यह दशा हो चुकी थी कि उसके जीने की कोई आशा नहीं की जा सकती थी। जार्ज उसकी वह दशा देखकर रो पड़ा और रोते हुए बोला—"मैं तुम्हें अपने साथ घर ले चलने के लिये आया हूँ।"

मरते हुए टाम ने जार्ज को पहचान लिया और कहा—"तुम आ गए, मालिक! तुम मुझे नहीं भूले! नहीं भूले! अब मैं सन्तोष-पूर्वक मर सकूँगा!"

इतने में लेग्री वहाँ आ पहुँचा। जार्ज ने उसे देखकर कहा—"दुष्ट पापात्मा! शैतान एक दिन अवश्य तुम्हारे घोर नीच कृत्यों का बदला तुमसे चुकावेगा।"

टाम ने कहा—"ऐसा न कहो, मालिक! ऐसी भावना मन में कभी न लाना। उसने मुझे कोई हानि नहीं पहुँचाई है, बल्कि मेरे लिये स्वर्ग का द्वार मुक्त कर दिया है!"

यह कहने के कुछ ही समय बाद उसमें बोलने की शक्ति न रही, और उसने सदा के लिये आँखें मूंद लीं। मरने के बाद उसके मुख में जीवन-विजय के दीप्त प्रकाश की महिमा झलक रही थी।

जार्ज शेल्बी अपने मृत मित्र के पास घुटने टेककर बोला—"भगवान्! तुम साक्षी रहो! इस क्षण से मैं यह व्रत ग्रहण करता हूँ कि इस देश से दास-प्रथा के कलंक को मिटाने के लिये प्राण-पण से उद्योग करता रहूँगा।"

जार्ज ईलियट

जार्ज इलियट का असली नाम मेरियन ईवान्स था। उसके ज़माने में स्त्रियों की रचनाओं को लोग विशेष आदर की दृष्टि से नहीं देखते थे, इसलिये उसने अपनी पुस्तकों में अपना असली नाम न देकर जार्ज ईलियट के नाम से अपने को प्रचारित किया था। तब से उसी छद्मनाम से वह साहित्य-संसार में परिचित है। उसका जन्म सन् १८१६ में इंगलैण्ड के अन्तर्गत वार्विकशायर नामक स्थान में हुआ। अपने जीवन के प्रथम २१ वर्ष उसने देहात में बिताए, और अपने घर पर ही शिक्षा प्राप्त की—किसी स्कूल अथवा कालेज से उसका कोई सम्बन्ध न रहा। धार्मिक विषयों की ओर उसका विशेष झुकाव रहता था, और धर्म तथा दर्शन-सम्बन्धी पुस्तकों के अध्ययन में उसका जी बहुत लगता था।

मिस ईवान्स को बीस वर्ष भी पूरे नहीं हो पाए थे कि उसकी माँ की मृत्यु हो गई। तब से घर के सब काम-धन्धों का भार उसी के ऊपर आ पड़ा। सन् १८४१ में ईवान्स परिवार अपने पुराने निवास-स्थान को छोड़कर कावेन्ट्री नामक स्थान में जा कर बस गया। वहाँ मिस ईवान्स (जार्ज ईलियट) कुछ ऐसे व्यक्तियों के संसर्ग में आई, जो साहित्य-सम्बन्धी विषयों से प्रेम रखते थे। तब से उसका झुकाव भी उस ओर होने लगा। सन् १८५१ में वह 'वेस्टमिन्सटर-रिव्यू' की सहायक

सम्पादिका नियुक्त हो गई। उक्त पत्र में उसने विभिन्न विषयों पर लेख लिखे। उसी सिलसिले में उसका परिचय कुछ विशिष्ट लेखकों से हो गया, जिनमें हर्बर्ट स्पेन्सर, कार्लाइल, फ्रेन्सिस न्यूमैन और जार्ज हेनरी लेविस प्रधान थे। हेनरी लेविस से उसकी विशेष घनिष्ठता हो गई। दोनों के प्रेम-सम्बन्ध ने जो रूप धारण कर लिया उस पर जनता में तरह-तरह की टीका-टिप्पणियाँ होने लगीं। यद्यपि दोनों ने विधिपूर्वक विवाह नहीं किया, तथापि मिस ईवान्स उसे विवाह ही बताती थी।

सन् १८५६ में उसने प्रथम वार उपन्यास-रचना की ओर ध्यान दिया। तब से वह बराबर उपन्यास पर उपन्यास लिखती चली गई। 'ऐडम बीड' उसकी सर्वश्रेष्ठ कृति समझी जाती है। उसके अतिरिक्त 'साइलस मार्नर', 'मिल आन दि फ्लास', 'फेलिक्स हाल्ट' आदि रचनाओं में भी उसने अपनी कलात्मिका प्रतिभा का सुन्दर परिचय दिया है।

ऐडम बीड

अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्ष की बात है। हेस्लोप अत्यन्त शान्त, एकान्त और सुखकर स्थान था। वह नेपोलियन के युद्धों के कोलाहल से परे था। उस गाँव के पुरुष फ़सल और लगान के विषय में बातें करते थे, और स्त्रियाँ डीना मारिस नाम की एक सुन्दरी धर्म-प्रचारिका के विषय में वार्तालाप करने के लिये बहुत उत्सुक रहा करती थीं।

डीना मारिस जैसी सहृदय थी उसका व्यक्तित्व भी वैसा ही आकर्षक था, और स्त्री-पुरुष सभी उसके धर्मोपदेशों को अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक सुना करते थे। ऐडम बीड नाम का बढ़ई भी उसके धर्मोपदेशों को दो-एक बार सुन चुका था, और उसे देखकर प्रसन्न भी हुआ था। पर उसकी बातों का कोई विशेष प्रभाव उसपर नहीं पड़ा था। कारण यह था कि वह हेटी सोरेल नाम की एक लड़की के प्रेम का शिकार बन चुका था, और उस लड़की का प्रेम पाने के अतिरिक्त और किसी भी विषय में जी लगाने का धैर्य उसमें नहीं रह गया था।

पर हेटी ऐडम के प्रति एकदम उदासीन थी। हेस्लोप के अन्तर्गत डार्नाथार्न इस्टेट के उत्तराधिकारी कैप्टेन आर्थर से उसकी घनिष्ठता थी, और वह उसी को चाहती थी। कैप्टेन आर्थर भी हेटी के सुन्दर, सुकोमल रूप पर मुग्ध था। इसमें सन्देह नहीं कि हेटी से विवाह करने का विचार उसके मन में कभी उत्पन्न नहीं हुआ था। वह डार्नीथार्न इस्टेट का उत्तराधिकारी था, और हेटी एक डेयरी में काम करने वाली साधारण समाज की लड़की

थी। पर हेटी के रूप रंग और हाव-भाव ने उसे विचलित कर दिया था।

एक दिन संध्या के समय ऐडम चला जा रहा था। दोनों ओर पेड़ों की सुन्दर क़तारें लगी हुई थीं। अच्छी और मज़बूत लकड़ी वाले पेड़ों को देखकर ऐडम, बढ़ई होने के नाते, बहुत प्रसन्न होता था। इस बार भी वह उन बड़े-बड़े और मज़बूत पेड़ों को देखता हुआ धीमी चाल से चल रहा था। अकस्मात्, सामने प्राय: बीस पगों की दूरी पर उसने एक ऐसा दृश्य देखा जिसे वह परवर्ती जीवन में फिर कभी भूल नहीं सका। वहाँ एक युवक और युवती एक दूसरे को गाढ़ आलिंगन किए हुए खड़े थे। ऐडम को देखते ही दोनों चौंक पड़े। लड़की भाग कर वहाँ से चली गई, और उसका साथी, आर्थर डानीथार्न झेंपते हुए, धीरे से ऐडम की ओर आगे बढ़ा। उसे विश्वास था कि चूँकि ऐडम एक समझदार और सयाना आदमी है, इसलिये वह इस मामले को लेकर हल्ला नहीं मचावेगा। उसे पता नहीं था कि ऐडम भी हेटी से प्रेम करता है, और उसका प्रेम उसकी अपेक्षा कई गुना अधिक तीव्र है।

ऐडम के पास पहुँचकर आर्थर बोला—"क्यों ऐडम, तुम क्या इन सुन्दर पेड़ों को देख रहे थे? हेटी सोरेल भी इधर से चली जा रही थी. मैं जब अपने पुराने मकान की ओर टहलने जा रहा था, तो रास्ते में वह मुझे मिल गई। मैंने उसे यहाँ तक पहुँचा दिया, और पुरस्कार के बतौर उससे एक चुम्बन माँगा। गुड नाइट! अब मैं जाता हूँ।" यह कहकर वह चलने लगा।

ऐडम मारे क्रोध के काँप रहा था। वह अपने स्थान से हटा नहीं। उसे डर था कि वहाँ से हटते ही वह क्रोध के आवेश में कहीं आर्थर को बाघ की तरह धर न दबोचे। उसने वहीं खड़े रहकर दृढ़ स्वर में कहा—"ज़रा ठहरो!"

"क्यों, क्या बात है?" आर्थर खीझकर खड़ा हो गया।

"मैं स्पष्ट शब्दों में तुमसे यह कह देना चाहता हूँ कि आज तक हम लोग तुम्हें एक भला आदमी समझकर बड़े भ्रम में पड़े हुए थे। तुम एक स्वार्थी बदमाश के सिवा और कुछ नहीं हो"

आर्थर का मिजाज भी गरम होने लगा। उसने बड़ी कठिनाई से अपने को संभालते हुए कहा—"देखो ऐडम, मैं मानता हूँ कि हेटी सोरेल से चुम्बन माँगकर मैंने कुछ ज्यादती अवश्य की है। पर चूँकि तुम गम्भीर प्रकृति के व्यक्ति हो, इसलिये हम जैसे व्यक्तियों के प्रलोभनों की बात समझ नहीं सकते। कुछ भी हो, इस विषय को अधिक तूल देना व्यर्थ है। शीघ्र ही इस बात को हम सब लोग भूल जावेंगे।"

ऐडम अत्यन्त उत्तेजित होकर बोला—"नहीं, मैं ईश्वर को साक्षी मानकर कहता हूँ कि यह बात जल्दी नहीं भूली जायगी। कारण यह है कि तुम मेरे और हेटी के बीच आ धमके हो। मैं अब समझा कि केवल तुम्हारे कारण वह मेरे प्रति विमुख है। तुमने मेरे जीवन का सुख मुझसे छीन लिया है, जब कि मैं तुम्हें अपना सबसे बड़ा मित्र समझता था। तुम कायर और बदमाश हो, और मैं हृदय से तुमसे घृणा करने लगा हूँ।"

आर्थर एक साधारण बढ़ई के मुँह से इस प्रकार का अपमान सहन न कर सका। उसका मुख तमतमा उठा। उसने एक ऐसा घूंसा तानकर मारा कि ऐडम धक्के खाकर पीछे को गिरते गिरते बचा। पलटे में ऐडम ने उसे पकड़कर धर दबोचा। आर्थर को ऐडम के पुट्ठों के कठिन बल का पता नहीं था। ऐडम ने उसे ऐसी बुरी तरह से पीटा कि वह अचेत होकर जमीन पर गिर पड़ा। ऐडम ने घुटने टेककर उसके मुख का भाव देखा, तो उसे ऐसा जान पड़ा जैसे वह साक्षात् मृत्यु के दर्शन कर रहा हो।

पर सौभाग्य से आर्थर धीरे-धीरे होश में आ गया। ऐडम उसे उठाकर ले गया। पास ही एक छोटी सी कुटिया के भीतर एक

होकर अपने प्रेमिक से मिलने के लिये वहाँ एकाकिनी चली जा रही थी।

इधर आर्थर सुख और सन्तोषपूर्वक अपना जीवन बिता रहा था। हेटी से बिछुड़ने के कारण उसके मन में प्रारंभ में कष्ट अवश्य हुआ था। पर जब वह फिर से अपने सैन्य-समाज में जा पहुँचा, तो वह धीरे-धीरे उस कष्ट को एकदम भूल गया। शीघ्र ही उसकी बदली आयर्लैण्ड को हो गई। वहाँ उसे यह संवाद मिला कि उसके दादा की मृत्यु हो जाने से अब वह 'इस्टेट' का मालिक बन गया है। वह अत्यन्त हर्षित हो उठा और शीघ्र ही अपने घर को लौट चला। घर लौटते हुए यह कल्पना उसके मन में ज़ोर मार रही थी कि ज़मींदारी का मालिक बनकर, असामियों की श्रद्धा और सम्मान प्राप्त करके, किसी सुन्दरी और कुलीन महिला से विवाह करके वह परम सुख और शान्ति से रहेगा।

घर पहुँचते ही उसने देखा कि बहुत सी चिट्ठियों का ढेर लगा हुआ है। उसने एक पत्र खोलकर पढ़ा, और पढ़ते ही उसके सुख की सारी कल्पनाएँ पल में कूच कर गईं। उस पत्र में लिखा था—"हेटी सोरेल अपने बच्चे की हत्या करने के अपराध में जेलख़ाने में क़ैद है।"

आर्थर उसी दम पागलों की तरह घर से बाहर निकला, और एक घोड़े पर बैठकर उसे तेज़ रफ़्तार से दौड़ाता हुआ ले चला।

उसी दिन संध्या के समय गाँव के जेलख़ाने के दरवाज़े पर एक स्त्री आ पहुँची। उसके सुन्दर मुख में स्निग्ध शान्तिमय संयत भाव झलक रहा था। उसने जब हेटी की कालकोठरी में जाकर उससे मिलने की आज्ञा माँगी, तो जेलर उसके निवेदन की अवज्ञा

न कर सका। हेटी मूर्तिमान शोक की तरह एक खटिया पर अर्द्धचेतन अवस्था में पड़ी हुई थी।

नवागता महिला ने कहा—"हेटी, तुम्हारे सामने डीना खड़ी है।"

हेटी धीरे, बहुत धीरे से उठ खड़ी हुई और डीना के गले से लिपट गई। उसने प्रायः रोते हुए कहा—"डीना, तुम अब मुझे छोड़कर न जाओगी? बोलो, बोलो डीना!"

डीना फुसफुसाते हुए बोली—"नहीं हेटी! मैं अब अन्त तक तुम्हारे साथ रहूँगी। पर हेटी, इस कालकोठरी में तुम्हारे और मेरे सिवा एक व्यक्ति और है।"

हेटी ने अत्यन्त घबराहट के साथ पूछा—"कौन?"

"उस व्यक्ति के आगे संसार की कोई बात छिपी नहीं रह सकती। वह तुम्हारे पाप-कर्म के अवसर पर तथा तुम्हारे दुःख के सभी क्षणों में बराबर तुम्हारे साथ था। हेटी, हम चाहे मरें या जीवें, भगवान् की सर्वव्यापकता सब समय, प्रत्येक दशा में हमें घेरे रहती है, इसलिये तुम अपने पाप को उस परम पिता के आगे स्वीकार करो। आओ, हम दोनों घुटने टेककर प्रार्थना करें। वह यहीं विराजमान है।"

डीना की बात मानकर हेटी ने उस सुनसान और अंधेरी कालकोठरी में अपने पाप का सारा क़िस्सा कह सुनाया, यद्यपि अदालत में वह पत्थर मूर्ति की तरह निश्चल भाव से खड़ी रही थी, और एक शब्द भी उसने मुँह से नहीं निकाला था।

उसने कहा—"डीना, मैंने यह घोर पाशविक दुष्कर्म इसलिये किया कि मेरी दुर्दशा चरम सीमा को पहुँच चुकी थी। जब बच्चा पैदा हुआ तो मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया कि कहाँ जाऊँ और उसे कहाँ ले जाऊँ। मैंने हताश होकर आत्महत्या करने की

चेष्टा की, पर मुझे इसमें सफलता न मिली। मैं आर्थर को ढूँढ़ने के लिये विन्डसर गई। मुझे विश्वास था कि आर्थर जब यह जान लेगा कि मेरे पेट के बच्चे का बाप वही है, तो वह निश्चय ही फिर मुझे न छोड़ेगा। पर मेरे दुर्भाग्य से आर्थर वहाँ भी मुझे न मिला। वह वहाँ से आयर्लैंण्ड चला गया था। मेरी घबराहट और दुश्चिन्ता की सीमा नहीं थी। मुझे लौटकर घर जाने का साहस न हुआ। इसके बाद एक दिन बच्चा पैदा हो गया। डीना, तुम मेरी दयनीय परिस्थिति की कल्पना भली भाँति कर सकती हो! हाँ, मैंने उस निरपराध बच्चे की हत्या की! मैंने जंगल में जाकर उसे जीवित अवस्था में जमीन में गाड़ दिया। बच्चा रोने लगा। रात भर उसके उस विदीर्ण क्रन्दन का मर्मभेदी शब्द मेरे कानों के भीतर से गूंजता हुआ मेरे हृदय को चीरता रहा। इसके बाद मैं वहाँ से लौट चली। गढ़े का मुँह मैंने इस आशा से खुला छोड़ दिया था कि कोई दयालु व्यक्ति उसे उस अवस्था में पड़ा हुआ देखकर उसकी रक्षा का भार अपने ऊपर ले लें। डीना, यही मेरे दुष्कर्म की कहानी है। क्या तुम्हारा यह विश्वास है कि भगवान मेरी इस स्वीकारोक्ति को सुनकर मुझे क्षमा कर देंगे, और बच्चे के क्रन्दन का जो मर्म-विदारक शब्द मेरे कानों में अभी तक गूंज रहा है उससे मैं मुक्ति पा जाऊँगी, जिस गढ़े के भीतर मैंने बच्चे को गाड़ा था, उसका अस्तित्व क्या लुप्त हो जायगा?"

डीना ने एक आह भरते हुए कहा—"आओ, हम दोनों उस करुणामय से तुम्हारे इस पाप को धो डालने के लिये प्रार्थना करें।"

दोनों सच्चे हृदय से प्रार्थना करने लगीं। उनकी वह प्रार्थना भगवान ने जैसे सुन ली। दो दिन बाद, जब कि हेटी को मृत्युदण्ड दिए जाने की तैयारी हो रही थी, आर्थर डानीथार्न के बड़े कड़े प्रयत्नों के कारण हेटी के प्राणों की रक्षा हो गई। उसे मृत्युदण्ड

से मुक्त कर दिया गया, पर आजीवन निर्वासन की सज़ा मिल गई।

डीना फिर से स्नोफील्ड में जाकर धर्मोपदेश देने लगी। आर्थर डानीथार्न अपने को हेटी के पाप का भागी समझ कर दुःख, ग्लानि और लज्जा से व्याकुल हो उठा, और फिर से सेना में भरती हो गया। ऐडम बीड का यह हाल था कि संसार के प्रति उदासीन होकर निर्विकार भाव से वह बढ़ई का काम करता चला गया। उसे ऐसा अनुभव होने लगा था कि जीवन में सुख का एक कण भी शेष नहीं रहा। सारा जीवन उसे भारस्वरूप जान पड़ने लगा। एक दिन उसकी माँ ने डीना की चर्चा चलाकर उसके मृत मन में सहसा एक बिजली की स्फूर्ति-सी उत्पन्न कर दी। वह शीघ्र ही डीना की खोज में निकल पड़ा।

—:०:—

ड्यूमा

विश्व-विख्यात उपन्यासकार आलेग्ज़ांद्र ड्यूमा एक फ्रेञ्च मार्क्विस तथा एक हबशन का पोता था। उसका पिता एक सैनिक था। जब फ्रान्स की राज्यक्रान्ति मची, तो उसके पिता ने युद्ध में भाग लिया था। अपनी सैनिक योग्यता का उसने ऐसा परिचय दिया कि एक पद से दूसरे पद में उन्नति करते हुए वह अन्त में नेपोलियन द्वारा प्रधान सेनाध्यक्ष के पद पर नियुक्त कर दिया गया। पर बाद में किसी कारण से वह नेपोलियन से झगड़ पड़ा। फल यह हुआ कि जब उसकी मृत्यु हुई, तो अपनी विधवा स्त्री और दो बच्चों के लिये वह केवल तीस एकड़ भूमि छोड़ गया।

आलेग्ज़ांद्र ड्यूमा का जन्म २४ जुलाई, १८०२ को फ्रान्स के अन्तर्गत स्वासों नामक स्थान के पास हुआ। चूंकि उसकी माँ की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, इसलिये छुटपन में उसे जीवन की विशेष सुविधाएँ प्राप्त न हुईं। फिर भी एक दयाशील पादड़ी ने उसकी शिक्षा-दीक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया। बाद में उसने क़ानून की शिक्षा प्राप्त की, पर साहित्य की ओर उसका झुकाव अधिक होने से वह पैरिस चला गया। वहाँ उसने प्रेम और 'रोमान्स' पूर्ण नाटक लिखकर अपने साहित्यिक जीवन का श्रीगणेश किया।

कई वर्षों तक उसने नाटक-रचना का कार्य ज़ारी रखा, और बीच-बीच में कहानियाँ तथा उपन्यास भी लिखता रहा। सन् १८४४ में उसने 'ले त्रवा मुस्कातियर' नामक उपन्यास लिखा। उसके बाद वह अत्यन्त शीघ्र गति में उपन्यास पर उपन्यास लिखता चला गया। उसने इतना अधिक लिखा कि उसकी पूर्ण रचनाएँ फ्रेञ्च भाषा में २२७ भागों में समाप्त हुई हैं! उसने तृतीय नेपोलियन से कहा था कि उसने बारह सौ पुस्तकें लिखी हैं!

पर एक मनुष्य अकेला अपने जीवन-काल में इतनी अधिक पुस्तकें लिखे, यह बात एक प्रकार से असंभव सी लगती है। खोजियों का कहना है कि ड्यूमा ने बहुत-से लेखकों को नियुक्त कर रखा था, और जो पुस्तकें उसके नाम से छपी हैं, उनमें से बहुत सी ऐसी रही हैं जो दूसरे व्यक्तियों द्वारा लिखी गई हैं। ड्यूमा इस बात को छिपाता नहीं था। एक बार उसके एक प्रशंसक ने उसके एक उपन्यास में एक भूगोल-संबंधी भूल निर्देशित की। ड्यूमा ने पूछा—"कौन-से उपन्यास की बात तुम कह रहे हो?" जब उपन्यास का नाम बताया गया, तो ड्यूमा बोल उठा—"ओह! मैं समझा! मैंने अभी तक उस उपन्यास को पढ़ा तक नहीं है। किसी ने उसे मेरे कहने से लिख दिया था। ठहरो, मैं बताता हूँ कि किसने उसे लिखा है—हाँ, याद आ गया--दुष्ट ओगुस्त ने उसे लिखा है! मैं इस ग़लती के लिये उसके कान ऐठूँगा!"

इस ओगुस्त का पूरा नाम ओगुस्त माके था। यह कहा जाता है कि ड्यूमा उसे उपन्यास का प्लाट बना देता, और वह उस प्लाट को उपन्यास का रूप दे देता। पर लेखक के नाम के स्थान पर ड्यूमा का ही नाम

रहता। इसी तरह और भी कितने ही व्यक्तियों से वह अपने नाम से उपन्यास लिखाता रहता। पर जिन उपन्यासों से उसने अमर कीर्त्ति प्राप्त की है उनकी रचना स्वयं उसी ने की है। 'कौंत द मांत क्रिस्तो' नामक संसार-प्रसिद्ध उपन्यास उसकी कीर्ति का उज्ज्वल स्तम्भ है। यह उसकी निजी रचना है।

यद्यपि उसने अपनी पुस्तकों से बहुत रुपया कमाया, पर शेष रुपया उसके पास कुछ भी बचा न रहा। वह बड़ा उड़ाऊ था। सन् १८४० में उसने ईदा फेरिये नाम की एक अभिनेत्री से विवाह किया था पर वे दोनों अधिक समय तक साथ नहीं रह पाए। सन् १८६८ में जब वह ऋण के भार से बहुत दब गया तो उसकी लड़की ने उसकी सहायता की। और दो वर्ष बाद, ५ दिसम्बर, १८७० को, अपने लड़के के घर में उसकी मृत्यु हुई। उसका यह लड़का भी प्रसिद्ध उपन्यासकारी बन गया। इसलिये भ्रम-निवारण के उद्देश्य से एक को 'बाप ड्यूमा' (ड्यूमा-पेयर) और दूसरे को 'बेटा ड्यूमा' (ड्यूमा-फिल) कहा जाता है।

मान्ट क्रिस्टो का कौन्ट

स्मर्ना से 'फाराओं' नामक जो जहाज़ १८ फ़रवरी, १८१५ के दिन मार्सेल पहुँचा, उसका परिचालक एद्मां दाँते नामक एक १९ वर्ष का लड़का था। उस जहाज़ का कप्तान यात्रा के बीच में ही मृत्यु को प्राप्त हो चुका था। चूँकि एद्मां को सब मल्लाह स्नेह की दृष्टि से देखते थे, और वह सब प्रकार से योग्य भी था, इसलिये उसी को उन लोगों ने अपना नया कप्तान चुना। अकस्मात्, अप्रत्याशित रूप से उच्च पद को प्राप्त होने पर एद्मां की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। सारी यात्रा में वह अपने निर्धन, दुःखी और स्नेही पिता तथा अपनी प्रेमपात्री मर्सेद की बात सोचता रहा। वह यह सोच-सोचकर पुलकित हो रहा था कि अब वह अपने पिता की आर्थिक सहायता भलीभाँति कर सकेगा, और घर पहुँचते ही मर्सेद से विवाह कर लेगा।

मार्सेल पहुँचते ही उसके विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। विवाह के उपलक्ष में एक विराट् भोज हुआ। एद्मां के आनन्द की सीमा नहीं थी। पर ज्योंही वर और बधू भोज समाप्त होने पर विवाह के लिये गिर्जे में जाने की तैयारी करने लगे, त्योंही कुछ पुलिस कर्मचारियों ने आकर एद्मां को गिरफ्तार कर लिया। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसकी कुछ समझ ही में न आया कि उसने क्या अपराध किया है। उसके सभी मित्र उसकी सच्चरित्रता से भली भाँति परिचित थे; इसलिये वे भी उसे गिरफ्तार होते देख स्तम्भित रह गए।

बात असल में यह हुई कि उसने बिना किसी अपराध के, अनजान में अपने दो भयंकर शत्रु उत्पन्न कर दिए थे। उनमें से एक

का नाम था दांगलार, जो उसी जहाज़ में नौकर था जिसके कप्तान का पद एद्मां को प्राप्त हुआ था। दांगलार स्वयं कप्तान बनकर व्यापारियों से घूस खाने की इच्छा रखता था। इसलिये एड्मां से वह जलने लगा था। उसका दूसरा शत्रु था फर्नां, जो उसकी परिणीता—मर्सेड्—से स्वयं विवाह करने के लिये उत्सुक था। दोनों व्यक्तियों ने मिल कर यह षड्यन्त्र रचा कि किसी उपाय से विवाह होने के पहले ही एड्मां को गिरफ्तार करवा लिया जाय। एद्मां के दुर्भाग्य से उस षड्यन्त्र को सफल बनाने का एक अच्छा साधन उन दुष्टों को मिल गया।

'फाराओं' के कप्तान ने मरने के पहले एड्मां से यह आग्रह किया था कि वह रास्ते में एल्बा नामक द्वीप में, जहाँ उस समय नेपोलियन निर्वासित था, जाकर उसके एक विशेष सेनाध्यक्ष से अवश्य मिले। एड्मां उक्त द्वीप के किनारे जहाज को रोक कर अकेले उक्त सेनाध्यक्ष से मिला था। सेनाध्यक्ष ने एक विशेष व्यक्ति के नाम एक गुप्त पत्र लिख कर उसे लाख-मुहर से बन्द करके एद्मां के हाथ में दिया था, ताकि वह उस पत्र को उस विशेष व्यक्ति के पास पहुँचा दे। दांगलार को यह बात मालूम थी।

उन दिनों फ्रान्स की राजनीतिक अवस्था अत्यन्त अस्त-व्यस्त हो रही थी। नपोलियन एल्बा में निर्वासित किया गया था और उसके स्थान में अठारहवाँ लुई अँगरेज़ों की सहायता से फ्रान्स का शासक बना हुआ था। पर लुई के स्वपक्षियों के मन में यह अंदेशा बना हुआ था कि न मालूम कब नेपोलियन गुप्त रूप से फ्रान्स में आकर फिर से शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ले। इसलिये नेपोलियन के हिमायतियों के विरुद्ध बड़ा कड़ा क़ानून जारी कर दिया गया था। उस धाँधागर्दी के ज़माने में किसी व्यक्ति को जेल की हवा खिलाने के लिये अधिकारियों के कानों में यह बात भर देना काफ़ी था कि अमुक व्यक्ति नेपोलियन के दल का है।

विपत्ति में फँसना पड़ेगा। इसलिये उसने एद्मां के सामने उस पत्र को जलाते हुए उससे कहा कि वह उसकी चर्चा किसी से न करे।

एद्मां की निरपराधिता के सम्बन्ध में ध्रुव निश्चित होने पर भी विलफोर के लिये अब यह अत्यन्त आवश्यक हो उठा कि वह एद्मां को जेल में ठूंसे, क्योंकि उस गुप्त पत्र के सम्बन्ध में यदि विलफोर के अतिरिक्त कोई व्यक्ति जानकारी रखता था तो वह केवल एद्मां था। उसने सोचा कि एद्मां के क़ैद होने पर वह इस समाचार का उद्घाटन करके लाभ उठा सकेगा कि नेपोलियन फिर से फ्रान्स की राज्यगद्दी छीनने की चिन्ता में है।

इस प्रकार बिना किसी अपराध के तीन व्यक्तियों के नीच स्वार्थ का शिकार बन कर एद्मां दाँते को ठीक उस दिन अप्रत्याशित रूप से जेलखाने की काल कोठरी में बन्द होना पड़ा जिस दिन उसका विवाह होने वाला था।

नेपोलियन एल्बा के निर्वासन से गुप्त रूप से भागकर फ्रान्स में आया, और लुई को हटाकर फिर से सम्राट् बन बैठा। इतिहास-प्रसिद्ध सौ दिनों तक उसने फिर से उसी पिछली शान से राज्य किया, और अन्त में वाटरलू के विख्यात युद्ध में पराजित होकर सेन्ट हेलेना नामक द्वीप में अपने जीवन के अन्तिम छः वर्षों तक निर्वासित रहा, और अन्त में परलोक सिधार गया। संसार के इतिहास की इतनी महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी घटनाएँ घट गईं, पर एद्मां को अपनी काल कोठरी की चहारदीवारी के भीतर किसी बात की भी सूचना न मिल पाई।

बीच में सौ दिनों के लिये जब नेपोलियन का राज्य हुआ था, तो जिस जहाज़ का कप्तान एद्मां को बनाया गया था उसके मालिक मोशियो मारेल ने विलफोर से कहा कि वह एद्मां की मुक्ति के लिये ऊपर के अधिकारियों को एक आवेदन-पत्र भेजे।

अब अधिक समय तक स्थायी नहीं रह सकता, और फिर से अठारहवाँ लुई फ्रान्स की राजगद्दी पर आकर बैठेगा। इसलिये उसने मारेल के कहने पर आवेदन-पत्र अवश्य लिखा और उसमें नेपोलियन के प्रति एद्मां की अनन्य भक्ति का उल्लेख भी किया, पर उस पत्र को अधिकारियों के पास भेजने के बजाय टाउन-हाल के रेकर्डों के बीच छिपाकर रख दिया। जब लुई का राज्य फिर से स्थापित हो गया, तो विलफ़ोर ने उसी झूठे आवेदन-पत्र द्वारा यह प्रमाणित किया कि एद्मां लुई का कितना भयंकर विरोधी रहा है। फल यह हुआ कि एद्मां को 'शाटो द इफ़' नामक एक निर्जन चट्टान के ऊपर स्थित क़िले की एक कालकोठरी में आजीवन निर्वासन का दण्ड भोगने के लिये बाध्य किया गया।

उस जनहीन स्थान की उस भयंकर काल कोठरी में नरक-निर्वासन करते हुए एद्मां को प्रायः छः वर्ष बीत गए। वह रात-दिन बेचैनी से छटपटाता रहता; कभी वह अपनी प्रेमपात्री मर्सेद की चिन्ता करता, जिसे वह विवाह के ऐन मौक़े पर छोड़ आया था; कभी आत्महत्या की बात सोचता और कभी पागल होने के लक्षण प्रकट करता। अन्त में उसे कालकोठरी की चट्टान की दीवार के उस पार से निरन्तर खट-खट-खट का शब्द सुनाई दिया। कुछ दिनों तक वह शब्द लगातार कई घण्टों तक सुनाई देता रहा। एद्मां के मन के गहन अन्धकारमय लोक में आशा के प्रकाश की एक क्षीण रेखा-सी दिखाई देने लगी। उसने आत्महत्या का विचार छोड़ दिया, और कुछ दिनों से उसने जो आमरण उपवास का व्रत ले रखा था उसे भी भंग कर दिया।

चट्टान की दीवार के उस पार का शब्द दिन पर दिन निकट से निकटतर सुनाई देने लगा। अन्त में एक दिन वह शब्द उसकी कालकोठरी के फ़र्श तक आ पहुँचा। अकस्मात् नीचे से फ़र्श को खोदकर एक लम्बी दाढ़ीधारी विचित्र रूप-रंग का बुड्ढा बाहर

निकल आया। वह बुड्ढा इटालियन पादड़ी आब्बे फारिया था। उसे क़ैदखाने में दस वर्ष बीत चुके थे, और अन्त में उसने चट्टान को खोद-खोद कर अपनी मुक्ति के लिये एक सुरंग का मार्ग निकालने का मनुष्यातीत प्रयत्न किया था। पर उसके दुर्भाग्य से और एदमां दाँते के सौभाग्य से उस सुरंग का मुख क़िले के बाहर की ओर न होकर एदमां की कालकोठरी में जाकर खुला। इस प्रकार अप्रत्याशित रूप से दो भुक्तभोगियों में घनिष्ठ मित्रता हो गई। उस सुरंग के रास्ते से दोनों एक-दूसरे से मिलते रहते। जेल के अधिकारियों को इस सम्बन्ध में तनिक भी सन्देह नहीं हो पाया।

पादड़ी फारिया इटली के तत्कालीन छोटे-छोटे राष्ट्रों के एकीकरण आन्दोलन में प्रमुख भाग लेने के कारण गिरफ़्तार किया गया था। वह नाना शास्त्रों का प्रकाण्ड पण्डित था, और विज्ञान के विविध विषयों का आश्चर्यजनक ज्ञान रखता था। उसने एदमां को विज्ञान, गणित, इतिहास तथा संसार की विभिन्न भाषाओं की शिक्षा दी।

एदमां ने जब अपने क़ैद होने का सारा क़िस्सा पादड़ी फारिया के आगे कह सुनाया, तो उसी की बातों से पादड़ी ने यह प्रमाणित कर दिया कि दांगलार, फ़र्नां और विलफोर के सम्मिलित षड्यन्त्र से उसे जीवितावस्था में नरक-निर्वासन करना पड़ रहा है। एदमां को जब इस बात पर विश्वास हो गया, तो उन तीनों दुष्टों के प्रति घोर प्रतिहिंसा का भाव उसके भीतर जाग पड़ा, और वह अपनी मुक्ति के उपाय की चिन्ता करने लगा।

पहले ही कहा जा चुका है कि वह पादड़ी बड़ा आश्चर्यजनक व्यक्ति था। उसने एदमां को यह गुप्त सूचना दी कि मांत क्रिस्तो नामक एक जनहीन छोटे से पहाड़ी द्वीप में गुप्त धन का एक अक्षय कोष पड़ा हुआ है, जिसका पता फारिया के अतिरिक्त

बाद एक फटा, कटा और धुमैला प्राचीन हस्तलिखित पत्र प्राप्त किया था, जिसकी सहायता से उस गुप्त धन के ठीक स्थान का अनुमान उसने लगा लिया था।

वर्ष पर वर्ष बीतने चले गए, पर मुक्त होने का कोई उपाय काम नहीं आता था। एक उपाय में सफलता की कुछ आशा दिखाई देने लगी थी, पर पादड़ी फारिया के बीमार पड़ जाने से वह भी व्यर्थ गया। एदमां पादड़ी को छोड़कर जाना नहीं चाहता था।

एक दिन एदमां ने सुरंग के भीतर से किसी के कराहने का विकट शब्द सुना। वह अपने साथी की कालकोठरी में जा पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि पादड़ी मारे कष्ट के चिल्ला रहा है। रात भर एदमां उसके पास बैठकर उसकी सेवा करता रहा। प्रातःकाल होते ही पादड़ी ने प्राण त्याग दिए।

उसी दिन रात के समय एदमां पादड़ी की लाश चुपके से अपनी कालकोठरी में उठा लाया और उस लाश को उसने अपने बिस्तर पर लिटाकर अपने ओढ़ने की फटी-पुरानी गुदड़ियों से उसे ढक दिया, जिससे जेलर यह समझे कि एदमां सोया हुआ है। इसके बाद जिस बोरे के भीतर जेलर ने पादड़ी की लाश डाल दी थी, उसके भीतर वह स्वयं घुस गया। अपने साथ उसने पादड़ी का एक चाक़ू लेकर रख लिया था। इसके बाद उसने उस बोरे को अपने हाथ से चारों ओर से सी दिया।

कुछ समय बाद जेलर की आज्ञा से दो आदमियों ने बोरे के भीतर बन्द पड़ी हुई उस 'लाश' के पाँवों में लोहे का एक बहुत वज़नदार गोला बाँधकर चट्टान की चोटी से नीचे समुद्र के पानी में उसे गिरा दिया। एदमाँ नीचे गिरते ही मारे भय के चिल्ला उठा। लोहे के गोले के भार से वह समुद्र की गहराई में डूबता

चला गया, जहाँ का पानी बर्फ़ के समान ठण्ढा था। अपने चाक़ू से उसने शीघ्र ही बोरे को चीरकर खोला और प्रबल प्रयत्नों के बाद उस रस्सी को काटने में समर्थ हुआ, जिससे उसके पाँवों में लोहे का गोला बँधा हुआ था। गोले के नीचे गिरते ही वह ऊपरी सतह में आ पहुँचा। वह तैरने की कला में निपुण था। तैरते-तैरते वह छोटे से जहाज़ के निकट जा पहुँचा। मल्लाहों ने उसे जहाज़ में चढ़ा लिया। एदमाँ ने एक लंबी साँस ली। पूछने पर उसे मालूम हुआ कि वह २८ फ़रवरी, १८२९ का दिन था। इस हिसाब से उसे क़ैदख़ाने में पूरे चौदह वर्ष बीत चुके थे! न जाने उसकी प्रेम-पात्री मर्सेद का क्या हाल है! इसके बाद उसे दाँगलार, फर्नां और विलफोर की याद आई और बदला लेने की भावना समुद्र की तरंगों की तरह उसके हृदय पर पछाड़ खाने लगी।

वह घाटमार-व्यापारियों के एक दल का जहाज़ था। कुछ दिनों तक एदमाँ उन्हीं लोगों के साथ यात्रा करता रहा। अन्त में एक यात्रा के अवसर पर वह जहाज़ माँत क्रिस्तो के चट्टानी द्वीप के पास जा पहुँचा। एदमाँ किसी बहाने से वहीं उतर गया। उसके कहने पर उसके साथी उसे छोड़कर चले गए। अपने को उस निर्जन द्वीप में एकाकी पाकर उसने पादड़ी की प्राचीन पांडुलिपि में निर्दिष्ट स्थान का पता लगाया। वह एक चट्टान था जो पेड़-पौदों से ढका हुआ था। उसने कुदाली से चट्टान में एक छेद करके विस्फोटक चूर्ण की सहायता से उसे तोड़ डाला। सामने उसे एक पत्थर दिखाई दिया जिसके ऊपर लोहे का एक कड़ा लगा हुआ था। कड़े को पकड़कर उसने पत्थर को हटाया। वहाँ उसे ज़मीन के नीचे जाने के लिये सीढ़ियाँ दिखाई दीं। सीढ़ियों से नीचे उतर कर वह एक अँधेरी गुफा में आ पहुँचा। वहाँ एक स्थान की मिट्टी खोदने पर उसे लोहे का एक बड़ा बक्स दिखाई दिया। उसे खोलते ही उसकी आँखें चौंधियाँ गईं। उस बक्स के भीतर हीरा-लाल, नीलम,

प्राप्त करता चला गया। इसके अतिरिक्त वह दीनों अनाथों और असहायों को बीच-बीच में गुप्त दान भी देता रहता था।

अन्त में वह माँत क्रिस्तो के कौन्ट के नाम से परिचित होकर पैरिस में आया। उस रहस्यमय कौन्ट के भूतपूर्व जीवन से कोई भी परिचित न था, पर उसका ठाट-बाट, शान-शौक़त और तड़क-भड़क देखकर सब लोग चकित थे। वह बड़े-बड़े आदमियों को अपने यहाँ निमन्त्रित करता था और मुक्तहस्त होकर लाखों रुपये बात की बात में ख़र्च कर डालता था।

एक दिन माँत क्रिस्तो के कौन्ट ने अपने गुप्त दूतों द्वारा इस बात का पता लगाया कि विलफोर ने अपने एक नाजायज़ बच्चे को पैरिस के बाहर एक एकान्त स्थानवाले मकान के बाग़ में जीवितावस्था में गाड़ दिया था। बर्तूशियो नामक एक व्यक्ति, जो विलफोर से किसी कारण से चिढ़ता था, एक डण्डे से विलफोर को मारकर अचेत करके उस अनाथ बच्चे को अपने साथ ले गया और उसे पाल-पोस कर उसने बड़ा किया। उस लड़के का नाम उसने बेनेदेतो रखा। बेनेदेतो जब जवान हुआ तो धूर्त, बदमाश और लुटेरा बनकर एक जेलखाने से दूसरे जेलखाने की सैर करता चला गया। विलफोर को वह बात नहीं मालूम थी कि उसका नाजायज़ लड़का अभी जीवित है।

इधर विलफोर की दूसरे ब्याह की स्त्री अपनी सौतेली लड़की वालेंतीन से बहुत जला करती थी। वालेंतीन मोशियो मारेल के लड़के माक्समिलियाँ को चाहती थी, और वह भी उसे चाहता था। पर विलफोर धन के लोभ से और अपनी स्त्री की सलाह से एक बूढ़े कौन्ट के साथ उसका विवाह करना चाहता था। मांत क्रिस्तो के कौन्ट ने गुप्त रूप से उसे अनमेल विवाह की सफलता में बाधा डाल दी। विलफोर की स्त्री वालेंतीन से मुक्त होने का कोई उपाय न देख कर अन्त में उसे दवा के नाम पर अपने हाथ से तैयार किया

हुआ एक विशेष प्रकार का विष नियमित रूप से देने लगी। वह धीरे-धीरे, अव्यक्त रूप से असर करनेवाला विष था। मांत क्रिस्तो कौन्ट (अर्थात् एद्मां) को उस बात का भी पता अपने गुप्तचरों के द्वारा लग गया। वह वेष बदलकर ठीक विलफोर के बग़लवाले मकान में, जाकर रहने लगा। उस मकान की दीवार विलफोर की दीवार से मिली हुई थी। एद्मां ने बड़ी सफ़ाई से उस दीवार की दो-चार ईंटें निकालकर इतना रास्ता निकाल लिया जितने से वह विलफ़ोर के मकान के भीतर आ-जा सके। रात में जब वालेंतीन सोई हुई थी, तो एद्मां दीवार के छेद के रास्ते उसके कमरे में चुपके से जा पहुँचा। उसके पलंग में एक मोमबत्ती जली थी, और एक गिलास में लाल रंग की दवा (जो वास्तव में विष था) रक्खी पड़ी थी। एद्मां ने गिलास से आधा विष फेंक दिया और आधा उसमें रहने दिया, जिससे विलफोर की स्त्री को यह विश्वास हो जाय कि वालेंतीन ने दवा पी है। इसके बाद एद्मां ने भाँग-मिश्रित एक विशेष प्रकार की टिकिया वालेंतीन को खिला दी। उसे खाते ही यह असर हुआ कि वालेंतीन बिलकुल मुर्दा बन गई। उसे देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि वह मरी नहीं है। इसके बाद एद्मां चला गया। थोड़ी देर बाद विलफोर की स्त्री ने वालेंतीन के कमरे में आकर देखा कि वह मर गई है, और गिलास में केवल आधा विष शेष रह गया है। वह समझी कि उसका विष वालेंतीन पर असर कर गया है। उसने शेष विष गिरा दिया। पर एद्मां, जो अपने कमरे के छेद से यह सब काण्ड देख रहा था, ठीक उसी प्रकार का विष तैयार करके उस गिलास को आधा भरकर चला गया।

दूसरे दिन पुलिस ने जाँच की। यह प्रमाणित किया गया कि जो विष वालेंतीन की मेज़ पर रखा हुआ था वही विलफोर की स्त्री की प्रयोगशाला में वर्तमान है। उस पर हत्या का सन्देह किया

गया। विलफ़ोर को अपनी स्त्री की इस करतूत से बड़ा दुःख हुआ। उसी दिन विलफोर को एक रोचक मामले का विचार करना था। बेनेदेतो नाम का एक युवक हत्या के अभियोग में गिरफ्तार किया गया था। यह बेनेदेतो वही था, जिसे विलफोर ने अपना कलंक-स्वरूप समझ कर उसके जन्म लेने के कुछ ही समय बाद ज़मीन में गाड़ दिया था। एदमां की गुप्त मन्त्रणा से बेनेदेतो को अपने जन्म का सारा इतिहास मालूम हो चुका था। अदालत में जब विलफोर ने उससे उसका नाम-धाम पूछने के बाद उसके बाप का नाम पूछा, तो उसने कहा कि जो जज उसका विचार करने बैठा है वही उसका पिता है। उसने उपस्थित जनता को इस गुप्त रहस्य से सूचित किया कि किस प्रकार वह पैदा होते ही ज़मीन में गाड़ दिया गया, और किस प्रकार बेट्रूशियो ने उसका उद्धार किया। विलफोर को यह क़िस्सा सुनकर मूर्च्छा-सी आने लगी। उसके आश्चर्य और दुःख का ठिकाना न रहा।

इस आकस्मिक वज्रपात से स्तब्ध होकर जब वह घर पहुँचा, तो वहाँ उसने देखा कि उसकी स्त्री मरी पड़ी है। बग़लवाले पलंग में उसका छोटा-सा बच्चा लेटा हुआ था। शोक से कातर होकर उसने ज्योंही उस बच्चे को गोद में उठाया, त्योंही एक काग़ज़ का टुकड़ा नीचे गिर पड़ा। बच्चा भी निर्जीव और निष्प्राण जान पड़ता था। कम्पित हस्तों से बच्चे को उसकी माँ की बग़ल में सुलाकर विलफोर उस काग़ज़ के टुकड़े को उठाकर पढ़ने लगा। उसमें उसकी स्त्री ने लिखा था कि उसने अपने बच्चे को विलफोर की सम्पत्ति का एकमात्र उत्तराधिकारी बनाने के उद्देश्य से वालेंतीन की हत्या की थी। पर चूँकि उसके उस दुष्कर्म का पता लग गया है, इसलिये उसने आत्महत्या कर ली है, और चूँकि जीवितावस्था में बच्चा सब समय उसके साथ रहा है, इसलिये मरने पर भी वह

उसे अपने साथ परलोक में लिए जा रही है। वह पत्र पढ़ कर विलफोर की बुद्धि ठिकाने न रही। उस घोर दुःख को सहन न कर सकने के कारण उसने भी आत्महत्या कर ली। इस प्रकार गुप्त षड्यन्त्र से एदमां ने विलफोर से अपना बदला चुकाया।

एदमां को मालूम था कि फर्नां ने बड़े नीच उपायों से उच्च पद प्राप्त किया है। उसने अपने गुप्त चक्रों द्वारा अधिकारियों के कानों तक उसके सम्बन्ध की बहुत सी बातें पहुँचा दीं, जो फर्नां के विरुद्ध पड़ती थीं। जब अधिकारियों को यह बात मालूम हुई कि फर्नां ने अलबेनिया के देशभक्त नेता अली पाशा को धोखा देकर तुर्कों के हाथ गिरफ्तार करवाया है, तो उसका विचार अदालत में हुआ। उपयुक्त प्रमाणों के अभाव के कारण फर्नां संभवतः उस अभियोग से बरी हो जाता, पर एदमां के गुप्तचरों ने यहाँ भी काम किया। फल यह हुआ कि अकस्मात् अदालत में अलीपाशा की लड़की बुर्का पहने आ खड़ी हुई और उसने यह सूचित किया कि फर्नां (अर्थात् कौंट मारसर्फ) ने केवल उसके पिता को धोखा ही नहीं दिया, बल्कि उसे और उसकी माँ को कुछ गुण्डों के हाथ बेच भी डाला।

फर्नां की केवल पदहानि ही नहीं हुई, उसे भयंकर बदनामी भी उठानी पड़ी। उसके लड़के आलबर्त ने मांत क्रिस्तो के कौन्ट को अपने पिता की इस बदनामी का मूल जान कर उसे द्वन्द्व युद्ध के लिये ललकारा। कौन्ट (अर्थात् एदमां) प्रसन्नतापूर्वक राज़ी हो गया। पर उसी दिन आलबर्त की माँ और एदमां की भूतपूर्व प्रेमिका उससे एकान्त में मिली। मर्सेद पहले से ही यह भाँप गई थी कि मांत क्रिस्तो का विख्यात कौन्ट उसके पुराने प्रेमपात्र एदमां के अतिरिक्त और कोई नहीं है। वह अत्यन्त आवेश के साथ उससे मिली और उससे प्रार्थना की कि वह उसके बेटे के साथ द्वन्द्व युद्ध

न करे, क्योंकि उसमें आलबर्त के प्राणों का संकट है। एद्मां ने कहा कि यद्यपि वह वचनबद्ध हो चुका है, और अब द्वन्द्वयुद्ध अस्वीकार करने से उसका सारा मान मिट्टी में मिल जायगा, तथापि वह मर्सेद की प्रार्थना की अवज्ञा न करेगा।

दूसरे दिन आलबर्त ने एद्मां के पास आकर बहुत-से प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सामने उससे क्षमा-याचना कर ली। बेटे के इस आचरण से फर्नां को घोर दुःख हुआ। इसके बाद एक दिन ऐसा अवसर आया, जब मांत क्रिस्तो के कौंट ने अचानक, अप्रत्याशित रूप से फर्नां को यह जता दिया कि वह एद्मां दाँते है, जिसका जीवन नष्ट करने में फर्नां ने कोई बात उठा नहीं रखी। फर्नां को यह सूचना मिली थी कि एद्मां क़िलेवाले कैदख़ाने के नीचे समुद्र में डूब कर मर चुका है। उसे मांत क्रिस्तो के कौंट के रूप में जीवित जानकर उसका मस्तिष्क अत्यन्त उत्तेजित हो उठा और उसी दिन से वह पागल हो गया।

इस प्रकार अपने दो शत्रुओं से एद्मां ने बदला चुकाया। तीसरे शत्रु—दांगलार—की दुर्दशा उसने एक दूसरे ही रूप से की। एद्मां के षड्यन्त्र से स्टाक और शेयर सम्बन्धी झूठी दरों के गुप्त संवाद दांगलार के पास भेजे जाने लगे। दाँगलार ने यह सोचा कि उन गुप्त संवादों से लाभ उठाकर वह फ्रान्स का सबसे बड़ा सेठ बन जायगा। उनके फेर में पड़कर उसने करोड़ों रुपयों के 'शेयरों' की ख़रीद-फ़रोख्त आरम्भ कर दी, जिसके फलस्वरूप उसका दिवाला पिट गया। इस प्रकार एद्मां की प्रतिहिंसा का व्रत पूरा हुआ।

पर शत्रुओं का विनाश करने की धुन में वह मित्रों का उपकार करना न भूला। एक अंगरेज़ के गुप्त वेष में उसने अपने परम हितैषी मित्र मोशियो मारेल की आर्थिक सहायता करके उसका

दिवाला निकलने से बचाया। मारेल का लड़का माक्समिलियाँ विलफोर की लड़की वालेंतीन को चाहता था, यह बात पहले ही कही जा चुकी है। वालेंतीन को एद्मां ने जब भाँग की टिकिया खिलाई, तो सबने यह समझा कि वह मर गई है। पर एद्मां जानता था कि वह टिकिया व्यक्ति को मृत्यु के समान गाढ़ निद्रा में मग्न करने का असर दिखाती है, पर वास्तव में उससे मृत्यु नहीं होती। वालेंतीन का भी यही हाल हुआ। जब वह क़ब्र में गाड़ दी गई, तो उसी दिन रात के समय एद्मां ने उस क़ब्र को खुदवा कर वालेंतीन को बाहर निकलवाया और एक दूसरी दवा के उपयोग से उसे चंगा कर दिया। पर यह बात उसने माक्समिलियाँ को छः मास तक नहीं बताई। माक्समिलियाँ अपनी प्रिय पात्री की मृत्यु के कारण बहुत विकल हो उठा था। अन्त में एक दिन एद्मां उसे अपने मांत क्रिस्तोवाले निवास में ले गया, और उसे यह सूचित किया कि वालेंतीन जीवित है। उसी क्षण वास्तव में वालेंतीन जीवितावस्था में माक्समिलियाँ के सामने आकर खड़ी हो गई। माक्समिलियाँ के आश्चर्य और आनन्द का ठिकाना न रहा।

अलीपाशा की जिस लड़की को फर्नां ने गुण्डों के हाथ बेच डाला था, और जिसने अदालत में उसके विरुद्ध गवाही दी थी, उसका नाम हैदी था। एद्मां ने उसे गुण्डों की दासता के जीवन से मुक्त करा के अपने पास रख लिया था। वह बहुत सुन्दरी, सुशील और सहृदय थी। एद्मां उसे हृदय से चाहने लगा था और वह भी एद्मां को चाहती थी। वालेंतीन के साथ माक्समिलियाँ का मिलन कराने के बाद एक दिन एद्मां अपनी नवीना प्रेमपात्री हैदी को साथ लेकर मांत क्रिस्तो को सदा के लिये छोड़ कर निरुद्देश्य यात्रा के लिये निकल पड़ा; और वालेंतीन तथा माक्समिलियाँ के नाम एक पत्र छोड़ गया, जिसमें उसने उन्हें यह सूचित किया था

कि मांत क्रिस्तो के गुप्त कोष की अतुल धनराशि वह उन लोगों को प्रदान कर गया है। पत्र में उसने यह भी लिखा था कि उस अगाध सम्पत्ति का अधिकारी बनने पर वह अपने को ईश्वर का प्रतिद्वन्द्वी समझने लगता था: पर अब वह जान गया है कि मनुष्य एक अत्यन्त अशक्त और दुर्बल प्राणी है और उस सर्वशक्तिमान से होड़ लगाने की कल्पना पूर्ण पागलपन के सिवा और कुछ नहीं है।

मिस मुलक

'जान हेलीफ़ैक्स' नामक प्रसिद्ध उपन्यास की लेखिका डीना मेरिया मुलक का जन्म इंगलैण्ड के अन्तर्गत स्टोक-अपोन-ट्रेन्ट नामक स्थान में २० अप्रैल, १८२६ को हुआ। उसका बाप एक मंत्री था। पर उसकी आर्थिक स्थिति सदा अनिश्चित रहती थी। फिर भी उसने अपनी लड़की को अच्छी शिक्षा प्राप्त करने की पूरी सुविधा दी। जब उसकी आयु बीस वर्ष की थी, तो वह अपने जीवन का कोई निश्चित क्रम बनाने की आशा में लण्डन गई। वहाँ उसके शील-स्वभाव और रूप-गुण की विशेषता के कारण विख्यात पुस्तक-प्रकाशक एलेग्ज़ेण्डर मेकमिलन से उसकी मित्रता हो गई। मेकमिलन ने उसे पुस्तकें लिखने के लिये प्रेरित किया। प्रारंभ में मिस मुलक ने छोटे बालकों के लिये पुस्तकें लिखीं। बाद में उसने अपना साहित्यिक कार्य प्रारंभ किया। जब उसका 'दि आग्लीवीज़' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ, तो साहित्य-क्षेत्र में उसकी धाक जम गई। इसके बाद उसने शीघ्र ही 'एलिस लमर्मोन्ट' नामक उपन्यास लिखा। इसके बाद उसने बहुत-से उपन्यास और छोटी कहानियाँ लिखीं। पर जिस पुस्तक ने उसे अमरत्व प्रदान किया वह है 'जान हेलीफैक्स, जन्टलमन।' यह उपन्यास सन् १८५७ में प्रकाशित हुआ था और छपते ही उसने आश्चर्यजनक लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी। आज भी लोग उसी उत्सुकता से उसे पढ़ते हैं।

आक्टोबर १८८७ में मिस मुलक की मृत्यु हुई।

—:०:—

जान हेलीफ़ैक्स

यद्यपि मेरी आयु उस समय केवल सोलह वर्ष की थी, तथापि मैं इतना दुर्बल था कि एक हाथ से ढकेले जानेवाली गाड़ी पर बैठकर घूमा-फिरा करता। उस दिन ज़ोर से पानी बरसने लगा था। मेरे पिता ने मेरी गाड़ी को एक गुम्बज़दार बरसाती के नीचे ढकेल दिया। वहाँ तेरह वर्ष का एक बहुत सुन्दर लड़का खड़ा था। उसने भी पानी से बचने के लिये उस स्थान की शरण ली थी।

चूँकि मेरे पिता को अपने चमड़े के कारख़ाने में पहुँचने के लिये देर हो रही थी, इसलिये उन्होंने उस लड़के को मुझे घर तक पहुँचने के लिये नियुक्त किया। वह मेरी गाड़ी को ढकेलते हुए मुझे ले चला। घर पहुँचने पर मैंने उससे अनुरोध किया कि वह हमारे ही यहाँ खाना खावे। उसने रसोई घर में खाना खाया और मैंने 'डाइनिंग रूम' में। खाना खाने के बाद वह मेरे पास चला आया, और मुझे अपनी जीवन-कथा सुनाने लगा। मुझे मालूम हुआ कि उसका नाम हेलीफ़ैक्स है, और वह एक अनाथ लड़का है, जिसके न माता-पिता जीवित हैं, न कोई सगे सम्बन्धी; उसका न कहीं घर है न द्वार। जीविका प्राप्त करने के लिये उसे बाध्य होकर इधर-उधर भटकते रहना पड़ता है। उसकी संपत्ति बाइबिल की एक पुरानी पुस्तक के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं थी, जिस पर उसके बाप गी हेलीफ़ैक्स का नाम लिखा हुआ था।

चूँकि मेरा कोई संगी-साथी नहीं था, इसलिये मैंने निश्चय किया कि उस सुन्दर, सुशील और सहृदय लड़के को मैं अपने मित्र बनाकर

अपने साथ रखूँगा। मैंने अपने पिता आबेल फ्लेचर से प्रार्थना की कि वह जान हेलीफ़ैक्स को अपने यहाँ नौकर रख लें। पिता ने मेरी बात मान ली, और उसे अपने चमड़े के कारखाने में नौकर रख लिया। पर जो साप्ताहिक वेतन उसे दिया जाता था वह इतना कम था कि बेचारा उतने से बड़ी कठिनाई से अपना निर्वाह कर पाता था। वह चमड़े की खालों के ढेर के ऊपर सोता, और केवल उतना ही खाता, जितने से वह प्राण धारण कर सके। चूँकि वह बड़ी लगन से सचाई के साथ काम करता था, इसलिये वह मेरे पिता की प्रसन्नता का पात्र बन गया। धीरे-धीरे उसकी तरक्क़ी होती चली गई, यद्यपि उस तरक्क़ी पर भी वह मजूर-श्रेणी से ऊपर उठने की सुविधा न पा सका।

वह बेकारी का ज़माना था। नेपोलियन के युद्धों के कारण यूरोप के अन्यान्य देशों की तरह इंगलैण्ड की भी आर्थिक तथा औद्योगिक अवस्था संकटपूर्ण हो उठी थी। तिसपर मुझ जैसा रोगी और अशक्त प्राणी जीवन-संग्राम में कैसे अपने दिन बितावेगा, इस बात की बड़ी चिन्ता मेरे पिता को थी। इसलिये जब उन्हें जान हेलीफ़ैक्स के रूप में एक ऐसा व्यक्ति मिल गया, जो अपने मालिक के काम को अपना ही काम समझता, और जो बड़ा योग्य, परिश्रमी और सहृदय था, तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। जान हेलीफ़ैक्स की योग्यता ने बड़े संकटों से मेरे पिता की रक्षा की। उन दिनों मज़दूर आन्दोलन ने कुछ समय के लिये बड़ा ज़ोर पकड़ लिया था, और प्रायः सभी औद्योगिक संस्थाओं के कर्मकार अपने मालिकों से बिगड़कर दंगा मचाने लगे थे। मेरे पिता को भी दंगों से बड़ी हानि उठानी पड़ती, यदि जान हेलीफ़ैक्स ने उनके कारखाने में काम करने वाले मजूरों की माँगें बड़ी योग्यता-पूर्वक पूरी करके उन्हें शान्त न कर दिया होता।

आबेल फ्लेचर (मेरे पिता) ज्यों-ज्यों बुड्ढे होते चले गए,

त्यों-त्यों जान हेलीफ़ैक्स के ऊपर काम के उत्तरदायित्व का भार बढ़ता चला गया। जब वह २१ वर्ष की अवस्था को पहुँचा, तो पिता जी ने उसे अपने कारखाने का हिस्सेदार बना लिया। इस प्रकार वह मजूर-श्रेणी से उन्नति करके एक पक्का 'नागरिक' बन गया। पर रूढ़ीवादी विचारों के पोषक तथाकथित सम्भ्रान्तवंशीय खुर्राटों की दृष्टि में वह फिर भी एक निम्नजातीय घृणित जीव बना रहा।

हमारे क़स्बे के इन संभ्रान्तवंशीय ज़ालिमों में अर्ल आफ़ लक्समोर और उसका जमाई रिचार्ड व्रिथवुड—ये दो व्यक्ति विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। वे दोनों बड़े शराबी, व्यभिचारी और अत्याचारी थे, और अपनी कुलीनता के अनुचित अधिकारों का अत्यन्त नीचतापूर्ण दुरुपयोग करके वे उन सब व्यक्तियों पर बड़ा ज़ुल्म करते थे, जिन्हें वे अपने से निम्न समझते थे। जान हेलीफ़ैक्स को एक साधारण मजूर की स्थिति से एक कारखाने के मालिक के अधिकार प्राप्त होते देखकर वे लोग उससे बहुत चिढ़ने लगे थे, और बात-बात में उसका अहित करने के प्रयत्न में कोई बात उठा नहीं रखते थे। पर जान हेलीफ़ैक्स उनकी चालबाज़ियों को ख़ूब जानता था और उनके फेर में पड़ने वाला व्यक्ति नहीं था। अपनी कूट चेष्टाओं में सफल न होते देख वे उससे और भी अधिक जलने लगे थे।

जब मेरी आयु तेईस वर्ष की थी, तो मैं एक बार जान हेलीफ़ैक्स को साथ लेकर कुछ समय के लिये निकट-स्थित पहाड़ियों में जाकर रहने लगा। वहाँ तब मिस्टर मार्च और उसकी लड़की उर्सुला भी डेरा जमाए हुए थी। उर्सुला रिचार्ड व्रिथवुड की कुछ सम्बन्धिनी लगती थी। वह अपने बीमार पिता को हवा-बदली के लिये वहाँ लाई थी। उसके पिता की दशा दिन पर दिन गिरती चलती गई। जान हेलीफ़ैक्स ने प्राणपण से रोगी की सेवा की, जिसका उर्सुला

पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। जब मिस्टर मार्च की मृत्यु हुई, तो उर्सुला और जान हेलीफ़ैक्स एक दूसरे के प्रेम में पड़ चुके थे। पर उनके विवाह में स्वभावतः बड़ी कठिनाइयाँ उपस्थित हुईं। जान हेलीफ़ैक्स अपेक्षाकृत निर्धन और एक अत्यन्त साधारण कुल का 'नगण्य' व्यक्ति था; पर उर्सुला सम्भ्रान्त वंश की लड़की थी, और अपने धनी पिता की उत्तराधिकारिणी थी। जान हेली-फ़ैक्स ने देखा कि जो बाधाएँ उसके सामने उपस्थित हैं वे पहाड़ के समान दुर्लंघ्य हैं, और वह इस सम्बन्ध में निराश और एकदम निश्चेष्ट होकर बैठ गया। पर उर्सुला ने जिस चारित्रिक बल और साहस से काम लिया वह अत्यन्त सराहना के योग्य था। यह जानते हुए भी कि उसके अभिभावक रिचार्ड ब्रिथवुड के हाथ में उसकी मासिक आय को रोक लेने का पूरा अधिकार है, उर्सुला ने उसके जबर्दस्त विरोध की अवज्ञा की, और जान हेलीफ़ैक्स से विवाह कर लिया। स्वभावतः विवाहोत्सव बिना किसी धूमधाम के मनाया गया, पर वर-वधू के सुख और सन्तोष का ठिकाना न रहा।

कुछ समय बाद उर्सुला ने एक लड़की को जन्म दिया। पर इस बात से पति-पत्नी को विशेष दुःख हुआ वह लड़की जन्मान्ध निकली। उसका नाम मुरिएल रखा गया। जान हेलीफ़ैक्स अपनी इस अन्धी लड़की के प्रति बहुत स्नेहशील था। उस लड़की के बाद उर्सुला ने एक-एक करके तीन लड़कों को जन्म दिया, जिनके नाम क्रम से गी, एडविन और वाल्टर रखे गए। उनके बाद फिर एक लड़की उत्पन्न हुई। पर सब बच्चों में अन्धी लड़की सबसे अधिक प्रसन्नचित्त रहती थी और वह अपने माँ-बाप की बड़ी लाड़ली थी। ग्यारह वर्ष की आयु में जब उसकी मृत्यु हो गई, तो उसके माता-पिता के शोक का ठिकाना न रहा। जान हेलीफ़ैक्स को इस शोचनीय घटना के बाद से ऐसा जान पड़ने लगा कि उसके

जीवन का सारा सुख उससे छीन लिया गया, और उसका यौवनोचित उत्साह जाता रहा।

मेरे पिता की मृत्यु हो गई थी। मैं तब से उन्हीं लोगों के साथ रहने लगा था। जान हेलीफ़ैक्स और उसकी पत्नी के लिये मैं भाई के बतौर था और बच्चे मुझे अपने सगे चचा के समान मानते थे। उस परिवार के सुख-दुःख का मैं पूरा साझी बन गया।

वाटरलू के इतिहास-प्रसिद्ध युद्ध में नेपोलियन की हार हो चुकी थी, और ब्रिटेन की विजय। फलस्वरूप इंगलैण्ड के उद्योग-धन्धों में आश्चर्यजनक उन्नति दिखाई देने लगी थी। जान हेलीफ़ैक्स ने अपनी योग्यता से ऐसी उन्नति कर ली थी कि नवोदित सम्भ्रान्त श्रेणी में उसकी गिनती होने लगी। इस नये सम्भ्रान्त-सम्प्रदाय में धनी व्यापारियों की संख्या अधिक थी। जान हेलीफ़ैक्स केवल अपने उद्योग-धन्धों की उन्नति की ओर ही ध्यान नहीं देता था, बल्कि सर्व साधारण की आर्थिक उन्नति के नये-नये उपायों का आविष्कार करता रहता था। फल यह हुआ कि वह व्यापारियों और उद्योगियों का नेता बन गया। मेरे पिता की मृत्यु के बाद चमड़े का कारोबार उसके हाथों में आ ही चुका था; उसके अतिरिक्त उसने एन्डरली नामक स्थान की कुछ कपड़े की मिलों को भी अपने अधिकार में ले लिया। लार्ड लक्समोर, जो जाँन से पहले से ही जलता था, उस स्थान का ज़मींदार था। वे मिलें पुराने ढर्रे पर पानी की सहायता से चलती थीं। लक्समोर ने जान हेलीफ़ैक्स का सारा कारोबार चौपट करने के उद्देश्य से यह किया कि जिस चश्मे के पानी की सहायता से कपड़े की मिलें चलती थीं, उसके बहाव को अपने बाग़ों की ओर कर दिया। पर जान हेलीफ़ैक्स इस बात से तनिक भी विचलित नहीं हुआ। तब आर्कराइट नामक व्यक्ति के उद्योग से मैनचेस्टर की मिलों में भाप का उपयोग होने लगा था। जान ने आर्कराइट से मिलकर एन्डरली

की मिलों में भी भाप को काम में लाना आरंभ कर दिया। फल यह हुआ कि उन मिलों की आय दुगनी-तिगनी हो गई, और प्रतिवर्ष बढ़ती चली गई। क़सबे के जिस छोटे से मकान में जान और उर्सुला हेलीफ़ैक्स रहते थे, उसे छोड़कर वे देहात में छोटी सी ज़मींदारी खरीदकर एक खासे अच्छे मकान में रहने लगे। इसके कुछ समय बाद उन्होंने अपने लिये एक बहुत बड़ा ठाठदार मकान तैयार करवाया, और वहाँ शान-शौक़त के साथ रहने लगे। पर जान कभी अपने प्रारंभिक दिनों की निर्धनता को न भूला, और सार्वजनिक हित की चेष्टा में वह सदा लगा रहा।

पर आर्थिक उन्नति के कारण उसके पारिवारिक कष्टों का निवारण न हो पाया। लाड़ली लड़की मुरिएल की मृत्यु ने सबसे पहली और गहरी चोट उसे पहुँचाई थी। बाद में उसके लड़के जब बड़े और जवान हुए, तो उनके प्रेम-सम्बन्धों के कारण परिवार में भयंकर अशान्ति मच गई।

इन झगड़ों का सूत्रपात इस प्रकार हुआ कि छोटी लड़की माड की शिक्षा और देख-भाल के लिये एक 'गवर्नेस' नियुक्त की गई। इस 'गवर्नेस' ने अपना नाम मिस सिलवर बताया। वह देखने में बहुत सुन्दर थी, पर उसका स्वभाव बड़ा रहस्यमय था। उर्सुला उसे अपनी लड़की के समान मानकर उसके साथ बड़ा सहृदयता-पूर्ण बर्ताव रखती थी, पर वह अकारण उससे खिंची-सी रहती थी। अन्त में एक दिन मालूम हुआ कि उसका नाम वास्तव में मिस सिलवर नहीं है और वह लुइस द' आर्जी नाम की एक फ्रेन्च लड़की है, जिसका बाप फ्रान्स की अराजकता के समय किसी एक विशिष्ट पद पर नियुक्त होकर कुख्याति प्राप्त कर चुका था। जान और उर्सुला हेलीफ़ैक्स को यह बात मालूम होने पर वे उसे निकालने की बात सोच ही रहे थे कि एक दूसरे अप्रिय रहस्य की बात उन्हें मालूम हुई। वह यह कि उस लड़की से उनका

सबसे बड़ा लड़का गी प्रेम करने लगा था। उस अज्ञात-कुल-शील लड़की से वे गी का विवाह करना नहीं चाहते थे और साथ ही अपने मनचले लड़के की इच्छा का विरोध करने का साहस भी उन्हें नहीं होता था। वे इस पशोपेश में थे कि इतने में एक दूसरा भेद खुला। वह यह कि लुइस गी से नहीं, बल्कि एक दूसरे व्यक्ति से प्रेम करती थी और इस कारण उसने गी से विवाह करने से अस्वीकार कर दिया। पर इस बात से जान हेलीफैक्स और उसकी पत्नी को कोई तसल्ली नहीं मिली, क्योंकि जिस दूसरे व्यक्ति से लुइस प्रेम करती थी वह उनका दूसरा लड़का एडविन था। लुइस के कारण दोनों भाइयों में भयंकर वैमनस्य हो गया। पारिवारिक प्रेम जिस घर का चिर-आदर्श रहा, वहाँ भाई-भाई में इस प्रकार का मनोमालिन्य होते देख हेलीफैक्स पति-पत्नी को स्वभावतः असहनीय मानसिक कष्ट हुआ।

एडविन से लुइस का विवाह होने के पहले ही गी विदेश चला गया। कहने को तो वह यह कह गया कि वह अपने पिता के व्यवसाय के काम से जा रहा है, पर वास्तव में वह एडविन से दूर रहना चाहता था। गी के चले जाने से स्थिति की जटिलता कुछ सुलझ अवश्य गई, पर इससे उसके माता-पिता को शान्ति न मिल सकी। नयी चिन्ताएँ उनके सिरों पर सवार हुईं। अर्ल आफ़ लक्समोर के लड़के लार्ड रेवेनल ने पैरिस से आकर उन्हें आशंका-जनक संवाद सुनाया। अर्ल आफ़ लक्समोर जान हेलीफैक्स का जितना ही विरोधी था, उसका लड़का रेवेनल उसका उतना ही प्रशंसक और हितैषी था। रेवेनल को मालूम था कि उसकी बहन लेडी केरोलीन ब्रिथवुड के प्रति हेलीफैक्स पति-पत्नी ने कितनी सहृदयता प्रदर्शित की है। लेडी केरोलीन को उसके पति रिचार्ड ब्रिथवुड ने तलाक़ दे दिया था। अपनी दुःखिनी बहन के प्रति सद्भाव प्रकट करने वाले व्यक्तियों के प्रति ममता उत्पन्न होना

रेवेनल के लिये स्वाभाविक था, विशेषकर जब उसका पिता अपने लड़के और लड़की के प्रति उदासीन था। कुछ भी हो, रेवेनल ने यह सूचित किया कि गी पैरिस में बुड्ढे लार्ड लक्समोर के चक्कर में आ फँसा है, जिसके कारण वह सब प्रकार से हानि उठा रहा है। कुछ समय बाद स्वयं गी के हाथ का लिखा हुआ एक पत्र उसके माँ-बाप को मिला, जिसमें उसने यह सूचित किया था कि एक जुआ-घर में शराब के नशे से उत्तेजित होने के कारण वह सर जेरार्ड बर्मिली से उलझ पड़ा और उसे उसने इस क़दर पीटा कि उसका जीना असंभव जान पड़ता है। उसने यह भी लिखा कि उसे अब शीघ्र ही फ्रान्स से भागकर अमेरिका की ओर निकल जाना पड़ेगा। यह सर जेरार्ड बर्मिली किसी ज़माने में लेडी केरोलिना का प्रेम-पात्र बन चुका था।

मुरिएल की मृत्यु से जिस प्रकार जान हेलीफैक्स के जीवन का उत्साह जाता रहा था, उसी प्रकार गी के घोर निन्दनीय आचरण से वही दशा उर्सुला की हो गई। मैंने तब पहली बार इस बात पर ध्यान दिया कि उर्सुला को बुढ़ापा घेरने लगा है। तब तक उसका स्वास्थ्य और सौन्दर्य सुन्दर, स्वाभाविक ढंग से परिपक्व होता चला जा रहा था। पर अब उसके मुख में घोर दुःख और निराशा की ऐसी गाढ़ी छाप पड़ गई, जो किसी तरह भी हटना नहीं चाहती थी, यद्यपि कुछ ही समय बाद यह समाचार आया कि गी बोस्टन में किसी एक व्यवसाय में विशेष सफलता प्राप्त करके दिन-पर-दिन उन्नति करता जाता है, तथापि हमारे घर से पारिवारिक सुख और शान्ति सदा के लिये चली गई थी। इसके अतिरिक्त कुछ समय से एक और चिन्ताजनक बात मेरे ध्यान में आ रही थी। जिस दिन एडविन का विवाह हुआ था, ठीक उसी दिन मैंने अकस्मात् जान को एक भयंकर प्रकार के शारीरिक कष्ट से छटपटाते देखा। यह दृश्य मेरे सिवा और किसी ने नहीं देखा था।

जान ने मुझसे उसके उस कष्ट का उल्लेख और किसी से न करने का अनुरोध किया। उस दिन से उसकी वह विचित्र पीड़ा बीच-बीच में जान पर अपना प्रकोप दिखाती जाती थी। पर उस रोग का हाल केवल मैं ही जानता था—उर्सुला से भी उसने कुछ नहीं कहा था। वर्षों बाद एक दिन उसने मुझसे एकान्त में कहा कि डाक्टर ने उसे चेतावनी दी है कि उसकी मृत्यु किसी भी समय हो सकती है। अपने आजीवन सखा के जीवन को संकटमय जानकर मैं आतंक से सिहर उठा।

कुछ समय बाद एक और नयी चिन्ता का कारण उत्पन्न हो उठा। जान की लड़की माड की आयु अठारह वर्ष की हो चली थी। पर इस बात पर आज तक परिवार के किसी भी व्यक्ति ने ध्यान नहीं दिया था कि लार्ड रेवेनल से वह प्रेम करने लगी है और लार्ड रेवेनल भी उसे चाहता है। जब अचानक वह रहस्य प्रकाश में आया और लार्ड रेवेनल ने माड के माता-पिता के आगे उससे विवाह करने का प्रस्ताव किया, तो उन लोगों ने स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार कर दिया। दो कारणों से वे इस विवाह के लिये राज़ी न हुए—एक तो यह कि माड की और रेवेनल की आयु में प्रायः बीस वर्ष का अन्तर था; दूसरा यह कि रेवेनल के चरित्र कि स्थिरता के सम्बन्ध में उन्हें काफ़ी सन्देह था।

पर शीघ्र ही उनका उक्त सन्देह निराधार सिद्ध हुआ। विवाह का प्रस्ताव अस्वीकृत होने पर रेवेनल यह कहकर चला गया कि वह फिर कभी लौटकर नहीं आवेगा। इसके कुछ ही समय बाद उसके पिता अर्ल आफ़ लक्समोर की मृत्यु हो गई। अर्ल अपने पीछे बहुत बड़ी संपत्ति छोड़ गया, सन्देह नहीं; पर वह बहुत अधिक ऋण करके मरा था। यद्यपि क़ानून रेवेनल को, जो अब लार्ड लक्समोर बन गया था, उसके बाप के ऋणों के लिये उत्तरदायी नहीं ठहराता था, फिर भी उसने उन सब को चुकाने का

निश्चय कर लिया और इसी कारण अपने पिता की संपत्ति के उत्तराधिकार को उसने अस्वीकृत कर दिया। वह बहुत ही साधारण आय से अपना निर्वाह करने लगा। जान और उर्सुला ने जब उसके इस असाधारण चरित्र-बल की बात सुनी तो उन्हें इस बात के लिये पश्चात्ताप होने लगा कि ऐसे सुयोग्य पात्र को उन्होंने हाथ से जाने दिया और अपनी लड़की को भी नाहक़ अप्रसन्न किया।

वर्ष पर वर्ष बीतते चले गये। जान सार्वजनिक कार्यों में काफ़ी ख्याति प्राप्त कर चुका था और उससे उसके मित्र पार्लमेन्ट के लिये खड़े होने का अनुरोध कर रहे थे। पर उसने अस्वीकार कर दिया। अब किसी काम के लिये भी उसके मन में उत्साह नहीं रह गया था। उर्सुला भी चिन्ताओं के भार से दिन-दिन दबती जाती थी। उसका सबसे बड़ा लड़का गी उससे इतनी दूर था और माड अविवाहित और दुःखित थी। इन कारणों से स्पष्ट ही उसके मन में भयंकर बेचैनी समाई हुई थी।

अमेरिका से गी का कुशल-समाचार मिलता रहता था, पर अकस्मात् वह भी बन्द हो गया। अन्त में एक पत्र हम लोगों को मिला, जिसमें यह सूचित किया गया था कि गी और उसका साथी कुछ दिनों बाद बोस्टन से जहाज़ में रवाना होने वाले हैं। पर जिस जहाज़ के आने की बात लिखी गई थी, उसके आने का समय बीत चुका, पर गी नहीं आया। हम लोग बहुत चिन्तित हो उठे। कई महीनों तक हम लोग उसके आने की प्रतीक्षा में रहे, पर वह नहीं आया। हम लोगों को विश्वास हो गया कि वह जहाज़ कहीं टकराकर डूब गया है। उर्सुला की यह दशा हो गई कि ऊपर की मंज़िल से नीचे उतरना ही उसने एक प्रकार से छोड़ दिया। वह किसी के आगे अपने दुःख की चर्चा नहीं करती थी, गी का उल्लेख तक वह नहीं करती थी। पर उसका दुःख किसी से छिपा

नहीं था। ऐसा जान पड़ता था, जैसे उसकी सारी आत्मा थकित हो चुकी है।

अन्त में एक दिन हमारे यहाँ एक परदेशी आया। वह लम्बे क़द का था और दाढ़ी रखे था। माड ने उसे सब से पहले देखा। उसने उससे बैठने की प्रार्थना की और कहा कि वह अपने पिता को बुलाने जाती है। परदेशी अचानक बोल उठा—"पर माड, क्या तुमने मुझे अभी तक पहचाना नहीं? मैं गी हूँ।"

गी अपने जिस साझी के साथ आया था, मालूम हुआ कि वह रेवेनल है। वह लार्ड की पदवी को तलाक़ दे चुका था और अब केवल विलियम रेवेनल के नाम से परिचित था। जान और उर्सुला को शान्ति तो मिली, पर वह विदाई के पहले की शान्ति थी। गी यौवन के प्रारंभ में जिस तिरस्कृत प्रेम के धक्के को संभाल सकने में अपने को असमर्थ मालूम करने लगा था, वह अब समय के प्रभाव से शान्त हो चुका था। इसलिये एडविन के प्रति उसके मन में विद्वेष का भाव अब लेशमात्र भी शेष नहीं रह गया था और दोनों भाई वर्षों बाद फिर से प्रेमपूर्वक एक दूसरे से मिले। मांड का विवाह विलियम रेवेनल से हो गया। दोनों उस पूर्ण प्रेम के अनुभव से सुखी थे, जिसके लिये आयु का दीर्घ अन्तर कोई महत्त्व नहीं रखता।

एक दिन हम लोग एन्डरली के जंगल में सैर के लिये गए। उसी जंगल में छत्तीस वर्ष पहले जान और उर्सुला ने एक दूसरे के आगे अपना प्रेम प्रकट करके अपने उस पारस्परिक भाव को आजीवन निबाहने की प्रतिज्ञा की थी। जान भी हमारे साथ चला। पर उर्सुला घर पर ही रही। गी के लौट आने की प्रसन्नता भी उसकी गत शक्ति को फिर से जगाने में असमर्थ सिद्ध हुई थी। कुछ भी हो, उस दिन का समय बड़ा सुहावना था। हमारे साथ के सब तरुण और तरुणियाँ परम प्रसन्न दिखाई देती थीं। जान

घास के ऊपर आराम से लेट गया और अपना टोप उसने अपनी आँखों के ऊपर खींच लिया।

जब संध्या हो चली, तो माड ने कहा—"अब तो सर्दी मालूम हो रहा है। पिताजी को जगाया जाय।"

पर जान चिरनिद्रा में मग्न हो चुका था। मैं उसकी स्त्री को वह दुःखद समाचार सुनाने घर गया और फिर वापस चला आया। जान को हम लोग जंगल के पास उस पुराने मकान में ले गये जहाँ जान और उर्सुला का प्रथम प्रेमालाप हुआ था। अकस्मात् हमने देखा कि उर्सुला भी वहाँ आ पहुँची है। वहाँ वह कैसे पहुँच गई, जबकि कई सप्ताहों से वह अत्यन्त दुर्बलता के कारण बाहर नहीं निकल पाई थी? मैं कह नहीं सकता। न जाने किस अलौकिक प्रेरणा ने उसे स्थिर और शान्त भाव से खड़े रहने की शक्ति प्रदान की! मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि वह आई, उसने अपने बच्चों को समझाया और उन्हें यह उपदेश दिया कि वे अपने आदर्श पिता को कभी न भूलें और इसके बाद उसने सबसे यह अनुरोध किया कि उसे कुछ समय के लिये उसके मृत पति के साथ अकेले रहने दिया जाय।

हम लोग बाहर चले आए और बाहर से किवाड़ फेर दिये गए। मैं ठीक कह नहीं सकता कि कितनी देर तक हम लोग बाहर बैठे रहे। अन्त में गी भीतर गया। उर्सुला अपने पति के साथ लेटी हुई थी। उसका एक हाथ उसके पति के गले पर आलिंगन के रूप में पड़ा हुआ था। ऐसा जान पड़ता था, जैसे दोनों सोए हुए हैं। उसके एक लड़के ने उसे जगाने के उद्देश्य से पुकारना आरंभ किया। पर वह न हिली-डुली और न कोई उत्तर ही उसने दिया। गी ने अपनी दुःखिनी विधवा माता को धीरे से स्नेहपूर्वक उठाया।—पर वह विधवा कहाँ रही! वह तो अपने आदर्श पति के साथ सती हो चुकी थी!

टामस हार्डी

टामस हार्डी का जन्म इंगलैण्ड के अन्तर्गत डार्सेटशायर नामक स्थान में २ जून, १८४० को हुआ। जब वह नवयुवक था, तो स्वप्नलोक में विचरा करता था, और कवि बनने की आकांक्षा उसके मन में बड़ी प्रबल थी। पर इस ओर प्रयास न करके वह लण्डन के एक भवन-शिल्पी के तत्त्वावधान में स्थापत्य कला सीखने लगा। इस कला में उसने ऐसी विशेषता प्राप्त की कि उसे एक भवन की रूप-रेखा तैयार करने के लिये विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। उसके उपन्यासों की रचना में जो एक सुन्दर सामञ्जस्य और स्थापत्य पाया जाता है उसका मूल कारण उसकी स्थापत्य कला-सम्बन्धी शिक्षा ही है।

पाँच वर्ष तक निरन्तर कविता लिखने का प्रयास करते रहने पर भी इस क्षेत्र में उसे विशेष सफलता प्राप्त न हो सकी, और अन्त में वह एक कथाकार बन बैठा। उसने जो सबसे पहली कहानी लिखी उसे छापने के लिये एक पत्र-सम्पादक तैयार हो गया, पर प्रसिद्ध उपन्यासकार जार्ज मेरेडिथ की बात मानकर उसने उसे प्रकाशित नहीं कराया। उसका पहला उपन्यास 'डेस्परेट रेमीडीज़' सन् १८७१ में प्रकाशित हुआ।

इसके बाद पचीस वर्ष के अरसे में उसने चौदह उपन्यास लिखे और कहानियों के दो संग्रह प्रकाशित कराए। उसके प्रधान उपन्यास

हैं—'अण्डर दि ग्रीनवुड ट्री', 'ए पेयर आफ़ ब्लु आइज़', 'फार फ्राम दि मैडिंग क्राउड', 'दि रिटर्न आफ़ दि नेटिव,, 'टेस आफ़ द' उर्वरविल'। यह अन्तिम उपन्यास उसकी सर्वोत्तम और सबसे अधिक प्रसिद्ध रचना है। जीवन की गहराई से जितना परिचय टामस हार्डी का था उतना इंगलैंड के अन्य किसी भी उपन्यासकार का नहीं रहा है। उसकी शैली चुभती हुई होती थी और एक मार्मिक व्यंगात्मक भाव उसकी प्रायः सभी श्रेष्ठ रचनाओं में पाया जाता है।

उसकी कविताओं का प्रथम संग्रह तब छपा जब उसकी आयु अट्ठावन वर्ष की हो चुकी थी। चौंसठ वर्ष की अवस्था में उसके 'दि डायनेस्ट्स' शीर्षक महाकाव्य का प्रथम भाग छपा, जिसने सारे साहित्य संसार को चकित कर दिया। ११ जनवरी, १९२८ को उसकी मृत्यु हुई।

—:o:—

टेस

जान डर्बीफील्ड एक साधारण फेरीवाला था और घोर दरिद्रावस्था में अपना जीवन बिताता था। पर उसकी स्त्री बहुत सुन्दरी और विलास-प्रिय थी। बहुत से व्यक्तियों से उसका प्रेम-सम्बन्ध रह चुका था। उसका नाम जोन था और वह कई बच्चों की माँ थी।

अचानक एक दिन जान डर्बीफील्ड को यह मालूम हुआ कि वह उर्बरविल के एक अत्यन्त प्रतिष्ठित और उच्चकुल का वंशधर है। यह जानकर उसके गर्व का ठिकाना न रहा। गाँव के कुछ अज्ञ व्यक्ति उसे 'सर जान' कहकर पुकारने लगे। उसकी स्त्री जोन के मन में अपने भावी जीवन के सम्बन्ध में तरह-तरह की रंगीन कल्पनाएँ दौड़ने लगीं।

जोन ने यह सोचा कि अपनी कुलीनता के आकस्मिक आविष्कार से आर्थिक तथा सामाजिक लाभ उठाने का कोई उपाय निकालना चाहिये। उसने यह निश्चय किया कि अपनी नौजवान लड़की टेस को किसी धनी घर में नौकरी प्राप्त करने के लिये प्रेरित किया जाय। इस उपाय से निश्चय ही वह किसी सुन्दर युवक की दृष्टि में जँच जायगी और उन लोगों की कुलीनता के कारण विवाह में कोई बाधा नहीं खड़ी हो सकेगी।

टेस एक सीधे स्वभाव की लड़की थी। वह हृदय से चाहती थी कि किसी भी उपाय से उसके माता-पिता की दरिद्रता दूर हो जाय। इसलिये जब उसकी माँ ने उसके आगे नौकरी का प्रस्ताव रखा, तो वह राज़ी हो गई। वह काम की खोज में गई। एक अंधी और कुलीन घराने की बुढ़िया के यहाँ उसे नौकरी मिल गई। वहाँ

धोखे से वह बुढ़िया के दुष्ट-चरित्र लड़के के जाल में फँस गई। उसको गर्भ रह गया। वहाँ से वह निकाल दी गई और अपने माँ-बाप के पास वापस चली गई। बच्चा हुआ और कुछ समय बाद उस बच्चे की मृत्यु भी हो गई। टेस दुःख और आत्मग्लानि से पीड़ित होकर कुछ वर्षों तक घर ही पर रही।

अन्त में वह फिर नौकरी की खोज में निकल पड़ी। एक डेयरी में उसे नौकरी मिल गई। उसी डेयरी में, एञ्जल क्लेयर नामक एक युवक भी काम करता था। वह एक पादड़ी का लड़का था। उसका बाप अपने बेटे की अधार्मिक प्रवृत्ति देख कर उससे विशेष असन्तुष्ट रहता था। वह शिक्षित, सुसंस्कृत और सहृदय था। टेस को वह एक साधारण मनुष्य नहीं, बल्कि एक देवता के समान लगता था। टेस ने यद्यपि अपने जीवन की पहली भयंकर भूल से शिक्षा पाकर यह निश्चय कर लिया था कि वह आजीवन अविवाहित रहेगी और किसी भी पुरुष से किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखेगी, तथापि एञ्जेल क्लेयर के प्रति वह प्रबल रूप से आकर्षित हो उठी, और दोनों के बीच पारस्परिक प्रेम की प्रगाढ़ अनुभूति उत्पन्न हो गई। दोनों सुबह-शाम साथ ही टहलने के लिये निकलते, डेयरी में साथ ही मक्खन निकालते और पनीर तैयार करते। एक-दूसरे के संसर्ग में दोनों परम प्रसन्न थे और संसार में अपने को सबसे अधिक सुखी समझते थे।

पर एक बात टेस के मन में सब समय काँटे की तरह गड़ी रहती थी। वह सोचती थी कि अज्ञातवश एक बार वह जो पाप कर्म कर चुकी है, उसके कलंक की छाप उसके हृदय पर सदा के लिये रह गई है; जब तक एञ्जल क्लेयर उसके कलंक से परिचित होकर अपनी उदार क्षमा से उसे धो नहीं डालेगा, तब तक वह मिटेगा नहीं। अपने कलंकित हृदय से एञ्जेल के शुद्ध हृदय का मिलन कराने में उसे भयंकर झिझक मालूम हो रही थी। वह जब-

जब एञ्जेल के आगे अपने उस कलंक की बात व्यक्त करने का प्रयत्न करती, तब-तब वह असमञ्जस में पड़कर रह जाती।

अन्त में दोनों के विवाह का दिन निश्चित हो गया। टेस की आत्मा अपने भावी पति के निकट अपना पिछला पाप स्वीकार किए बिना किसी प्रकार भी चैन नहीं पा रही थी। अन्त में जब विवाह में केवल एक सप्ताह शेष रह गया, तो उसने अपनी स्वीकारोक्ति लिख डाली, और एञ्जेल क्लेयर के मकान में एक क़ालीन के नीचे छिपाकर उसे इस आशा से रख दिया कि किसी मौक़े से अवश्य ही एञ्जेल उसे पढ़ पावेगा।

पर संयोगवश एञ्जेल की दृष्टि में वह पत्र नहीं आ पाया। विवाह के दिन प्रातःकाल टेस का विचार अकस्मात् बदल गया। वह चुपचाप एञ्जेल के यहाँ जाकर उस अपठित स्वीकारोक्ति को क़ालीन के नीचे से उठा लाई। उसी दिन दोनों का विवाह हो गया। पर टेस का हृदय किसी अज्ञात कारण से सशंकित होने लगा। कोई अव्यक्त वाणी उसके कानों में कहने लगी कि इस विवाह की परिणति शुभ नहीं होगी।

जब वर-बधू दोनों एक एकान्त कमरे में एक अँगीठी के पास बैठकर आग तापते हुए एक-दूसरे के स्पर्श से पुलकित होकर प्रेमालाप कर रहे थे, तो अकस्मात् एञ्जेल ने अपने पूर्व जीवन के एक अनीतिमूलक आचरण का उल्लेख किया। एक स्त्री के साथ अड़तालीस घन्टे बिताकर उसने अपनी काम-वासना चरितार्थ की थी—अपने इस पाप-कर्म को अपनी नव-विवाहिता पत्नी के आगे स्वीकृत करके उसने उससे क्षमा चाही। टेस ने प्रसन्नतापूर्वक उसे क्षमा कर देने का भाव प्रकट किया। इस बात से उसके मन में साहस का सञ्चार हुआ, और उसने भी अपने जीवन की भूल का सारा हाल कह सुनाया।

एञ्जेल क्लेयर ने तब पूर्वोक्त पाप-कर्म किया था जब वह परिपक्व अवस्था को पहुँच चुका था, और जीवन के बहुत-से कड़वे और मीठे अनुभव उसे हो चुके थे; और टेस जब उस चक्कर में फँसी थी, तब उसे जीवन का तनिक भी अनुभव नहीं था। पर पुरुष-परिचालित समाज की घोर वैषम्यमूलक सभ्यता में नारी की तनिक भी भूल-भ्रान्ति के लिये क्षमा की कोई गुञ्जाइश नहीं है। एञ्जेल क्लेयर—वह एञ्जल क्लेयर जो अपने को मानव-हृदय की स्वतन्त्रता का पोषक बताया करता था—टेस की स्वीकारोक्ति से आतंकित हो उठा। उसी क्षण से वह टेस के प्रति विमुख हो गया। कुछ दिनों तक टेस ने उसे शान्त भाव से मनाने की चेष्टा की; पर अन्त में एक दिन उसकी घोर अन्यायमूलक मनोवृत्ति से तंग आकर वह नरम पड़ी और उसे खरी-खोटी बातें सुना दीं। दोनों में विच्छेद हो गया, और टेस फिर से अपने घर को वापस चली गई। क्लेयर किसी दूर-स्थित स्थान को चला गया।

घर पहुँचने पर जब उसकी माँ को यह मालूम हुआ कि उसने अपनी स्वीकारोक्ति के कारण एञ्जेल को सम्बन्ध-विच्छेद करने के लिये विवश किया, तो वह टेस पर उबल पड़ी। टेस के पिता ने शराब के नशे में चूर होकर अपनी कुलीनता के झूठे गर्व की क्षणिक मत्तता के आवेश में बड़े बड़े शब्दों में उसे गालियाँ सुनाईं। टेस सहन न कर सकी। उसने घर से निकलने का निश्चय कर लिया। इतने वर्षों में नौकरी से वह जो कुछ कमा पाई थी उसका आधा अपने माँ-बाप को देकर वह घर छोड़ कर चली गई। जाते समय यह कह गई कि वह फिर से अपने पति के पास जा रही है।

टेस यद्यपि हृदय से चाहती थी कि क्लेयर से उसका पुनर्मिलन हो जावे, पर वह क्लेयर के घरवालों के पास अपील के लिए नहीं गई। गरमियों में उसे किसी एक स्थान में नौकरी मिल गई। वह

जो कुछ पाती, प्रायः सब अपने माँ बाप को भेज देती थी। जब जाड़ा आया, तो उसे कहीं काम मिलना कठिन हो गया, और उसके भूखों मरने की नौबत आ पहुँची। वह एक स्थान से दूसरे स्थान में भटकती रही। अन्त में एक पहाड़ के ऊपर की पथरीली समभूमि में उसे एक अत्यन्त कष्टसाध्य काम मिला। एक तो काम बहुत कठिन था, तिस पर जिस व्यक्ति ने उसे नियुक्त किया था उसका व्यवहार उसके प्रति घोर बर्बर और नीचतापूर्ण था। बर्फ़ और पानी के बीच में भयंकर शीत का सामना करते हुए वह बिना किसी शिकायत के काम करती जाती थी। उस घोर निराशापूर्ण कठोर परिस्थिति में भी वह यह आशा बाँधे बैठी थी कि उसके पति का मनोभाव निश्चय ही एक दिन बदल जायगा, और कभी न कभी अवश्य ही वह लौटकर आवेगा और उससे मिलेगा। एञ्जेल क्लेयर जिन-जिन गीतों को पसन्द करता था उन्हें गा-गाकर वह पिछली स्मृति को जगाती रहती। जिन रंगमय रागों को वह गाती थी उनके भावों से उसके म्लान मुख और अश्रुपूर्ण आँखों का कोई मेल नहीं मिलता था।

अन्त में हारमान होकर उसने क्लेयर के माता-पिता के पास जाकर उसका कुशल-समाचार जानने का निश्चय किया। वह अनेक कष्टों को सहन करती हुई पैदल चली गई और अन्त में एमिनिस्टर पहुँची, जहाँ क्लेयर के माँ-बाप रहते थे। बुड्ढा पादड़ी और उसकी स्त्री टेस को देखकर निश्चय ही प्रसन्न होते, क्योंकि वे उसी के समान शुद्ध-हृदय और धर्मपरायण थे। पर जब वह उनके घर पहुँची, तो वहाँ कोई नहीं था। वह इस आशा में उनकी प्रतीक्षा करती रही कि बुड्ढे पति-पत्नी गिर्जे से शीघ्र ही लौट आवेंगे। इतने में उसने दो व्यक्तियों को रास्ते में चलते हुए देखा। वे एञ्जेल के भाई थे। वे लोग आपस में जिस ढंग की बातें कर रहे थे उससे एञ्जेल के माता-पिता से मिलने का सारा उत्साह

टेस के मन से जाता रहा, और वह अत्यन्त व्यथित हृदय से घर की ओर लौट चली।

रास्ते में एक स्थान पर उसने देखा कि एक व्यक्ति पादड़ी के वेष में कुछ देहातियों को व्याख्यान देते हुए उन्हें अनन्त काल तक नरक में पड़े रहने का भय दिखाकर आतंकित कर रहा है। वह पादड़ी और कोई नहीं, टेस का प्रथम प्रेमिक एलेक था, जिसने उसे धर्मभ्रष्ट करने के बाद उसका साथ छोड़ दिया था। उसकी पाशविकता अब धर्मान्धता में बदल गई थी, और भोले-भाले ग्रामीणों को नरक का भय दिखाना उसके जीवन का प्रधान कर्तव्य बन गया था। जब टेस उस रास्ते से होकर जा रही थी, तो एलेक की दृष्टि अकस्मात् उस पर पड़ गई। वह व्याख्यान देना छोड़ कर तत्काल उसके पीछे हो लिया। टेस ने उसे पहचान लिया था और वह उसकी दृष्टि बचाकर भागना चाहती थी। पर एलेक ने उसका पीछा करने का निश्चय कर लिया था। उसने अपने पिछले बर्ताव के लिये टेस से क्षमा मांगी, और कहा कि उससे विवाह करना चाहता है। टेस उसे दुतकारती रही, पर वह अपने हठ पर अड़ा रहा। कई दिन बीत गए, पर एलेक उसके पीछे पड़ा ही रहा। टेस का सौन्दर्य पहले से कई गुना अधिक बढ़ गया था, और एलेक की पिछली कामुकता फिर से भयंकर रूप से जाग पड़ी थी। उसने टेस को नये सिरे से अपने जाल में फँसाने के प्रयत्न में कोई बात उठा न रखी। टेस यद्यपि एलेक को हृदय से घृणा करने लगी थी, और उससे पिण्ड छुड़ाने के लिये बहुत छटपटा रही थी, तथापि बात उसके वश की नहीं थी। एलेक सब प्रकार के मानवीय तथा दानवीय उपायों को काम में लाकर उसे घेरे हुए था। वह बहुत दिनों तक प्रतिरोध करती रही, पर अन्त में जब उसके पिता की मृत्यु हो जाने से उसके घरवालों की आर्थिक स्थिति अत्यन्त संकटमय हो उठी, तो अपनी माँ

और बहनों की उस घोर दुर्दशाग्रस्त अवस्था में उनकी सहायता करने के उद्देश्य से उसने उस दुष्ट और नीच कामुक को आत्म-समर्पण कर दिया।

इधर क्लेयर रोग और शोक के कारण सूखकर काँटा हो गया था। टेस के प्रति अनुदार होकर उसने जो अन्याय किया था उसके लिये वह घोर पश्चात्ताप करने लगा था। वह बहुत दिनों से टेस की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान में भटक रहा था। अन्त में एक दिन सैन्डबोर्न नामक स्थान के एक बोर्डिंग-हाउस में टेस से उसकी भेंट हो गई। टेस भी उसकी खोज में थी। उसकी आँखों में एक मोहाच्छन्न भाव वर्तमान था और वह उन्मादग्रस्त व्यक्तियों की तरह एञ्जेल की ओर देखते हुए बोल उठी—"मैंने एलेक की हत्या कर डाली है। वह रात-दिन अपने कठोर-व्यंगबाणों से मेरा हृदय छेदा करता था। तुम्हारे सम्बन्ध में अत्यन्त नीच वाक्य उसने कहे, मुझसे रहा न गया—तुम्हारे निष्कलंक चरित्र पर दोषारोपण मुझसे सहा न गया। मेरी आत्मा के भीतर से यह आवाज़ आई कि उस दुष्ट नीच की हत्या करना पुण्य है, और इसी उपाय से तुमसे मेरा मिलन होगा।"

क्लेयर ने जब यह क़िस्सा सुना, तो वह कुछ देर तक स्तम्भित रहा। बाद में यह विचार कर कि उसके प्रति सच्चे प्रेम की भावना हृदय में रखने के कारण ही टेस ने वह भयानक काण्ड किया है, वह प्रेमपूर्वक उसका हाथ पकड़कर उसे अपने साथ ले चला। दोनों एक दूसरे के प्रेम का सम्बल साथ लेकर अज्ञात दिशा की ओर चले। पाँच दिन तक वे इसी प्रकार निरुद्देश्य भाव से भटकते रहे, और समाज तथा संसार को भूलकर प्रेमलोक में मुक्त विचरते रहे।

छठे दिन रात के समय दोनों स्टोनहेञ्ज नामक स्थान में सूर्य के एक अति प्राचीन मन्दिर के खण्डहरों के पास पहुँचे और रात

वहाँ बिताई। पौ फटते ही पुलिस के सिपाही वहाँ आ पहुँचे। टेस ने बिना किसी विवाद के शान्त भाव से अपने को क़ानून के रक्षकों के हाथ समर्पित कर दिया और कहा—"लो, मैं तैयार हूँ।'

एञ्जेल टेस के साथ-साथ गया। जिस जेलखाने में टेस क़ैद की गई वह एञ्जेल के लिये एक पवित्र मन्दिर-स्वरूप बन गया। अन्त में टेस को उसके हत्या के अपराध का महादण्ड मिला। उस सरल-हृदया, करुणाशीला पापिनी के प्रति समाज ने और संसार ने जो पाप किए, वे उसके अपने पापों से कई गुना अधिक विकट थे।

—:o:—

जार्ज सैन्ड

जार्ज सैन्ड का असली नाम था लूसील-ओरोर दुपां। उसका जन्म फ्रान्स के अन्तर्गत बेरी नामक स्थान में सन् १८०४ में हुआ। विख्यात फ्रेञ्च सेनाध्यक्ष मार्शल साक्स के वंश में उसका जन्म हुआ था। उसमें कृषक और सम्भ्रान्तवंशीय रक्त का सम्मिश्रण वर्तमान था, जिसके फलस्वरूप निम्न और उच्च, दोनों वर्गों के व्यक्तियों के अन्तर्भावों को समवेदना के साथ समझने में उसे स्वाभाविक सुगमता प्राप्त हो गई थी। उसके उपन्यासों में उसकी यह विशेषता अत्यन्त सुन्दर रूप से प्रस्फुटित हुई है।

जार्ज सैन्ड अत्यन्त कल्पना-प्रिय और भावपरायण स्त्री थी। इसलिये जब मोशियो दोदवां नामक एक नीरस प्रकृति के व्यक्ति से उसका विवाह हुआ, तो वह उसके साथ अधिक समय तक न रह सकी और उससे अलग होकर १८३१ में स्वतन्त्र रूप से अपनी जीविका का निर्वाह करने के उद्देश्य से पैरिस चली गई। उसके साथ उसके दो बच्चे भी थे। पैरिस में वह अत्यन्त शोचनीय दशा में रहने लगी। उसकी जीविका का कहीं कुछ भी ठिकाना नहीं लग सका। अन्त में उसने अपने भीतर साहित्य-रचना की प्रेरणा पाई। अपना असली नाम छिपाकर जार्ज सैन्ड के उपनाम से उसने लिखना आरम्भ किया। शीघ्र ही उसने ख्याति प्राप्त कर ली।

गायिका

आंज़ोलेतो वेनिस की सड़कों में आवारा फिरने वाला एक छोकरा था। वह सुन्दर था और प्रोफेसर पारपोरा के संगीत-विद्यालय में शिक्षा पाने की सुविधा उसे प्राप्त हो गई थी। उसका कण्ठ बहुत मधुर था और वह अपनी कल्पना-शक्ति से अपने स्वर की मधुरता में एक अपूर्व मोहकता ला देता था। कौंसुएलो एक स्पेनिश किसान की लड़की थी। वह भी पारपोरा के विद्यालय में संगीत की शिक्षा पा चुकी थी। आंज़ोलेतो से उसकी बड़ी मित्रता हो गई थी। पर मित्रता के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार की घनिष्ठता उन दोनों में नहीं थी। आंज़ोलेतो का चरित्र अच्छा नहीं था। देखने में सुन्दर और गाने में निपुण होने के कारण बहुत-सी लड़कियों से उसका प्रेम-सम्बन्ध हो चुका था।

कौंसुएलो ने जब प्रथम बार सार्वजनिक रूप से गाना गाया, तो उसकी मोहक तान ने—जिसमें उसकी आत्मा की तपन का प्रदीप्त भाव झंकृत हो उठा था—जनता को मुग्ध कर दिया। कुछ लोग तो उसका गाना सुनकर इतने अधिक विह्वल हो उठे थे कि गीत समाप्त होकर भावुकतावश उसके चरणों पर आकर लोट गए। उस दिन से शहर में उसकी धाक जम गई। युवकगण उसके पास आकर उसके प्रति अपना प्रेम निवेदित करने लगे और बहुतों ने उससे विवाह का प्रस्ताव किया। कौंसुएलो ने अपने सह-शिक्षार्थी आंज़ोलेतो के प्रस्ताव को स्वीकार करके शेष सब को तिरस्कृत कर दिया।

कौन्ट जुस्तीनियन ने अपने एक निजी थियेटर की स्थापना कर रखी थी। कौंसुएलो के संगीत पर मुग्ध होकर उसने उसे अपने

यहाँ नियुक्त कर लिया। कौन्ट उसके प्रति इतना अधिक आकर्षित हो उठा था कि उसने आंज़ोलेतो से उसे अलग करने की चेष्टा में कोई बात उठा न रखी। पर कौंसुएलो अपने मनोनीत व्यक्ति के प्रति किसी प्रकार भी विमुख नहीं होना चाहती थी। उसने कौन्ट की एक न सुनी और उससे यह शर्तनामा लिखवाया कि वह आंज़ोलेतो को भी अपने यहाँ नियुक्त करेगा। कौन्ट ने जब देखा कि वह अपनी बात की पक्की है, तो उसके प्रति उसका प्रेमभाव और भी अधिक बढ़ गया।

कोरिला नाम की एक गायिक कौंसुएलो की प्रतिद्वन्द्विनी थी। उसने जब देखा कि कौन्ट कौंसुएलो पर मर मिटने को तैयार है, तो उसकी ईर्ष्या ने भयंकर रूप धारण कर लिया। उसने आंज़ोलेतो को फाँसकर कौंसुएलो को मार्मिक कष्ट पहुँचाने का निश्चय किया। आंज़ोलेतो कोरिला के वहाँ आने-जाने लगा, पर कौंसुएलो को इस बात की कोई ख़बर न थी।

कौन्ट के थियेटर में जब प्रथम बार कौंसुएलो और आंज़ोलेतो ने अभिनय किया, तो कौंसुएलो को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई, पर आंज़ोलेतो को किसी ने पूछा तक नहीं। कौंसुएलो के संगीत-अध्यापक पारपोरा ने उसे यह चेतावनी दी कि वह आंज़ोलेतो के साथ विवाह न करे। अपनी बात का महत्व प्रमाणित करने के लिये वह एक दिन कौंसुएलो को कोरिला के यहाँ ले गया। वहाँ आंज़ोलेतो को देखकर उसे विश्वास हो गया कि कोरिला के साथ उसका प्रेम-सम्बन्ध स्थापित हो चुका है। उसने उसी क्षण आंज़ोलेतो को सदा के लिये त्यागने का निश्चय कर लिया और कौन्ट के प्रेम को भी ठुकराकर वह भाग कर वियेना चली गई।

पारपोरा की सिफ़ारिश से वह कुछ समय बाद बोहीमिया के कौन्ट क्रिश्चियन के यहाँ उसकी भतीजी बेरनेस आमेलिया की सहचरी के रूप में नियुक्त हुई। जिस दिन वह उक्त कौन्ट के यहाँ

यहाँ नियुक्त कर लिया। कौन्ट उसके प्रति इतना अधिक आकर्षित हो उठा था कि उसने आंज़ोलेतो से उसे अलग करने की चेष्टा में कोई बात उठा न रखी। पर कौंसुएलो अपने मनोनीत व्यक्ति के प्रति किसी प्रकार भी विमुख नहीं होना चाहती थी। उसने कौन्ट की एक न सुनी और उससे यह शर्तनामा लिखवाया कि वह आंज़ोलेतो को भी अपने यहाँ नियुक्त करेगा। कौन्ट ने जब देखा कि वह अपनी बात की पक्की है, तो उसके प्रति उसका प्रेमभाव और भी अधिक बढ़ गया।

कोरिला नाम की एक गायिक कौंसुएलो की प्रतिद्वन्द्विनी थी। उसने जब देखा कि कौन्ट कौंसुएलो पर मर मिटने को तैयार है, तो उसकी ईर्ष्या ने भयंकर रूप धारण कर लिया। उसने आंज़ोलेतो को फाँसकर कौंसुएलो को मार्मिक कष्ट पहुँचाने का निश्चय किया। आंज़ोलेतो कोरिला के यहाँ आने-जाने लगा, पर कौंसुएलो को इस बात की कोई ख़बर न थी।

कौन्ट के थियेटर में जब प्रथम बार कौंसुएलो और आंज़ोलेतो ने अभिनय किया, तो कौंसुएलो को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई, पर आंजोलेतो को किसी ने पूछा तक नहीं। कौंसुएलो के संगीत-अध्यापक पारपोरा ने उसे यह चेतावनी दी कि वह आंज़ोलेतो के साथ विवाह न करे। अपनी बात का महत्व प्रमाणित करने के लिये वह एक दिन कौंसुएलो को कोरिला के यहाँ ले गया। वहाँ आंज़ोलेतो को देखकर उसे विश्वास हो गया कि कोरिला के साथ उसका प्रेम-सम्बन्ध स्थापित हो चुका है। उसने उसी क्षण आंज़ोलेतो को सदा के लिये त्यागने का निश्चय कर लिया और कौन्ट के प्रेम को भी ठुकराकर वह भाग कर वियेना चली गई।

पारपोरा की सिफ़ारिश से वह कुछ समय बाद बोहीमिया के कौन्ट क्रिश्चियन के यहाँ उसकी भतीजी बेरनेस आमेलिया की सहचरी के रूप में नियुक्त हुई। जिस दिन वह उक्त कौन्ट के यहाँ

रात के समय पहुँची, उस दिन भयंकर आँधी आई हुई थी। कौंसुएलो के पहुँचते ही इस्टेट का पुराना पेड़, जो 'दुर्भाग्य का वृक्ष' के नाम से प्रसिद्ध था, टूटकर गिर पड़ा। उसके गिरने के संवाद से कौन्ट के घर के सब लोग बहुत घबरा उठे। कौन्टेस ने कहा— "निश्चय ही कोई विपत्ति हमारे परिवार में टूट पड़नेवाली है।" कुछ समय बाद कौन्टेस का लड़का, कौन्ट एलबर्ट भीतर आया। वह एक सुन्दर किन्तु उदास-प्रकृति का युवक था। प्रेत-विद्या, झाड़-फूंक और जादू-टोने में उसका विश्वास था। उसने आकर सूचित किया कि उसे एक आश्चर्यजनक प्रेरणा हुई है, जिससे उसने यह अनुमान किया है कि शीघ्र ही उस घर में एक विचित्र शान्ति छा जायगी। कौंसुएलो को देखकर उसके पीले मुख में एक मन्द मुसकान झलक उठी। उसने कौंसुएलो का हाथ छुआ और इसके बाद चुपचाप चला गया। कौंसुएलो को उसकी सारी हरकतें अत्यन्त रहस्यमय जान पड़ीं। बाद में पूछने पर उसे मालूम हुआ कि एलबर्ट का स्वभाव बहुत सरल और मधुर है, पर बीच-बीच में वह कुछ रहस्यात्मक भावों का शिकार बन जाता है, जिनके कारण उसे मूर्च्छा के-से 'फिट' आते रहते हैं। आमेलिया से, जिसकी सहचरी के रूप में कौंसुएलो की नियुक्ति हुई थी, एलबर्ट के विवाह की बात-चीत चल रही थी; पर एलबर्ट उसके प्रति आकर्षित नहीं था और न आमेलिया ही उसके स्वभाव की विचित्रता को पसन्द करती थी। पर कौंसुएलो प्रारंभ से एलबर्ट के प्रति आकर्षित हो उठी और एलबर्ट को भी ऐसा जान पड़ने लगा कि कौंसुएलो की उपस्थिति में उसकी रहस्यमय प्रेरणाएँ स्वास्थ्यकर रूप धारण कर लेती हैं। जब वह भाव-विभोर होकर मूर्च्छामग्न हो जाता, तो कौंसुएलो कोई जीवन सञ्चारिणी रागिणी गाकर उसे जगाने में सफल होती। अपने स्वस्थ विचारों की प्रेरणा से कौंसुएलो एलबर्ट की रुग्ण आध्यात्मिकता को दूर करने में धीरे-धीरे सफलता प्राप्त

करने लगी। फिर भी बहुत दिनों तक एलबर्ट की गुप्त साधनाएँ जारी रहीं। कौंसुएलो को ऐसा जान पड़ता था जैसे सारा घर रहस्यपूर्ण गुप्तचक्रों से घिरा हुआ है। तिलस्मी दरवाज़े, भेदभरी अग्निशिखाएँ, विचित्र छायामूर्तियाँ उसके चारों ओर भौतिक चक्रजाल ताने रहतीं। उसने निश्चय किया कि उन सब रहस्यों का उद्घाटन करके रहेगी।

एक बार एलबर्ट काफ़ी समय के लिये ग़ायब रहा। कौंसुएलो उसकी खोज करते हुए एक गुप्त दरवाज़े से होकर एक सूखे हुए कुँए के भीतर जा पहुँची। उस कुँए के भीतर से होकर एक और तिलस्मी रास्ता उसे दिखाई दिया। उस रास्ते से होकर वह चली गई और अन्त में एक गुप्त कोठरी में पहुँची। वहाँ उसने एलबर्ट को बीमारी की हालत में पाया। एक अधपगला नौकर उसकी सेवा में नियुक्त था। एलबर्ट की यह दशा हो गई थी कि वह प्रलाप बकने लगा था। कौंसुएलो ने प्राणपण से उसकी परिचर्या की, जिसके फलस्वरूप वह चंगा हो गया।

पर उस तिलस्माती चक्कर के कारण स्वयं कौंसुएलो बीमार पड़ गई। इस बार एलबर्ट रात-दिन उसकी शुश्रूषा में व्यस्त रहा। कौंसुएलो अच्छी हो गई। इस बीच उन दोनों के भीतर पारस्परिक प्रेम की भावना गाढ़ से गाढ़तर हो उठी। एलबर्ट कौंसुएलो से विवाह का प्रस्ताव करने की बात सोच ही रहा था कि बीच में आंज़ोलेतो फिर आ धमका और उसने भयंकर विघ्न डाल दिया। फल यह हुआ कि कौंसुएलो को स्पष्ट शब्दों में स्वीकार करना पड़ा कि आंज़ोलेतो के साथ उसका क्या सम्बन्ध रहा है। उसकी स्पष्टवादिता से एलबर्ट का पिता कौन्ट क्रिश्चियन बहुत प्रसन्न हुआ और उसने यह प्रस्ताव किया कि चूंकि उसने अपनी सेवाओं से एलबर्ट की आध्यात्मिक रुग्णता को दूर कर दिया है, इसलिये

वह (कौंसुएलो) उससे (एलबर्ट से) विवाह करने को राज़ी हो जावे।

इसके उत्तर में कौंसुएलो ने कहा—"आप मुझे यह जो गौरव प्रदान करना चाहते हैं, वह मेरे योग्य नहीं है। मैं एक गायिका हूँ और मेरे लिये यही अच्छा है कि मैं फिर से अपने पेशे को अपनाऊँ।"

आंज्रोलेतो के साहचर्य से दूर रहने के उद्देश्य से वह रात में चुपचाप भागकर वियेना की ओर चली गई। इसके बाद वह अपने भूतपूर्व शिक्षक पारपोरा से जाकर मिली। पर अब पारपोरा का न तो स्कूल ही रह गया था, न कोई छात्र।

वियेना के राजकीय थियेटर में विशिष्टता प्राप्त करने की चेष्टाओं में उसे सफलता न मिली। इस असफलता के मूल में उसकी प्रतिद्वन्द्विनी कोरिला थी। उस थियेटर के भीतर षड्यन्त्रों का ऐसा चक्र सब समय चलता रहता था कि कौंसुएलो उस जीवन से ऊकता गई। उसे इस बात के लिये पश्चात्ताप होने लगा कि एलबर्ट से विवाह करने का प्रस्ताव उसने अस्वीकृत कर दिया। अन्त में उसने एलबर्ट को एक पत्र लिखा, जिसमें उसने उसके प्रति अपना प्रेम स्पष्ट शब्दों में प्रकट किया। वह पत्र उसने पारपोरा को डाक में डालने के लिये दिया। पर पारपोरा की मनोवृत्ति में अब विकृति आने लगी थी। उसने कौंसुएलो के पत्र को जला दिया और एलबर्ट के पिता को स्वयं एक पत्र लिखा। वह कौंसुएलो की संगीत-कला से स्वयं लाभ उठाना चाहता था।

इधर कौंसुएलो को यह विश्वास था कि उसका पत्र एलबर्ट के पास तक निश्चय ही पहुँच चुका होगा। वह प्रति दिन उत्तर की आशा में रहती। कई सप्ताह बीत गए, पर कोई उत्तर नहीं मिला। अन्त में कोर्ट थियेटर में उसे एक 'आपेरा' में गाने का अवसर

प्राप्त हुआ। कोरिला उसके हृदय की उदारता के कारण उसके प्रति सहानुभूति रखने लगी थी और उसने अपना 'पार्ट' उसे दे दिया था।

एक दिन जब वह 'रिहर्सल' के अवसर पर अभिनय कर रही थी, तो उसने थियेटर हाल के एक प्रायांधकार कोने में कौन्ट एलबर्ट की सी शक्ल के एक व्यक्ति को देखा। एक विचित्र पुलक-वेदना से वह कंटकित हो उठी।

इसी बीच बेरन ट्रेंक नाम का एक उच्छृंखल स्वभाव का रईस वियेना में आया। कौंसुएलो को देखकर वह उसपर मर मिटने लगा। पर कौंसुएलो उसके उजड्ड स्वभाव के कारण उसके दूर रहने की चेष्टा करने लगी। एक दिन जब वह थियेटर के 'ड्रेसिंग-रूम' में अपने 'पार्ट' के अनुरूप कपड़े पहन रही थी, तो वही बेरन बलपूर्वक भीतर घुस आया और उसने कौंसुएलो के प्रति अपना प्रेम निवेदित किया। उसने उसके चरणों पर अनेक मूल्यवान जवाहरात न्योछावर किए और जब अन्त में सहसा प्रेमोन्मत्त होकर उसने उसे दोनों हाथों से पकड़कर बलपूर्वक उठा ले जाना चाहा, तो उसी दम एक गुप्तवेषधारी सशक्त पुरुष वहाँ पहुँचा और उसने उस सभ्य डाकू के हाथों से कौंसुएलो को छुड़ाकर उस दुष्ट को सीढ़ियों के नीचे ढकेल दिया।

यद्यपि कौंसुएलो को बचाने वाले व्यक्ति का मुँह ढका हुआ था, तथापि उसे यह जानने में देर न लगी कि वह गुप्तवेषी पुरुष कौन्ट एलबर्ट के सिवा और कोई नहीं है। पर ज्योंही कौंसुएलो ने उसे पुकारा, त्योंही वह भाग खड़ा हुआ। वह कुछ देर तक स्तम्भित अवस्था में सीढ़ियों के ऊपर खड़ी रही। इतने में 'प्रामटर' ने उसे दूसरे अंक में अभिनय करने के लिये बुलाया। वह नाटक की प्रधान पात्री के रूप में सज्जित होकर रंगमञ्च में गई। जो गीत उसे गाने थे वे एक प्रेमिका के सकरुण उद्गार थे। उसने मन-ही-मन कौन्ट

एलबर्ट को लक्ष्य किया और गाने लगी। उसे विश्वास था कि एलबर्ट निश्चय ही दर्शकों के बीच में छिपकर कहीं बैठा है, इसलिये उसे प्रभावित करने के उद्देश्य से वह अपने हृदय के सम्पूर्ण रस को गीत के साथ घोलकर गाने लगी।

उसके गाने पर मुग्ध होकर दर्शकों ने उसपर फूलों की वर्षा की। उन फूलों के बीच सनोबर के वृक्ष की एक मोरपंखी-पत्ती भी थी। जिस व्यक्ति ने उसे फेंका होगा, उसने निश्चय ही अपने हृदय की विकलता का भाव व्यक्त करना चाहा है, यह धारणा उसके मन में जम गई और साथ ही यह विश्वास भी दृढ़ हो गया कि कौन्ट एलबर्ट ने ही उसे फेंका होगा। कौंसुएलो का हृदय उस पत्ती को देखकर विषाद-मग्न हो गया। उसे ऐसा जान पड़ने लगा कि वह पत्ती मृत्यु का रूपक है।

एलबर्ट के सम्बन्ध में उसके सन्देह की विकलता दिन पर दिन बढ़ने लगी। लाइपज़िक की राजकीय नाट्यशाला से उसके पास बुलावा आया। उसे एक अच्छी नौकरी का प्रलोभन दिखाया गया। इधर आस्ट्रिया की सम्राज्ञी, जो कि उस पर बहुत प्रसन्न थी, उसका विवाह अपने एक प्रिय-पात्र से करना चाहती थी और इस बात पर बड़ा ज़ोर दे रही थी। पारपोरा ने यहाँ भी अपना चक्कर चलाया। जिस प्रकार कुछ समय पहले उसने एलबर्ट के लिये लिखे गए पत्र को नष्ट कर डाला था, उसी प्रकार अब उसने यह बात बनाई कि एलबर्ट का उत्तर उसके पास आया है, जिसमें उसने यह लिखा है कि कौंसुएलो किसी भी व्यक्ति से विवाह करने के लिये स्वतंत्र है। पारपोरा की बात पर कौंसुएलो को विश्वास हो गया और एलबर्ट की इस उदासीनता पर उसे बहुत दुःख हुआ। पर उसके मन में जो द्विविधा थी वह जाती रही और वह लाइपज़िक की पूर्वोक्त नाट्यशाला की नौकरी स्वीकार करके पारपोरा के साथ वहाँ को रवाना हो गई।

यात्रा के बीच प्रशा के राजा, महान् फ्रेडरिक ने, जो कि अज्ञात रूप से भ्रमण कर रहा था, उसे देखा। उसके रूप और गुणों से वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसने अपनी राजधानी में उसे बुला लिया; और साथ ही उसने यह आदेश दिया कि पारपोरा को वियेना वापस भेज दिया जाय। पर इसी बीच कौन्ट एलबर्ट का चचा बेरन रुडोल्स्टाड कौंसुएलो से मिला और उसने यह सूचित किया कि उसका भतीजा मृत्यु-शय्या में पड़ा हुआ है और मरने के पहले कौंसुएलो से मिलने के लिये वह बहुत उत्सुक है। उसी क्षण कौंसुएलो बेरन के साथ रवाना हो गई।

एलबर्ट के पास पहुँचते ही प्रेम और करुणा से वह विह्वल हो उठी। उसने अपने उस मरणोन्मुख प्रेमी का मुख चूमा और आँसुओं की झड़ी लगा दी। एलबर्ट ने अपनी यह इच्छा प्रकट की कि मरने से पहले कौंसुएलो से उसका विवाह हो जाय। इस विचित्र विवाह से उसका उद्देश्य केवल यह था कि उसके मरने के बाद उसकी सम्पत्ति और उपाधि कौंसुएलो को प्राप्त हो जाय। उसने इस बात पर इतना हठ किया कि अन्त में कौंसुएलो को राज़ी होना पड़ा।

विवाह होने के कुछ ही घन्टे बाद कौन्ट एलबर्ट की मृत्यु हो गई। कौंसुएलो के दुःख का ठिकाना न रहा।

पर अब उसे नौकरी के लिये इधर-उधर भटकने की कोई आवश्यकता नहीं रह गई थी। अब वह कौन्टेस बन गई थी और एक बहुत बड़ी सम्पत्ति की अधिकारिणी थी। उसने अपनी सारी सेवाओं को संगीत तथा नाट्यकला की उन्नति की ओर नियोजित करने का व्रत ग्रहण कर लिया।

—:o:—

एच० जी० वेल्स

एच० जी० वेल्स का पूरा नाम है हर्बर्ट जार्ज वेल्स। संसार के सर्वश्रेष्ठ जीवित लेखकों में उसकी गिनती है। उसका जन्म २१ सितम्बर, १८६६ को हुआ। उसका पिता क्रिकेट का एक विख्यात पेशेवर खिलाड़ी था। उसकी माँ एक सरायवाले की लड़की थी और विवाह होने के पहले एक धनी महिला की नौकरानी थी। बालक वेल्स को नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त न हो सकी। पर वह ऐसा बुद्धिमान था कि अपने परिश्रम और योग्यता के बल से उसने बहुत-कुछ सीख लिया। सोलह वर्ष की अवस्था में किसी एक 'स्टोर' में उसने नौकरी की। पर शीघ्र ही एक प्राथमिक स्कूल में उसे अध्यापन का काम मिल गया। उसकी योग्यता का परिचय पाकर कुछ समय बाद लण्डन विश्वविद्यालय ने उसे एक छात्रवृत्ति प्रदान की। विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में उसने सम्मानपूर्ण सफलता प्राप्त की। इसके बाद एक 'प्राइवेट' स्कूल में विज्ञान के अध्यापक के पदपर वह नियुक्त हो गया।

सन् १८९३ में उसने साहित्य-रचना का कार्य आरम्भ किया। 'पेल-मेल गज़ट' में उसके निबन्ध प्रकाशित होने लगे और कुछ समय बाद उक्त पत्र ने नाटकों की आलोचना का काम उसे सौंप दिया। सामाजिक संगठन की ओर उसकी विशेष रुचि थी और विज्ञान की ओर भी उसका

झुकाव था। इन दोनों विषयों के समन्वय को मूल आदर्श बनाकर उसने एक उपन्यास-माला लिखना आरम्भ कर दिया। अपने उपन्यासों और छोटी कहानियों में उसने संसार के भावी रूप की कल्पना द्वारा अत्यन्त विचित्र और कौतूहलोद्दीपक दृश्यों का लोमहर्षक चित्रण किया। इस प्रकार की रचनाओं में उसका 'दि वार आफ़ दि वर्ल्ड्स' नामक उपन्यास प्रमुख है। इसी उपन्यास के कथानक का छायाभास हम वर्तमान प्रकरण में दे रहे हैं। वेल्स की बहुत सी भविष्यवाणियाँ आश्चर्यजनक रूप से सफल हो चुकी हैं।

वर्तमान समय में वेल्स सामाजिक तथा राजनीतिक विषयों को लेकर कहानियों तथा उपन्यासों की रचना करता चला जाता है। संसार के नवीन आदर्शात्मक सामाजिक संगठन तथा राजनीतिक निर्माण के सम्बन्ध में जो विचार उसने प्रकट किए हैं, वे धीरे-धीरे विश्वमान्य होते चले जाते हैं। विभिन्न विषयों पर उसका अगाध पाण्डित्य वास्तव में अत्यन्त आश्चर्यजनक है।

—:०:—

दो ग्रहों के निवासियों का युद्ध

जिन दिनों मंगल ग्रह के निवासी पृथ्वी की ओर तीव्र गति से बढ़े चले आ रहे थे, उन दिनों की बातें जब मुझे याद आती हैं, तो सबसे अधिक आश्चर्य मुझे इस बात पर होता है कि हम लोग उस समय उस सम्बन्ध में कैसी उदासीनता प्रकट कर रहे थे ! आकाश-मार्ग से होकर कल्पनातीत रूप से घृणित दानवगण भयंकर अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर पृथ्वी के नाश के लिये चले आ रहे थे। पर इङ्गलैंड की गलियों में घूमने वाले भाव-विभोर प्रेमिक-प्रेमिकाओं को इस बात की तनिक भी खबर नहीं थी। पृथ्वी के निवासिओं का कार्यक्रम प्रतिदिन की तरह नियमित रूप से चल रहा था। लोग यह नहीं जानते थे कि महानाश का समय आ गया है। हमारी इस शस्य-श्यामला और निर्मल सूर्यकरोज्ज्वला धरणी के सुखद राज्य पर अपना अधिकार जमाने की लालसा उन महाबुद्धिशाली दानवों में निश्चय ही अत्यन्त प्रबल हो उठी थी। मैंने दूरबीनों की सहायता से उक्त लोहितांग ग्रह के किनारे विराट् अग्निकाण्ड की भी ज्वालाएँ देखी थीं। मुझे तब इस बात का पता नहीं था कि एक विराट् तोप के छोड़े जाने से वे ज्वालाएँ प्रकट हुईं और उस महातोप ने दस विशाल सिलिन्डरों को आकाश में छोड़ दिया है। इस बात को जानने की कोई उत्सुकता मेरे मन में उस समय उत्पन्न नहीं हो सकती थी, क्योंकि तब मैं बाइसिकिल में चढ़ना सीख रहा था, और वही बात मेरे लिये सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण थी। चार करोड़ मील की दूरी पर स्थित मंगल-ग्रह की बात से मुझे क्या वास्ता हो सकता था !

प्रसिद्ध ज्योतिषी आगिल्वी ने मंगल ग्रह से आनेवाले प्रथम

दूत का आविष्कार किया। एक बहुत बड़े 'सिलिन्डर' को उसने नीचे गिरते हुए देखा था और उसे उल्कापात समझा था। उस विशाल 'सिलिन्डर' का मुँह एक ओर से दूसरी ओर तक तीस गज चौड़ा था। वह इतना गरम था कि आगिल्वी उसके निकट खड़ा नहीं हो सकता था। कुछ समय बाद ज्योतिषी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि उसकी चोटी पर का ढकना खुलने लगा है। निश्चय ही उसके भीतर कोई जीवित प्राणी वर्तमान था! तब आगिल्वी के विचार में यह बात आई कि मंगल ग्रह में कुछ समय पहले जो विराट् ज्वालाएँ देखी गई थीं उनका क्या अर्थ हो सकता था।

उस दिन तीसरे पहर के समय मैंने मंगलग्रह के निवासी को देखा। उस 'सिलिन्डर' का ढकना खुलने के समय जो बहुत बड़ी भीड़ वहाँ पर जमा थी उसमें मैं भी था। मैंने 'सिलिन्डर' के विशाल गर्त के भीतर का दृश्य देखना चाहा। मुझे ऐसा जान पड़ा उस अन्ध गुहा के भीतर कुछ छायामूर्तियाँ हिल-डुल रही हैं। कुछ समय बाद अजगर के समान कोई जीव बाहर निकलते हुए दिखाई दिया। मैं आतंक से काँप उठा। एक पिण्डाकार प्राणी, जो प्रायः चार फ़ीट चौड़ा था, उस गर्त के भीतर से कड़े कष्ट से बाहर निकला।

मेरा यह अनुमान था कि मनुष्य की आकृति से मिलता-जुलता-सा कोई जीव दिखाई देगा। पर उस विचित्र पिंडाकार प्राणी के न हाथ थे न पाँव, उसके मुँह पर न नाक थी, न ठुड्डी। केवल दो बड़ी-बड़ी आँखें चमक रही थीं, जो एक असाधारण मस्तिष्क का अस्तित्व प्रमाणित कर रही थीं। हाथ-पाँव के स्थान में सोलह बड़े-बड़े पुच्छाकार पंजे मुँह से जुड़े हुए थे। पृथ्वी का माध्याकर्षण मंगल ग्रह की अपेक्षा अधिक प्रबल होने के कारण वह जन्तु बड़े जोरों से हाँफ रहा था। उसे देखकर एक भयंकर

घृणा के भाव से मेरा सारा शरीर सिहर उठा। मैं भागा—पागलों की तरह दौड़ा चला गया।

कुछ समय बाद मैंने दूर से देखा कि एक हरे रंग का-सा प्रकाश चमक रहा है, और आग के शोले बरस रहे हैं। जो लोग आसपास में खड़े थे वे सब मृत्यु को प्राप्त होकर गिर पड़े। पर फिर भी मैं ठीक-ठीक अनुमान न लगा सका कि मामला क्या है। सहसा मेरी समझ में सारी बात आ गई। मैं और भी अधिक वेग से भागा।

उस रात आस-पास के स्थानों में रहने वाले लोग निःशंक होकर सोए, यद्यपि बहुत से मकान जलकर राख हो चुके थे और चीड़ के पेड़ों ने लाल मशालों का रूप धारण कर लिया था। लोगों के निश्चिन्त रहने का कारण यह था कि मंगल-ग्रह के जो निवासी पृथ्वी पर आक्रमण करने आए थे वे बड़े ढीले-ढाले और सुस्त दिखाई देते थे, और हम लोगों को यह विश्वास हो गया था कि केवल एक बम से वे समाप्त हो जावेंगे। और जब हम सब सो रहे थे, तो मंगलवासी 'सिलिंडर' के भीतर छिपी हुई उन भयंकर मशीनों को ठीक करने में लगे हुए थे जो हमारे वैज्ञानिकों की कल्पना के अतीत थीं, और जो शीघ्र ही यह प्रमाणित करने वाली थीं कि वे लोग उतने सुस्त और अशक्त नहीं हैं जितना हम उन्हें समझते थे। उसी रात एक और 'सिलिन्डर' आकाश से नीचे गिरा; और आठ और 'सिलिन्डर' आकाश-मार्ग से नीचे को चले आ रहे थे।

दूसरे दिन रात के समय मैंने मंगलवासियों का प्रलयकाण्ड देखा। उनकी एक सौ फ़ीट ऊँची मशीनें तीन विशाल टाँगों के बल पर मेल गाड़ी की रफ़्तार से एक स्थान से दूसरे स्थान में चली जा रही थीं। मंगलवासी उन मशीनों की चोटियों पर बैठे हुए थे। उनसे जो कालान्तक अग्नि की ज्वालाएँ निकल रही थीं और

दिया था, जिसके कारण समस्त सजीव प्राणी और पेड़-पौदे मुरझाकर नष्ट हो गए थे। लण्डन के साठ लाख मनुष्य पागलों की तरह सड़कों में बिलबिलाते हुए भागे चले जा रहे थे। ऐसा मालूम होता था, जैसे सड़क-रूपी नदियों में बाढ़ आ गई हो।

मैं बहुत दूर पहुँचकर एक झाड़ी के नीचे छिप गया और ऊँघने लगा। वहीं मेरा परिचित पादड़ी भी आ पहुँचा। वह आतंक के कारण पागल-सा हो उठा था, और मारे भय के उसने मुझे अपनी दोनों बाँहों से जकड़ लिया। हम दोनों एक मुफस्सिल की ओर चले गए, और वहाँ एक खाली मकान में जा पहुँचे। आधी रात के समय फिर एक बार बिजली का-सा तीव्र प्रकाश चमक उठा। जब सुबह हुई तो हमने एक छेद से झाँककर बाहर की ओर देखा। हम लोगों के भय का ठिकाना न रहा। जब हमने देखा कि बाहर बाग़ में एक मंगलवासी उपस्थित है। उसके पास ही ज़मीन में गडा हुआ वही पूर्व-परिचित भीषण 'सिलिन्डर' वर्तमान था।

चौदह दिन तक मैं उसी मकान में छिपा रहा, इसलिये मैं जितने दानवों को देख सका उतने शायद ही किसी दूसरे ने देखे हों। उनकी विज्ञानोत्तर मशीनों के आश्चर्यमय चक्रजालों की विशेषताओं का बहुत-कुछ परिचय प्राप्त करने की सुविधा मुझे प्राप्त हुई थी। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मंगलवासी दानवाकार जन्तु हम मनुष्यों को वैज्ञानिक उन्नति में कई शताब्दियाँ पीछे छोड़ चुके हैं। मेरी यह धारणा है कि प्रकृति ने उन्हें केवल अपने मस्तिष्क को विकास की चरम सीमा तक पहुँचाने की सुविधा प्रदान की है, और हृदय की भावुकता का लेश भी उनमें नहीं रह गया है। मुझे सबसे अधिक आश्चर्य इस बात पर होता था कि वे लोग न तो कुछ खाते थे, न सोते थे। उन लोगों में लैंगिकता का भी कोई चिह्न मुझे नहीं दिखाई दिया। मैंने यह अनुमान लगाया कि

उनके बच्चे उसी नियम से उत्पन्न होते होंगे जिस नियम से मूँगे के। मुझे जो बात सबसे अधिक वीभत्स मालूम हुई वह यह थी कि वे लोग भोजन के बदले अपने शरीर में मनुष्यों के रक्त का इञ्जेक्शन देते थे।

पादड़ी ने जब यह दृश्य देखा, तो वह पूर्ण रूप से पागल हो उठा और चिल्लाने लगा। मैंने देखा कि उसके चिल्लाने से मंगल-वासियों को हमारे उस मकान में छिपने की बात मालूम हो जायगी। मैंने उसे चुप करने का पूरा प्रयत्न किया। पर वह एकदम विक्षिप्त हो गया था, वह क्यों मानता। आत्मरक्षा का कोई उपाय न देखकर मैं उसे पकड़कर रसोई घर ले गया। वहाँ माँस को कूटकूटकर क़ीमा बनाने का एक छुरा रखा था, उससे मैंने उस पागल पादड़ी को काट कर गिरा दिया। ठीक उसी समय मैंने खिड़की में दो बड़ी-बड़ी आँखों को चमकते हुए देखा। मैं भागकर कोयला रखने के तहख़ाने में जा छिपा। अपने सिर के ऊपर फ़र्श में मैंने धम-धम का शब्द सुना, और इसके बाद ऐसा जान पड़ा जैसे किसी भारी चीज़ को फ़र्श पर घसीटते हुए कोई लिए जा रहा है।

जब कोयले के तहख़ाने के दरवाज़े पर मैंने खट-खट का शब्द सुना, तो तत्काल मैंने अपने ऊपर लकड़ियों और कोयलों का ढेर रख लिया। छोटे-छोटे छिद्रों से होकर मैंने एक मशीन का एक भयंकर हाथ देखा। वह किसी सजीव प्राणी के हाथ की तरह चारों ओर घूम कर यह अन्दाज़ लगा रहा था कि उस कमरे में क्या है, और क्या नहीं। एक बार वह मेरे बूट की एड़ी तक पहुँच गया। मैं भय से प्रायः चिल्ला उठा। पर शीघ्र ही वह मशीन वहाँ से हट गई।

प्रायः एक सप्ताह तक मैं उसी अवस्था में पड़ा रहा। इसके बाद मैंने बाहर की ओर देखने का साहस किया। मकान के छिद्र से मैं पहले बाहर झाँका करता था उसे एक प्रकार की लाल घास

से ढक दिया गया था। उस घास को मंगलवासी अपने साथ लाए थे। मंगलग्रह में निश्चय ही सब प्रकार के घास-पात और पेड़-पौदे लाल रंग के होते होंगे। उस घास को अलग हटाकर मैंने बाहर को झाँका। सामने का बाग़ खाली हो गया था। वहाँ कोई मंगल-वासी नहीं था।

मैं बाहर निकला। किसी भी प्राणी का कोई चिह्न कहीं नहीं दिखाई देता था। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था—केवल भाँय-भाँय का शब्द सुनाई देता था। उस वीरान स्थान को पार करके मैं लण्डन की ओर चला। जब मैं विम्बलडल कामन में पहुँचा, तब पहली बार मुझे एक मनुष्य दिखाई दिया। उसके पास खाने-पीने का सामान था, और भविष्य के लिये कार्यक्रम उसके मस्तिष्क में थे। वैज्ञानिक साधनों में उन्नति करके विजित मानव विजेता मंगलवासियों से किस प्रकार अपना बदला चुका सकेगा, इस सम्बन्ध में बहुत-से आशावादी स्वप्न उसके मस्तिष्क में मँडरा रहे थे। मैं कुछ समय तक उसके साथ रहा। जब काफ़ी आराम कर चुका, और शरीर में कुछ बल का अनुभव करने लगा, तो मैं नष्टप्राय लण्डन की सड़कों में जाकर चक्कर लगाने लगा।

विराट् नगर एकदम सूना पड़ा हुआ था। इधर-उधर मृतकों के ढेर पड़े हुए थे, जो ज़हरीले धुएँ से झुलस गए थे। जब मैं दक्षिण केन्सिगटन के पास पहुँचा, तो मैंने किसी को " उल्ला! उल्ला!" शब्द से कराहते हुए सुना। वह बड़ा भयंकर और विकट शब्द था। पर वह शब्द कौन कर रहा है और कहाँ से, इस बात का अनुमान मैं नहीं कर सका। बाद में मैंने देखा कि वह एक मंगलवासी है।

दूसरे दिन मैंने एक अद्भुत दृश्य देखा। जो मंगलवासी कराह रहा था, वह निश्चल अवस्था में स्थित था। उसके तीन और साथी

भी उसके पास स्थिर खड़े थे। मैं उस भौतिक दृश्य को देखकर आतंकित हो उठा। मैं साहस करके उनके निकट गया। मैंने देखा कि चील-कौवे मंगलवासियों की धातु-निर्मित टोपों के भीतर से किसी चीज़ को नोच रहे हैं। कुछ दूर आगे बढ़कर एक ऊँचे चबूतरे पर से मैंने नीचे मंगलवासियों के 'कैम्प' का दृश्य देखा। सब मंगलवासी—जिनकी संख्या पचास के लगभग थी—मरे पड़े हुए थे। कुछ की लाशें मशीनों पर पड़ी हुई थीं और कुछ ज़मीन पर लोट रही थीं। वे लोग अपने आश्चर्यजनक मस्तिष्क की सहायता से मानव पर विजय प्राप्त करने में सफल हुए थे, सन्देह नहीं, पर मनुष्य के घातक शत्रु—रोगों के कीटाणुओं के आगे वे भी परास्त हो गए।

नाशलीला कैसी ही भयंकर क्यों न रही हो, पर अन्त में विनाशकों का स्वयं नाश हो गया। शीघ्र ही मानवता फिर से जाग पड़ेगी. और फिर से नया निर्माण-कार्य प्रारंभ हो जायगा, यह सोचकर मैंने आकाश की ओर दोनों हाथ बढ़ाये और भगवान को धन्यवाद देने लगा। केवल एक वर्ष—इससे अधिक समय न लगेगा। यह सोचकर मेरे पीड़ित चित्त को बड़ा सन्तोष प्राप्त हुआ।

—:o:—

चार्ल्स डिकंस

चार्ल्स जान हफ्रेम डिकन्स का जन्म इंगलैण्ड के अन्तर्गत पोर्टसी नामक स्थान में ७ फरवरी, १८१२ को हुआ।

उपन्यासों और कहानियों की ओर बचपन से ही उसका झुकाव था। उसके पिता के पुस्तकालय में बहुत से साधारण कोटि के उपन्यास रखे पड़े थे। उन्हें वह बड़े चाव से पढ़ा करता था और उन्हें पढ़ने पर उसके मन में स्वयं उपन्यास लिखने की इच्छा उत्पन्न हुई। बाद में जब वह लण्डन के कुछ सम्वाद-पत्रों का रिपोर्टर बना तो उसे अपनी लेखन-कला का परिचय देने का प्रथम अवसर प्राप्त हुआ। कुछ ही समय बाद उसने उपन्यास लिखना आरम्भ कर दिया। सन् १८३७ में उसका सुप्रसिद्ध उपन्यास 'पिकविक पेपर्स' प्रकाशित हुआ। उसके छपते ही साहित्य-संसार में उसकी धूम मच गई। इस उपन्यास में डिकन्स ने कुछ परिहासात्मक चरित्रों का चित्रण ऐसे चुभते हुए ढंग से किया है कि इस क्षेत्र में उसकी प्रतिभा वास्तव में आश्चर्यजनक जान पड़ती है। एक वर्ष बाद उसने 'आलिवर ट्विस्ट' नामक उपन्यास लिखा और उसके बाद शीघ्र ही 'निकोलस निकलबी', 'ओल्ड क्यूरिओसिटी शाप', 'बार्नबी रूज' आदि रचनाएँ प्रकाशित हुईं। उसने बहुत बड़े आकार के प्रायः सोलह उपन्यास

लिखे हैं। उसका अन्तिम उपन्यास 'दि मिस्ट्री आफ़ एडविन ड्रूड' अधूरा ही रह गया।

उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना 'डेविड कापरफ़ील्ड' है। इस उपन्यास की विशेषता इस बात पर भी है कि उसमें डिकन्स ने दूसरे रूप में स्वयं अपने जीवन का वर्णन किया है। डिकन्स के अधिकांश उपन्यास मासिक पत्रों में क्रमागत रूप से निकला करते थे। प्रत्येक अंक के बाद दूसरे अंक में कथा का अगला अंश पढ़ने के लिये पाठकगण अत्यन्त अधीरता के साथ उत्सुक रहते थे। उसकी रचनाओं ने जैसी लोकप्रियता पाई, वैसी ही साहित्यिक सफलता भी उसे मिली। अमेरिका में उसकी रचनाओं का आदर इंगलैण्ड से भी अधिक हुआ। वह जब अमेरिका गया, तो वहाँ उसका अत्यन्त सम्मानपूर्ण स्वागत हुआ।

साहित्यिक जीवन में यद्यपि उसने बहुत बड़ी सफलता प्राप्त की और सामाजिक जीवन में बहुत बड़ा सम्मान पाया, पर उसका गृहस्थ जीवन बहुत दुःखपूर्ण रहा। ७ जून, १८७० को केन्ट के अन्तर्गत गैडशिल प्लेस में उसकी मृत्यु हुई।

—:०:—

डेविड कापरफील्ड

डेविड कापरफील्ड का जन्म उसके पिता की मृत्यु के छः महीने बाद हुआ। उसके जन्म के समय उसकी दुःखिनी माँ संसार में निपट अकेली थी। केवल उसकी सहृदय नौकरानी पेगाटी ने उसका साथ नहीं छोड़ा था। पेगाटी के मुख की आकृति हास्योत्पादक थी और वह ऐसी मोटी थी कि जब किसी काम से तनिक भी ज़ोर पड़ता, तो उसके गाउन के बटन टूट पड़ते थे।

डेविड कापरफील्ड की माँ क्लारा कापरफील्ड अभी युवती थी और बहुत सुन्दरी थी। इसलिये उसने डेविड के जन्म के कुछ समय बाद मर्डसटन नामक एक गंभीर-प्रकृति और कठोर-स्वभाव व्यक्ति से विवाह कर लिया। इस विवाह के अवसर पर डेविड को उसके मामा के यहाँ पेगाटी के साथ भेज दिया गया। उसका वह मामा यार्मौथ नामक स्थान में अपनी भतीजी एमिली और भतीजे हैम के साथ रहता था। एमिली से डेविड की ख़ूब बनती थी और इसी कारण मामा के यहाँ उसके दिन बड़ी प्रसन्नता के साथ बीते।

जब डेविड घर लौटा, तो उसका सौतेला बाप उसके प्रति विकट विद्वेष का भाव प्रकट करने लगा। फल यह हुआ कि उसे किसी एक स्कूल में पढ़ने और रहने के लिये भेज दिया गया। उस स्कूल का शिक्षक क्रीकल बहुत ही नीच और अत्यन्त निष्ठुर था। दूसरों को कष्ट पहुँचाने में उसे हार्दिक आनन्द प्राप्त होता था। डेविड के दिन वहाँ बड़े कष्ट में बीते। केवल एक सान्त्वना वहाँ थी। जेम्स स्टीरफोर्थ नामक एक बहुत ही सुन्दर आकृति और मधुर प्रकृति लड़के से उसका स्नेह हो गया था।

कुछ समय बाद उसकी माँ की मृत्यु हो गई। अपने कुटिल-स्वभाव पति के कठोर बर्ताव का बड़ा घातक प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर पड़ चुका था। माँ के मरने पर स्कूल में पढ़ने की सुविधा डेविड को प्राप्त न हो सकी। कई महीनों तक वह घोर कष्ट में रहा। अन्त में बहुत चेष्टाओं के बाद वह लण्डन पहुँचा और मर्डसटन एण्ड ग्रिम्बी नामक शराब के व्यापारियों के गोदाम में उसे नौकरी मिल गई। उस समय उसकी अवस्था केवल दस वर्ष की थी। वहाँ उसे मजूरों की तरह रात-दिन खटना पड़ता था। भरपेट खाने को नहीं मिलता था और सब समय गालियाँ खानी पड़ती थीं और डाँट-डपट सुननी पड़ती थी। वह विल्किन्स मिकाबर नामक एक व्यक्ति के यहाँ रहता था। विल्किन्स मिकावर यद्यपि बड़े सहृदय स्वभाव का व्यक्ति था, पर उसकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय रहती थी। मिकाबर और उसकी पत्नी, दोनों के प्रति डेविड बड़ा सद्भाव रखता था। जब अन्त में ऐसी स्थिति आ पहुँची कि मिकाबर के ऊपर कर्ज़ का बोझ बहुत अधिक लद जाने के कारण उसे जेल जाना पड़ा, तो डेविड के दुःख का पार न रहा। वह एक दूसरे मकान में रहने लगा, पर वहाँ उसका जी नहीं लगता था और वह अपने को संसार में निपट अकेला समझकर बहुत उदास रहता था।

अन्त में एक दिन डेविड ने अपनी एक बुढ़िया फूफी—बेट्सी ट्राटवुड—के यहाँ जाने का निश्चय किया। वह डोवर में रहती थी। डेविड जब उसके पास पहुँचा, तो उस अनाथ लड़के के प्रति उसके मन में स्नेहभाव जग गया। वह अविवाहिता और फलतः निःसन्तान थी, इसलिये उसने डेविड को गोद ले लिया और उसे केन्टरबरी के एक स्कूल में पढ़ने के लिये भेज दिया। वहाँ डेविड अपनी फूफी के वकील मिस्टर विकफील्ड नामक एक व्यक्ति के यहाँ रहने लगा। विकफील्ड की लड़की एग्नेस का स्वभाव बहुत

शान्त और स्निग्ध था। डेविड को उसके साहचर्य में रहने से बड़ा उत्साह मिलता था।

'आनस' के साथ ग्रेजुएट बनने के बाद डेविड को स्पेनला एण्ड जार्किन्स के दफ़्तर में काम मिल गया। स्पेनला की अत्यन्त सुन्दरी लड़की डोरा से उसका प्रेम हो गया। उसके मन में डोरा से विवाह करने की इच्छा अत्यन्त प्रबल हो उठी। इसी बीच उसने सुना कि उसकी पुरानी दाई पेगाटी, जो अपने पति के साथ यार्मौथ में रहने लगी थी, बड़े संकट में पड़ी हुई है और उसका पति मृत्यु-शय्या में है। उसे सान्त्वना देने के उद्देश्य से डेविड यार्मौथ चला गया। वहाँ कुछ समय रहने पर एक दिन उसने अकस्मात् यह समाचार सुना कि उसकी ममेरी बहन एमिली उसके पुराने साथी जेम्स स्टीरफोर्थ के साथ भागकर कहीं चली गई है। डेविड को यह सुनकर बड़ी ग्लानि हुई। इसका कारण यह था कि अपने मामा के परिवार से स्टीरफोर्थ का परिचय उसीसे कराया था। एमिली कुछ समय बाद लौट आई। उसकी भावुकता वास्तविक अनुभव की चोट से दूर हो गई थी। उसने अपने चाचा से अपनी भूल के लिये क्षमा माँगी और आन्तरिक पश्चाताप प्रकट किया।

डेविड जब यार्मौथ से लौटकर लण्डन पहुँचा, तो वहाँ उसने यह दुःखद समाचार सुना कि उसकी फूफी अपनी सम्पत्ति का अधिकांश भाग खो चुकी है। डेविड के लिये अब यह आवश्यक हो गया कि पारिवारिक आय को वह किसी उपाय से बढ़ावे। दफ़्तर के काम के बाद जो समय उसे बचता था उसे वह कुछ साहित्यिक तथा बाबूगिरी के कामों में नियोजित करके कुछ ऊपरी आय प्राप्त कर लेता था। डोरा का ध्यान उसे सब समय रहता था, पर स्पेनला अपनी लड़की का विवाह डेविड के समान एक साधारण श्रेणी के व्यक्ति से करना नहीं चाहता था। पर एक दिन अकस्मात् स्पेनला की मृत्यु हो गई। डोरा के भोलेपन के कारण पिता की

मृत्यु के बाद उसे पैतृक सम्पत्ति के रूप में एक कौड़ी भी नहीं मिली। डेविड ने देखा कि उसकी आय यद्यपि बहुत कम है, फिर भी ढंग से चलने पर उतने से वह अपना विवाहित जीवन सुखपूर्वक बिता सकता है, इसलिये उसने डोरा से विवाह कर लिया।

पर विवाह के बाद डेविड का भ्रम दूर हुआ। उसने देखा कि डोरा बहुत सुन्दरी है, सहृदय है और निष्कपट है; पर अभी तक उसके स्वभाव में लड़कपन वर्तमान है और जीवन का अनुभव प्राप्त करने की कोई आकांक्षा उसके मन में न होने से वह अपने उत्तरदायित्व को समझने में असमर्थ है। डेविड उससे अब भी पहले की ही तरह प्रेम करता था, पर उसकी उत्तरदायित्वहीनता के कारण दुःखी रहता था।

डेविड की फूफी—बेट्सी ट्राटवुड—को जो भयंकर आर्थिक हानि हुई थी उसका मूल कारण उसके वकील विकफील्ड के नीच-स्वभाव और कुरूप क्लार्क उरिया हीप का षड्यन्त्र था। उसने धोखे से विकफील्ड को अपने वश में करके बुढ़िया के सारे कारोबार पर धीरे-धीरे अपना पूर्ण अधिकार जमा लिया था। इधर जब मिकाबर जेल से मुक्त हुआ, तो उरिया हीप ने उसे अनुभवी समझकर अपने यहाँ बहुत ही कम वेतन पर नियुक्त कर लिया। बीच-बीच में मिकाबर को हीप से क़र्ज़ लेने के लिये बाध्य होना पड़ता था। दुष्ट हीप इस प्रकार मिकाबर को अपने वश में करके उसे अपनी जालसाज़ी के कामों में सहायता पहुँचाने के लिये बाध्य करने लगा।

मिकाबर धीरे-धीरे उरिया हीप की चालबाज़ियों से तंग आ गया और एक दिन केन्टरबरी में डेविड और उसकी फूफी से जाकर मिला। उसने हीप के लिये अपनी आन्तरिक घृणा प्रकट की और उसके सब चक्रों का भण्डाफोड़ कर दिया। फल यह हुआ कि मिकाबर की सहायता से डेविड ने बेट्सी ट्राटवुड की सारी

सम्पत्ति का फिर से उद्धार कर लिया और उरिया हीप को उसके कृत्य के अनुरूप दण्ड मिला।

कुछ समय बाद डोरा की मृत्यु हो गई। डेविड उसे प्रेम से 'कली' (ब्लासम) कहकर पुकारा करता था और वह 'कली' के समान ही सुकुमार निकली—शीघ्र ही मुरझा गई। विकफील्ड की सहृदय-स्वभाव लड़की एग्नेस ने सदा की भाँति इस बार भी डेविड के प्रति आन्तरिक समवेदना दिखाकर उसे सान्त्वना दी। कुछ समय बाद डेविड अपना दुःख भूलने के उद्देश्य से विदेश चला गया। इसी बीच मिकाबर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के उद्देश्य से बेट्सी ट्राटवुड ने उसे आस्ट्रेलिया में जाकर एक नया कारोबार खड़ा करने की सलाह देते हुए आर्थिक सहायता प्रदान की। जिस जहाज़ में मिकाबर सपरिवार आस्ट्रेलिया को रवाना हुआ उसी में एमिली और उसका स्नेही चाचा भी रवाना हुए।

इस घटना के कुछ समय पहले डेविड एमिली के जीवन की 'ट्रेजेडी' की अन्तिम परिणति देख चुका था। बात यह हुई थी कि यार्मौथ के पास एक जहाज़ प्रबल आँधी के धक्कों के कारण टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया था। उसके मास्तूल से चिपटा हुआ एक आदमी दिखाई दिया। उसके प्राण बचाने के उद्देश्य से एमिली का भाई हैम पानी में कूद पड़ा। फल यह हुआ कि हैम स्वयं डूब गया और जिस व्यक्ति को बचाने के उद्देश्य से वह गया था, वह भी न बच सका। जब उस व्यक्ति की लाश बहकर आई, तो मालूम हुआ कि वह एमिली का प्रेमिक स्टीरफोर्थ था!

तीन वर्ष तक डेविड विदेश रहा, इसके बाद जब वह इंगलैंड वापस आया, तो उसे यह अनुभव हुआ कि एग्नेस विकफील्ड उसके अज्ञात में उसके हृदय पर पूर्ण अधिकार जमा चुकी है। दिन पर दिन एग्नेस के प्रति उसका प्रेम भाव बढ़ता चला गया और वह अधीर हो उठा। बेट्सी ट्राटवुड को यह सन्देह हो रहा

था कि चूँकि डेविड अपने सम्बन्ध में एग्नेस के यथार्थ मनोभाव से अभी तक अपरिचित है, इस कारण उससे विवाह का प्रस्ताव करने से डर रहा है। इसलिये उसने एक उपाय सोचकर एक दिन डेविड से कहा कि एग्नेस का विवाह शीघ्र ही किसी दूसरे व्यक्ति से हो जाने की सम्भावना है। इस सूचना से डेविड के हृदय को भयंकर चोट पहुँची, सन्देह नहीं; पर साथ ही एग्नेस की प्रसन्नता से स्वयं भी प्रसन्न होने की भावना उसके मन में जगी। उसने एग्नेस के पास जाकर कहा कि उसे उसके विवाह का संवाद सुनकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है। इस बात का फल यह हुआ कि डेविड के आगे एग्नेस के मन की यथार्थ भावना प्रकट हो गई। एग्नेस ने यह सूचित किया कि उसके विवाह का समाचार ग़लत है और डेविड के अतिरिक्त किसी भी दूसरे व्यक्ति से उसने कभी प्रेम नहीं किया और न किसी दूसरे से विवाह करने की इच्छा ही उसके मन में रही है। डेविड के हर्ष का ठिकाना न रहा। शीघ्र ही उन दोनों का विवाह हो गया।

ज्यों-ज्यों वर्ष बीतते चले गए त्यों-त्यों एग्नेस के मातृत्व का बोझ बढ़ता चला गया। पर अपने सहृदय पति का अटूट प्रेम पाकर और बाल-बच्चों पर स्नेह बरसाकर वह अपने नारी-जीवन को सफल समझती थी। डेविड भी अपने पारिवारिक जीवन से सुखी और सन्तुष्ट रहने लगा।

—:o:—

हालेवी

लुदोविक हालेवी का जन्म सन् १८३४ में पैरिस में हुआ। उसका पिता एक सुयोग्य साहित्यिक था और कविता, नाटक, साहित्यिक निबन्ध आदि लिखा करता था। उसका चचा पैरिस की नाट्यशालाओं के लिये सुन्दर-सुन्दर संगीत-नाट्यों की रचना किया करता था। इस प्रकार लुदोविक का जन्म एक सुन्दर साहित्यिक वातावरण में हुआ।

सन् १८६० में लुदोविक हालेवी को साहित्य-रचना की सर्वप्रथम सुविधा प्राप्त हुई, जब पैरिस की एक विख्यात नाट्यशाला के मैनेजर ने उससे एक नाटक लिखने की प्रार्थना की। हालेवी ने आंरी माइलहाक नामक एक लेखक के सहयोग से नाटक तैयार किया और प्रायः बीस वर्ष तक दोनों सम्मिलित रूप से नाटक पर नाटक लिखते चले गए। उन नाटकों ने अपनी कला-सम्बन्धी विशिष्टता के कारण फ्रेन्च साहित्य-जगत् में धूम मचा दी।

पर हालेवी ने जिस रचना से अन्तर-राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की, वह है 'ल आब्बे कांस्तांतां' (पादड़ी कान्स्टेन्टिन)। यह उपन्यास फ्रान्स और जर्मनी के युद्ध (१८७२) के ठीक बाद ही लिखा गया था।

यह कहा जाता है ज़ोला ने अपने उपन्यासों में केवल दुष्ट स्त्री-पुरुषों

का ही वर्णन करके जनता के मन में एक प्रकार का मानव-विद्वेष सा उत्पन्न कर दिया था। इसलिये जब हालेवी का उपन्यास 'ल आब्बे कांस्तांतां' प्रकाशित हुआ, तो उसमें उन्नत-स्वभाव स्त्री-पुरुषों का सुन्दर चरित्र-विश्लेषण देखकर साहित्यिक जनता ने मुक्त हृदय से उसका स्वागत किया। हालेवी के इस उपन्यास को गोल्डस्मिथ के 'विकार आफ़ वेकफील्ड' के साथ स्थान दिया जाता है।

८ मई, १९०८ को पैरिस में हालेवी की मृत्यु हुई।

—:o:—

पादड़ी कान्सटेन्टिन

बुड्ढा पादड़ी कान्सटेन्टिन गाँव की एक गर्दभरी सड़क में दृढ़ पगों से चला जा रहा था। इस गाँव में उसे तीस वर्ष हो गये थे। 'लांगवाल-भवन' के फाटक के पास वह ठहर गया और खम्भों पर जो नीले रंग के बड़े-बड़े 'पोस्टर' चिपकाए गये थे, उन्हें देखकर उसे दुःख हुआ। उस क़िलेनुमाँ विशालभवन का मालिक—मार्किस—पादड़ी का बड़ा पुराना मित्र था। हाल ही में उसकी मृत्यु हुई थी। 'पोस्टरों' में उसके क़िले की बिक्री की विज्ञप्ति थी। दो परदेशी महिलाओं ने उसे खरीद लिया था। उनमें से एक का नाम मिसेज़ स्काट था और दूसरी उसकी बहन बेटिना थी, जो अत्यन्त सुन्दरी थी। दोनों महिलाएँ अमेरिकन थीं। उनके सम्बन्ध में गाँव में तरह-तरह की अफ़वाहें फैल चुकी थीं। लोगों का कहना था कि मिसेज़ स्काट के पास अतुल सम्पत्ति है। दस वर्ष पहले दोनों बहनें न्यूयार्क की सड़कों में भीख माँगती फिरती थीं, पर आज वे महज विनोद के लिये अपनी खिड़कियों से मुट्ठी-मुट्ठी भर सोना बिखेरती रहती हैं। इस अफ़वाह पर गाँव के लोगों ने आँखें मूंदकर विश्वास कर लिया था और जो लोग अपने को कुछ प्रतिष्ठित समझते थे, उनके मन में यह आशंका उत्पन्न हो गई थी कि वे दोनों अकुलीन स्त्रियाँ धन की मत्तता के कारण उनपर शान जमाया करेंगी। पादड़ी ने भी इसी तरह की बातें सुनी थीं, इसलिये मार्किस के भवन की नई मालकिनों के प्रति उसके मन में एक विरोधी भाव उत्पन्न हो गया था, यद्यपि उसने अभी उन्हें देखा तक न था।

पर जब मिसेज़ स्काट और उसकी बहन बेटिना वहाँ रहने के

लिये आ पहुँची और गाँव में पहुँचने के बाद तत्काल पादड़ी से मिलने गईं, तो उनके सम्बन्ध में पादड़ी को अपनी सम्मति बदलनी पड़ी। उनकी बातों से और व्यवहार से उसे मालूम हुआ कि दोनों बहनें बड़ी सभ्य, सुशील, धार्मिक और उदार-स्वभाव हैं। दोनों सुन्दरी थीं, पर छोटी बहन बेटिना पर्सिवल का रूप विशेष रूप से आकर्षक था। दोनों की बड़ी-बड़ी काली आँखें सब समय मधुर मुसकान की झलक से चमकती रहती थीं। दोनों के सुन्दर सुनहले बाल धूप में लास-पूर्वक लहराया करते थे।

पादड़ी के घर में दोनों बहनों का परिचय जाँ रेनोद से हुआ। जाँ रेनोद गाँव के एक डाक्टर का लड़का था। वह डाक्टर पादड़ी का परम मित्र था। दोनों मित्रों ने १८७० के युद्ध में, जब कि जर्मनों ने फ्रान्स पर आक्रमण किया था, बीच युद्धभूमि में साथ-साथ सेवा-कार्य किया था, अकस्मात् डाक्टर के शरीर पर एक गोली लग गई और तत्काल उसकी मृत्यु हो गई। जाँ में अपने पिता की सहृदयता, साहस, परोपकार, सच्चरित्रता आदि सभी गुण वर्तमान थे। इस कारण गाँव का प्रत्येक व्यक्ति उससे प्रसन्न रहता था।

पर जाँ बहुत निर्धन था और अमेरिकन बहनें कल्पनातीत रूप से धनी थीं।

धीरे-धीरे पादड़ी के साथ दोनों बहनों की मित्रता गाढ़ से गाढ़तर होती चली गई और साथ ही जाँ रेनोद से उनका परिचय घनिष्ठ रूप धारण करता चला गया। पादड़ी को यह विश्वास हो गया कि मिसेज़ स्काट और बेटिना के सम्बन्ध में जो यह अफ़वाहें फैलाई गई थीं कि वे कुछ समय पहले सड़कों में भीख माँगती फिरती थीं, उनका चरित्र सन्देहोत्पादक है, वे उच्छृंखल स्वभाव की स्त्रियाँ हैं, आदि-आदि, वे सब बातें निराधार और निर्मूल हैं। इसमें सन्देह नहीं कि पहले वे निर्धन थीं, पर बाद में, उनके किसी सम्बन्धी की मृत्यु होने पर, वे उत्तराधिकार के रूप में एक चाँदी

की खान की मालकिन बन गई थीं। अब उनके उपासकों और प्रशंसकों की संख्या बहुत बड़ी हो गई थी। विशेष करके बेटिना के प्रति आकर्षित होने वाले पुरुषों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती चली जाती थी। उसके पुरुष-प्रशंसकों में एक फ्रेञ्च ड्यूक और एक कुलीन वंश का स्पेनिश भी था। पर बेटिना के मन में यह धारणा बद्धमूल हो गई थी कि उसके उपासक उसके रूप और गुणों पर मुग्ध होकर नहीं, वरन् उसके अतुल धन के कारण आकर्षित होकर उसके प्रति कृपाभाव दर्शाते हैं।

दोनों बहनों का स्वभाव बहुत सरल और मधुर था। सहृदयता उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि धन द्वारा गाँव के निर्धनों की सहायता करें। साथ ही यह भय भी था कि कहीं लोग यह न समझें कि वे दानशीलता के बहाने अपने धनमद का प्रदर्शन करना चाहती हैं। इसलिये उन्होंने बड़ी नम्रता-पूर्वक पादड़ी के आगे अपनी इच्छा प्रकट की और कहा कि सारा काम पादड़ी के माध्यम से ही होगा, वे केवल धन उसे सौंप देंगी। उनकी उदारता से पादड़ी के मन पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

एक दिन दोनों बहनें जब पादड़ी और जाँ के साथ गिरजे में प्रार्थना के लिये गईं, तो बेटिना ने एक भावपूर्ण राग बजाकर सब श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। बुड्ढे पादड़ी का हृदय आनन्द से गद्गद हो उठा और उसकी आँखों से भगवत् प्रेम के आँसू निकल आये।

जाँ रेनोद के मन पर दोनों बहनों के संसर्ग का जो गहरा प्रभाव पड़ा, उसने उसके हृदय में एक समस्या उत्पन्न कर दी। वह सोचने लगा—"दोनों में से कौन बहन अधिक सुन्दरी है? मेरा मन किसकी ओर अधिक झुका हुआ है?" पहले यह धारणा उसके मन में जमने लगी कि मिसेज़ स्काट का हास-विलासपूर्ण स्वभाव उसे अधिक प्रिय है, पर शीघ्र ही उसे यह अनुभव होने

लगा कि बेटिना पर्सिवल की मधुर लाज-भरी भावपूर्ण आँखों की मोहिनी अधिक मर्मस्पर्शी है।

"तब क्या मैं दोनों बहनों से प्रेम करने लगा हूँ? यह कैसे हो सकता है? एक बार में केवल एक ही स्त्री के प्रति प्रेमभाव उत्पन्न हो सकता है; दोनों स्त्रियों के प्रति आकर्षित होने का अर्थ केवल यह है कि मैं किसी से भी प्रेम नहीं करता।"

पर दिन पर दिन बेटिना पर्सिवल की ओर उसके हृदय का झुकाव तीव्र वेग से बढ़ता चला गया। बेटिना भी उसके संसर्ग में एक निराली भावाकुल अनुभूति से पुलक-विकल होने लगी। एक दिन रात के समय उसने अपनी बड़ी बहन से जाँ के सम्बन्ध में कहा—"प्रथम बार एक ऐसे व्यक्ति से मेरा परिचय हुआ है, जिसकी आँखें मुझे यह कहती हुई मालूम नहीं हुईं—'इस लड़की से विवाह करके उसकी लाखों की सम्पत्ति का अधिकारी बनने से मुझे कितना सुख नहीं होगा!'

इसके बाद जब मिसेज़ स्काट ऊपर अपने बच्चों के सोने के कमरे में चली गई, तो बेटिना अपने कमरे के बाहर बरामदे में भाव-मग्न अवस्था में बहुत देर तक खड़ी रही।

एक बार उसने अपनी बहन से कहा—"मुझे न जाने क्यों, यह स्थान बहुत प्रिय लगने लगा है।"

जाँ रेनोद इस आशा में था कि शीघ्र ही उसकी तरक्क़ी होगी और वह एक पलटन से दूसरी पलटन में नियुक्त होकर भ्रमण करता चला जायगा और अन्त में कर्नल बनकर घर वापस आवेगा। इस बात का उल्लेख एक दिन उसने बेटिना के आगे किया। बेटिना ने सहसा पूछा—"क्या तुम सदा अकेले ही रहोगे?"

"अकेले क्यों? यह कैसे सम्भव हो सकता है!"

"तो क्या तुम विवाह करने का विचार रखते हो?"

"अवश्य !"

"पर तुमने बड़े-बड़े अच्छे अवसर हाथ से जाने दिये। इसका कारण क्या है, क्या मैं जान सकती हूँ ?"

"मेरी यह धारणा है कि बिना प्रेम के विवाह करने से अविवाहित रहना कहीं श्रेयस्कर है।"

बेटिना ने एक बार मार्मिक दृष्टि से उसकी ओर देखा और उसके अन्तर की यथार्थ बात जानने का प्रयत्न किया। जाँ ने भी उसी मार्मिकता से उसके अन्तर की ओर दृष्टि प्रेरित की। इसके बाद दोनों कुछ समय तक स्तब्ध और मौन खड़े रहे। पर उस मौनावस्था में दोनों के बीच जो नीरव बातें हुईं उससे वे एक दूसरे को इतने निकट से पहचान पाये जितना महीनों के घनिष्ठ परिचय से नहीं पहचान पाये थे।

जाँ की बेचैनी बहुत बढ़ गई। जब वह अच्छी तरह जान गया कि उसका हृदय बेटिना के प्रेम से घायल हो चुका है और बेटिना के हृदय में भी प्रेम की पीड़ा ने घर कर लिया है, तो एक ओर उसके मन में भाग निकलने की आकांक्षा प्रबल हुई और दूसरी ओर इस चिन्ता से वह बेचैन रहने लगा कि जब सचमुच उसके विदा होने का समय आयगा, तो बेटिना के विछोह को वह कैसे सहन कर सकेगा।

असल बात यह थी कि जाँ केवल विशुद्ध प्रेम को महत्त्व देता था और बेटिना का धन इस विशुद्ध प्रेम की भावना में बाधा पहुँचा रहा था। यदि बेटिना धनहीन होती, तो जाँ निःशंक होकर उसे अपना हृदय समर्पित कर देता। पर वर्तमान दशा में उसके हृदय का भाव चाहे कितना ही शुद्ध क्यों न हो, बेटिना के मन से यह भाव हटाया नहीं जा सकता कि प्रेम-भावना के साथ ही उसके (जाँ के) मन में धन का लोभ भी है! यदि बेटिना ऐसा न भी

सोचे, तो उसकी बहन अवश्य ऐसा सोचेगी और यदि यह भी मान लिया जाय कि उसकी बहन भी इस प्रकार की कल्पना नहीं करेगी, तो भी यह कैसे माना जा सकता है कि समाज भी उस बात को इसी रूप में ग्रहण करेगा ? इस प्रकार के विचारों के ताने-बाने जाँ के हृदय में और मस्तिष्क में प्रतिपल जाल बुनते चले जाते थे।

पर बेटिना के मन की दशा का स्वरूप कुछ दूसरा ही था। जाँ के समान वह भी प्रेम की वेदना से विकल हो रही थी। पर उस वेदना में एक ऐसी मिठास थी जो उसके हृदय को प्रतिपल पुलकाकुल करती थी। जाँ यह जानकर कि वह प्रेम का शिकार बन गया है भयभीत हो उठा था; पर बेटिना को जब अपने सम्बन्ध में ठीक यही बात मालूम हुई, तो वह भीत न होकर एक अपूर्व हर्ष-रोमाञ्च से कन्टकित हो उठी। उसके निष्कलंक हृदय में जो भावावेग उमड़ने लगा था उसका वह स्वागत कर रही थी। फल यह हुआ था कि जाँ दिन पर दिन उदास दिखाई देता था, पर बेटिना की आँखों में प्रेम की सरस मधुरिमा का सञ्चार होने लगा।

जाँ की यह दशा थी कि वह न तो बेटिना का संग छोड़कर भाग निकलने का ही साहस कर पाता था, न उसके पास शान्तिपूर्वक रहने का धैर्य उसमें रह गया था। वह यथासंभव बेटिना से कतराकर रहने की चेष्टा करने लगा। वह यह भी सोचने लगा कि बेटिना से मिले बिना ही चुपचाप निकल भागे। "विदा होने के समय जब मैं उसका हाथ पकड़ना चाहूँगा, तो स्पर्शमात्र से वह मेरे अन्तर की सारी विकलता का हाल मालूम कर लेगी, इसलिये उससे न मिलना ही अच्छा है।" इस प्रकार का तर्क उसके मन में उदित होने लगा। पर वह यह नहीं जानता था कि उसके हृदय की कोई बात बेटिना से छिपी नहीं है—उसके लिये वह दर्पण की तरह स्पष्ट हो उठा है। वह मन-ही-मन कहने लगा—"मैं तुमसे प्रेम

करता हूँ और तुम्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखता हूँ, इसलिये मैं अब तुम्हारे पास नहीं आऊँगा।'

जब इस प्रकार की भावना मन में लेकर जाँ उस दिन रात के समय बेटिना के पास से चुपचाप भागकर अन्धकार में विलीन हो गया, तो बेटिना बहुत देर तक बरामदे में खड़ी रही और शून्य दृष्टि से बाहर की ओर देखती रही। पानी पड़ने लगा था और उसके ऊपर भी बौछार के छींटे पड़ रहे थे, पर वह अन्यमनस्क भाव से वहीं स्थिर खड़ी रही। अन्त में उसने एक लंबी साँस लेकर मन-ही-मन कहा—"मैं पहले से ही जानती थी कि वह मुझे चाहता है; पर मेरे हृदय की यह क्या दशा होने जा रही है! मैं भी तो शिकार बन चुकी हूँ!"

जाँ सीधे अपने सहृदय मित्र, पादड़ी के पास जा पहुँचा। उसे उसने यह सूचित किया कि वह शीघ्र ही पैरिस चले जाने का विचार कर रहा है और वहाँ जाकर वह अपनी बदली किसी दूसरी पलटन में कराना चाहता है। उसने भाव के आवेश में यह बात पादड़ी के आगे स्वीकार कर दी कि वह बेटिना से प्रेम करता है और इसी कारण गाँव को सदा के लिये छोड़ देना चाहता है।

उसने कहा—"मेरे सिर पर पागलपन का भूत सवार हो गया है। यदि बेटिना निर्धन होती, तो मुझे कोई चिन्ता न होती। पर—"

बुड्ढे ने समवेदना के साथ कहा—"सुनो जाँ, मुझे पूरा विश्वास है कि बेटिना भी तुमसे प्रेम करती है।"

"मैं भी इस बात पर विश्वास करता हूँ। यही कारण है कि मुझे यहाँ से भाग निकलना होगा। उसका धन हमारे प्रेम के मार्ग में रोड़े अटका रहा है।"

सहसा किसी ने बाहर से दरवाज़े पर धक्का दिया। वह बेटिना थी। बेटिना ने भीतर प्रवेश करने पर जाँ को देखा, तो बोली—

"मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम यहाँ मिल गए।" यह कह कर उसने बिना लेशमात्र झिझक के जाँ के दोनों हाथों को अपने हाथों से पकड़ लिया और फिर पादड़ी को लक्ष्य करके उसने कहा—"देखिए पादड़ी साहब, मैं आज अपने हृदय की एक गुप्त बात स्वीकार करने के उद्देश्य से आपके पास आई हूं।" यह कहते हुए वह साथ-ही-साथ अपने मन में कह रही थी—"मैं प्यार पाना और प्यार करना चाहती हूँ। मैं प्रसन्न होने और प्रसन्न करने की लालसा रखती हूँ। चूँकि जाँ में इतना साहस नहीं है कि वह स्पष्ट रूप से अपने अन्तर का हाल कह सुनावे, इसलिये मैं ही दोनों की ओर से कह सुनाऊँगी।"

इसके बाद उसने पादड़ी से कहा—"मैं धनी हूँ, यह बात आपसे छिपी नहीं है। पर मैं आपको विश्वास दिलाना चाहती हूँ कि मैं धन को धन के लिये नहीं चाहती, बल्कि इसलिये चाहती हूँ कि उसके द्वारा मैं दूसरों की सेवा करने में समर्थ हूँ। मेरी बहुत दिनों से यह हार्दिक इच्छा रही है कि मुझे ऐसा पति प्राप्त हो, जो मेरे धन के सदुपयोग में मेरी सहायता कर सके। पर इसके अतिरिक्त एक बात मैं और सोचती रही हूँ। वह यह कि जिस व्यक्ति से मैं प्रेम करती हूँ वही मेरा पति हो। यहाँ एक व्यक्ति ऐसा है जिसने इस बात को छिपाने में कुछ उठा नहीं रखा कि वह मुझसे प्रेम करता है। क्यों जाँ, मुझसे प्रेम करते हो न?"

जाँ ने बेटिना के नैतिक साहस से स्तंभित होकर सिर नीचा करके अत्यन्त धीमे स्वर में कहा—"हाँ।" उसे ऐसा जान पड़ता था जैसे उसके किसी घोर दुष्कर्म की गुप्त बात प्रकट हो पड़ी है। वह अत्यन्त संकुचित हो उठा।

बेटिना बोली—"मैं जानती थी। पर मैं आज तक इस प्रतीक्षा में थी कि तुम स्वयं अपने मुँह से अपने हृदय की यह गुप्त बात प्रकट करोगे। तुमने ऐसा नहीं किया, इसलिये आज मैंने

बुलवर-लिटन

एडवर्ड जार्ज बुलवर-लिटन का जन्म २५ मई, १८०३ को लण्डन में हुआ। छुटपन से ही उसकी प्रतिभा अपना परिचय देने लगी थी। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में उसने अपनी कविताओं का एक संग्रह छपाया। उसी अवस्था में वह एक लड़की के प्रेम का शिकार बन गया। उसके उस प्रेम ने ऐसा गंभीर रूप धारण कर लिया कि जब लड़की के पिता ने उसके विवाह-प्रस्ताव को लड़कपन समझकर उसकी अवज्ञा की, तो उसकी मानसिक स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक हो उठी। इसके कुछ ही वर्ष बाद उस लड़की की मृत्यु हो गई। बुलवर का कहना था कि इस घटना से उसका सारा जीवन दुःखमय बन गया। जब वह कैम्ब्रिज में पढ़ता था, तो उसे एक कविता पर पदक प्राप्त हुआ और वहाँ उसने अपनी कविताओं का दूसरा संग्रह प्रकाशित कराया।

सन् १८२७ में प्रथम प्रेम के धक्के से वह बहुत-कुछ संभल चुका था और एक अत्यन्त सुन्दरी युवती से उसने अपनी माँ की इच्छा के विरुद्ध विवाह कर लिया। माँ का कहना न मानने के कारण बाद में उसे बहुत पछताना पड़ा। कारण यह था कि उसकी स्त्री जितनी ही सुन्दरी थी, उतनी ही उच्छृंखल-स्वभाव भी थी। दोनों पति-पत्नी में रात-दिन झगड़ा होता रहता था। क़ानून की शरण लेने पर बुलवर-लिटन पत्नी से अलग

हो गया, पर अलग होने के बाद भी वर्षों तक दोनों के बीच संवाद-पत्रों में लिखित रूप से वाद विवाद चलता रहा।

बुलवर के उपन्यासों को आरंभ से ही सफलता मिलने लगी थी, पर उसकी ख्याति तब हुई जब सन् १८३४ में उसका सुप्रसिद्ध उपन्यास 'दि लास्ट डेज़ आफ़ पाम्पिआइ' (पाम्पिआइ के अन्तिम दिन) प्रकाशित हुआ। नौ वर्ष बाद उसने 'दि लास्ट आफ़ बेरन्स' नामक उपन्यास लिखा। इससे उसकी प्रसिद्धि और बढ़ गई। इन दो उपन्यासों के अतिरिक्त उसने और भी बहुत से सामाजिक तथा रहस्यात्मक उपन्यास लिखे हैं और कुछ सफल नाटकों की रचना भी की है। दस वर्ष तक पार्लामेन्ट की सदस्यता का गौरव भी उसे प्राप्त रहा। सन् १८६६ में उसे लार्ड की उपाधि प्राप्त हुई। १८ जनवरी १८७३ को उसकी मृत्यु हुई।

—:o:—

पाम्पिआइ के अन्तिम दिन

"एथीनिया-निवासी ग्लौकस ! तुम्हारी मृत्यु का समय हो चुका। तैयार हो जाओ, सिंह तुम्हारी प्रतीक्षा में है।"

गरजती हुई वाणी से किसीने ये शब्द कहे। एथीनियन ने निर्भीक होकर उत्तर दिया—"मैं तैयार हूँ।" अपने हाथ में एक चमकती हुई तलवार लेकर वह सिंह पर प्रत्याक्रमण करने में सफलता प्राप्त करने की क्षीण आशा से अपने पाँवों को कुछ झुकाकर दृढ़तापूर्वक उन्हें पृथ्वी पर जमाकर खड़ा था।

सिंह का पिंजर-द्वार खोल दिया गया था। पर दर्शकों के आश्चर्य की सीमा न रही, जब सिंह अपराधी के प्रति एकदम उदासीनता का भाव प्रकट करने लगा। पिंजड़े से बाहर निकलते ही वह पहले कुछ समय के लिये अखाड़े में स्थिर खड़ा रहा और ऊपर की ओर सिर करके इस प्रकार साँस लेने लगा कि मालूम होता था जैसे वह आहें भर रहा हो। अकस्मात् वह सामने की ओर झपटा, पर एथीनियन की ओर नहीं। इसके बाद अखाड़े के चारों ओर मन्द गति से दौड़ता हुआ चक्कर लगाने लगा और आशंकित दृष्टि से इधर-उधर देखने लगा। ऐसा जान पड़ता था जैसे वह अपने भागने का कोई रास्ता खोज रहा हो। दो एक बार उसने बाड़े से बाहर कूदने का-सा भाव दिखाया, जिसके कारण स्तब्ध दर्शक-मण्डली में काफी सनसनी फैल गई। पर जब अपनी इस चेष्टा में वह सफल न हो सका, तो उसने एक मर्मस्पर्शी शब्द से दहाड़ना आरम्भ कर दिया—जैसे किसी आन्तरिक पीड़ा से व्याकुल होकर कराह रहा हो। सिंह के भाव से क्रोध अथवा भूख का कोई भी चिन्ह प्रकट नहीं होता था; उसकी पूँछ निश्चेष्ट भाव

से नीचे ज़मीन पर पड़ी थीं ; उसकी आँखें बीच-बीच में ग्लौकस की ओर अवश्य प्रेरित होती थीं. पर शीघ्र ही वह उदासीनता के साथ उन्हें फेर लेता था। अन्त में जब उसने भाग निकलने का कोई उपाय न देखा, तो एक लम्बी कराह के बाद वह अपने पिंजड़े के भीतर वापस चला गया और अपनी दो अगली टाँगों के बीच में अपना सिर रखकर आराम से लेट गया।

रोमन दर्शक मंडली. जो सिंहों द्वारा अपराधियों की हत्या का दृश्य देखने की आदी थी, वर्तमान अपराधी के प्रति सिंह की उदासीनता देखकर पहले तो विस्मित हुई और बाद में उत्तेजित हो उठी। इस प्रकार के घातक दृश्यों से तत्कालीन रोमन जनता का विनोद ठीक उसी प्रकार होता था जिस प्रकार दंगल, सिनेमा और नाटक देखकर वर्तमान युग की जनता का जी बहलता है। सिंह जब चुपचाप अपने पिंजड़े में वापस चला गया. तो दर्शकों को ऐसा जान पड़ा जैसे रंग में भंग हो गया हो। मैनेजर ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर सिंह-रक्षक से कहा—"यह क्या बात है? किसी तीखी चीज़ से शेर को खरोंचो, ताकि वह भड़ककर पिंजड़े से बाहर निकले और उसके बाहर निकलते ही पिंजड़े का दरवाज़ा बन्द कर दो!"

ज्योंही सिंह-रक्षक अपने प्रभु की आज्ञा का पालन करने के उद्देश्य से आगे बढ़ा, त्योंही अखाड़े के किसी दरवाज़े से किसी के ज़ोर से चिल्लाने का शब्द सुनाई दिया और साथ ही बहुत से लोगों के एक साथ बोलने का कोलाहल सारे अखाड़े में गूँज उठा। सब दर्शक आश्चर्य से उस ओर को देखने लगे जहाँ से आवाज़ आ रही थी। बात यह थी कि एक आदमी भीतर प्रवेश करना चाहता था और बड़ी हड़बड़ी दिखा रहा था ; जनता उसे पागल समझकर उसे भीतर आने से रोक रही थी। पर बाद में जब उसने विश्वास दिलाया कि वह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये आया है. तो लोगों ने उसे भीतर आने दिया।

नवागन्तुक व्यक्ति के लम्बे-लम्बे बाल बिखरे हुए थे। वह थकावट के कारण हाँफ रहा था और स्पष्ट ही अत्यन्त उत्तेजित दिखाई देता था। भीतर प्रवेश करते ही वह एक उच्च आसन पर जाकर खड़ा हो गया और चिल्लाकर कहने लगा—"एथीनियन को छोड़ दो, वह निरपराध है! उसके बदले मिस्रवासी अरेबेसीज़ को गिरफ़्तार करो, क्योंकि एपीसिडीज़ की हत्या का अपराधी वही है।"

अध्यक्ष ने पहचान लिया कि वह व्यक्ति सेलस्ट है। उसने अपने आसन से उठकर अत्यन्त विस्मय का भाव प्रकट करते हुए कहा—"सेलस्ट! तुम यह कैसे पागलपन की बातें बक रहे हो! तुम्हारा क्या आशय है?"

"एथीनियन को अभी मुक्त कर दो, अभी! नहीं तो वह भूत बनकर तुम पर आक्रमण करेगा। देर करोगे तो तुम्हें सम्राट् के आगे इस वीभत्स अन्यायमूलक कृत्य का उत्तर देना होगा, याद रखना! मैं अपने साथ एक ऐसे व्यक्ति को लाया हूँ जिसने एपीसिडीज़ के हत्याकाण्ड को स्वयं अपनी आँखों से देखा है। उसके लिये स्थान ख़ाली करो। हट जाओ! रास्ता दो! पाम्पिआइ के निवासियो, अरेबेसीज़ की ओर देखते रहो, कहीं वह भाग न जाय। देखो वह वहाँ बैठा है! उसके पास ही पुरोहित-प्रवर कालेनस के लिये स्थान ख़ाली करो!

एक कंकाल के समान क्षीण व्यक्ति का हाथ पकड़कर कुछ लोग ऊपर लाए और अरेबेसीज़ के पास ही उसे सहारे से खड़ा कराया गया। उसके मुख के सूखे हुए चमड़े में रक्त का सार कहीं नहीं दिखाई देता था। ऐसा जान पड़ता था जैसे साक्षात् कोई प्रेतात्मा अभी क़ब्र से उठकर चली आई हो। कोटरों के भीतर फँसी हुई उसकी दो आँखें किसी अमानुषी उज्ज्वलता से चमक रही थीं।

जनता उसे देखते ही चिल्ला उठी—"पुरोहित कालेनस ! पुरोहित कालेनस ! पर क्या वह सचमुच वही है ? नहीं, यह उसकी प्रेतात्मा है !"

अध्यक्ष ने गंभीरता के साथ कहा—"यह पुरोहित कालेनस ही है, इसमें सन्देह नहीं। पुरोहित, तुम्हें क्या कहना है, बोलो !"

प्रेतात्मा-रूपी कालेनस ने कहा—"आइसिस के पुरोहित एपीसिडीज़ की हत्या अरेबेसीज़ ने की है। मैंने अपनी इन आँखों से देखा है। अरेबेसीज़ ने मेरा मुँह सदा के लिये बन्द करने के उद्देश्य से मुझे जीवित अवस्था में एक तहखाने के अंध गह्वर में भूखों मरने के लिये क़ैद कर दिया था। मृत्यु के उस गहन अंधकार-मय आवास से मैं सत्य की घोषणा करने के उद्देश्य से देवताओं की सहायता पाकर बाहर निकलने में समर्थ हुआ हूँ। एथौनियन को मुक्त कर दो, वह निरपराध है !"

जनता बोल उठी—"ठीक है ! ठीक है ! यही कारण है कि एक अलौकिक प्रेरणा पाकर सिंह ने एथौनियन पर आक्रमण नहीं किया। कैलेनस का कथन सत्य जान पड़ता है—शीघ्र ही अरेबेसीज़ को सिंह के हवाले कर दिया जाय !"

अध्यक्ष नहीं चाहता था कि बिना सब बातें निश्चित रूप से मालूम किए अरेबेसीज़ को सिंह का शिकार बनाया जाय। पर उत्तेजित जनता को शान्त करने की शक्ति उसमें नहीं थी। अरेबेसीज़ समझ गया कि अब उसके दिन पूरे हो चुके। भय और निराशा से वह अपनी चारों ओर के जन-समुद्र की उत्तेजित तरंगों को उमड़ता देख ही रहा था कि अकस्मात् ऊपर की ओर उसने दृष्टि डाली और देखा कि बाहर आकाश में भयंकर छायामूर्तियाँ नाच रही हैं। तत्काल उसकी चतुर बुद्धि जाग पड़ी और उस दृश्य से उसने लाभ उठाने का निश्चय किया। अपना हाथ ऊपर की ओर

उठाते हुए उसने गम्भीर भाव से राजकीय अनुशासन के स्वर में अपनी वज्र-घोषणा से जनता को चकित करते हुए कहा—"वह देखो! निरपराध व्यक्ति की रक्षा देवता किस प्रकार करते हैं! प्रतिहिंसा के देवता ने मुझ पर झूठा अपराध आरोपित करने वाले दुष्टों के संहार के लिये आकाश मार्ग से आग बरसाना आरम्भ कर दिया है।"

अरबेसीज़ जिसे 'प्रतिहिंसा के देवता की आग' बता रहा था, वह वास्तव में वेस्यूवियस के ज्वालामुखी का प्रलयंकर विस्फोट था, जिसने सन् ७९ में अकस्मात् अप्रत्याशित रूप से पाम्पिआइ के विलास-प्रिय नगर को प्रचण्ड अग्निवर्षा से ध्वस्त-विध्वस्त कर दिया। दर्शकों में से इस बात का अनुमान किसी ने कभी स्वप्न में भी नहीं किया था कि वेस्यूवियस पर्वत फटकर किसी दिन प्रलय-ज्वालाओं का उद्गीरण कर सकता है। पर अरबेसीज़ यह बात ताड़ गया था। जनता ने जब देखा कि गहन धूम्राच्छन्न आकाश में कालानल का रुद्रकोप ताण्डव-लीला दिखा रहा है, तो भयंकर भगदड़ मच गई। बहुत सी स्त्रियाँ और बच्चे उन्मत्त भीड़ की पलायन-चेष्टा के कारण कुचल कर मर गए।

उपन्यास की पूर्व कथा इस प्रकार है कि ग्लौकस नामक एक कुलीनवंशी सुन्दर, सुसंस्कृत युवक रोमन लोगों के बीच कुसंसर्ग में पड़ जाने से उच्छृङ्खल भोग-विलास में रत रहने लगा था। कुछ समय बाद नेपल्स नगर की आयोन नाम की एक अत्यन्त सुन्दरी तरुणी ने उसे मुग्ध कर लिया। आयोन का भी आदि निवास-स्थान ग्रीस में ही था। वह भी ग्लौकस से प्रेम करने लगी। उस उन्नत-चरित्र नारी का सच्चा प्रेम पाने के कारण ग्लौकस की आत्मा के समस्त तुच्छ विकार दूर हो गये और वह घृणित विलासिता के दलदल से मुक्त हो गया।

ग्लौकस को एक और दूसरी नारी हृदय से चाहती थी। वह थी

नीडिया नाम की एक अन्ध दासी। उसके रक्त का एक-एक कण अपने प्रियतम—ग्लौकस—के प्रति अर्पित होने के लिये प्रतिपल उत्सुक रहता था। उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य केवल यह था कि किसी भी उपाय से ग्लौकस उसे चाहने लगे। जूलिया नाम की एक स्त्री ने एक रसायन तैयार करके उसे दिया। उस रसायन का यह गुण बताया गया कि यदि कोई स्त्री उसे अपने इच्छित पुरुष को सेवन के लिये दे तो वह व्यक्ति निश्चय ही उससे प्रेम करने लगेगा। पर वास्तव में वह प्रेम-रसायन नहीं, बल्कि एक प्रकार का विष था, जिसके सेवन से मनुष्य पागल बन सकता था। अरेबेसीज़ नामक एक मिस्र देशवासी सम्भ्रान्तवंशी किन्तु कूटचक्री व्यक्ति ने स्वयं अपने हाथों से उसे तैयार किया था। बात यह थी कि अरेबेसीज़ भी आयोन से प्रेम करता था और वह इस चिन्ता में था कि किसी प्रकार ग्लौकस उसके मार्ग से हटे। उसी के कूटचक्र का यह परिणाम था कि जूलिया ने भोली-भाली अच्छी लड़की नीडिया को बहकाकर उसके द्वारा वह विषैला रसायन ग्लौकस तक पहुँचा दिया। उसे पीकर ग्लौकस पागल हो गया।

कुछ समय बाद ग्लौकस ने उसी क्षणिक पागलपन की सी अवस्था में अरेबेसीज़ को एपीसिडीज़ की हत्या करते हुए पकड़ लिया। यह एपीसिडीज़ आयोन का भाई था और आइसिस नामक विख्यात मन्दिर का पुरोहित था। इसके अतिरिक्त उसने नव-प्रचलित ईसाई धर्म को स्वीकार कर लिया था। अरेबेसीज़ धर्म परिवर्तन करने के कारण उससे असन्तुष्ट था ही, तिसपर जब उसने देखा कि एपीसिडीज़ अपनी बहन से उसका प्रेम-सम्बंध होने के पक्ष में नहीं है, तो वह और अधिक जल उठा।

एपीसिडीज़ की हत्या करके अरेबेसीज़ ने सारा दोष निरपराध ग्लौकस पर मढ़ दिया। पर पुरोहित कालेनस ने गुप्त रूप से यह सब काण्ड देख लिया था। जब अरेबेसीज़ को मालूम हुआ कि

कालेनस से उसकी करतूत छिपी नहीं रही, तो उसने उसे पकड़ कर एक अंधेरी और गुप्त कालकोठरी में बन्द कर दिया। ग्लौकस को गिरफ्तार कर लिया गया और उसे जिस रूप में मृत्यु-दण्ड देने का प्रबन्ध किया गया उसका उल्लेख पहले किया जा चुका है।

जनता ने जब सर्कस से बाहर निकलकर वेस्यूवियस की ओर देखा तो आग की महानाशकारी लपटें भीषण विस्फोट के साथ प्रज्वलित हो रही थीं। स्त्रियाँ मारे आतंक के चीख मारने लगीं, पुरुष स्तब्ध होकर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। पृथ्वी भयंकर प्रवेग से कम्पित हो रही थी। पाम्पिआइ के विलासितापूर्ण सुरम्य सौधों में कारिख पुत गई थी, और भूकम्प के कारण उनकी छतें विकट शब्द के साथ नीचे गिरने लगी थीं। विशाल सर्कस की दीवारें एक-एक करके गिरती चली जाती थीं। कारिख से पूर्ण धुंए के भयंकर काले बादल विराट् पर्वत के समान जनता की ओर बढ़े चले आ रहे थे। अंगारों के समान जलते हुए पत्थरों के बड़े-बड़े टुकड़े विस्फोट के साथ ज्वालामुखी के गह्वर से निकलकर चारों ओर बरसने लगे थे। ऐसी दशा में अरबेसीज़ को दण्डित करने की बात पर किसी को क्या ध्यान रह सकता था। प्रत्येक व्यक्ति अपने प्राण बचाने की चिन्ता में था। सभी एक-दूसरे को धक्का देते और कुचलते हुए जिधर को पाँव पड़ते उधर को भागने की चेष्टा कर रहे थे।

सारे आकाश में कारिख से भरा हुआ गहरा काला धुंआ छा गया था और ऐसा अँधेरा हो गया था कि हाथ से हाथ नहीं सूझता था। बीच-बीच में बिजली की चमक के समान अग्नि की ज्वालाओं का क्षणिक प्रकाश दिखाई पड़ता था।

अंधी नीडिया, जिसे अपनी जन्मान्धता के कारण अंधेरे में भी अपना रास्ता मालूम करने का अभ्यास था, अपने प्राणों से प्रियतम

व्यक्ति ग्लौकस का हाथ पकड़ कर आयोन के पास लिए चली जा रही थी। अन्त में वह उन दोनों को समुद्र के तट पर ले आई और एक जहाज़ में तीनों बैठ गए। जहाज़ में जब सब को थकावट के कारण नींद आ गई, तो नीडिया उस समय भी जगी रही। अन्त में उसने अपने सोए हुए प्रियतम को लक्ष्य करके मन ही मन कहा—"प्यारे ग्लौकस, तुम अपनी प्रेमपात्री आयोन के साथ सदा सुख से रहना, पर कभी-कभी बीच में दुःखिनी नीडिया को भी याद करते रहना।" यह कहकर वह तत्काल पानी में कूद पड़ी।

—:o:—

गोल्डस्मिथ

आलिवर गोल्डस्मिथ का जन्म सन् १७२८ में आयर्लैण्ड में हुआ। सात वर्ष की अवस्था में वह एक ग्रामीण पाठशाला में भरती हुआ। उस स्कूल का अध्यापक बच्चों को केवल पढ़ाता-लिखाता ही नहीं था, बल्कि उन्हें मनुष्यों, परियों और भूतों की कहानियाँ भी सुनाया करता था। उन कहानियों को सुनकर गोल्डस्मिथ के कल्पना-प्रिय मन में तरह-तरह की भावनाएँ उड़ान भरने लगती थीं।

९ वर्ष की अवस्था में गाँव के स्कूल से अलग होकर गोल्डस्मिथ एक ऊँचे दर्ज़े के स्कूल में भरती हो गया। इसके बाद बहुत से स्कूलों में उसने शिक्षा प्राप्त की और ग्रीक तथा लैटिन भाषाओं का अच्छा ज्ञान उसे हो गया। पर वह प्रतिभाशाली छात्र नहीं समझा जाता था, बल्कि उसकी गणना फिसड्डी छात्रों में होती थी। वह नाटे क़द का था और बदसूरत इतना था कि उसके साथ के लड़के बात-बात में उसे बनाया करते थे। स्कूल की पढ़ाई समाप्त कर चुकने के बाद उसने जीविका-निर्वाह के बहुत से उद्योग किए, पर किसी में उसे सफलता प्राप्त न हुई। अन्त में उसने साहित्य-रचना के काम में हाथ डालने का निश्चय किया।

उसका स्कूली जीवन जितना ही असफल रहा, साहित्यिक क्षेत्र में उसे उतनी ही अधिक सफलता प्राप्त हुई। अपने नाम से उसने जो सब से

पहली पुस्तक लिखी वह थी 'दि ट्रैवलर' नामक काव्य रचना। उसके छपते ही साहित्य-क्षेत्र में उसकी धाक जम गई और उच्चकोटि के कवियों में उसकी गणना होने लगी। इसके अतिरिक्त उसने जो दूसरी काव्य रचना की थी उसका साहित्यिक महत्व 'ट्रैवलर' से कुछ कम नहीं माना जाता। उसका नाम है 'दि डेज़र्टेड विलेज' उजड़ा हुआ गाँव।

जब गोल्डस्मिथ-लिखित 'दि विकार आफ़ वेकफील्ड' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ, तो उसने आश्चर्यजनक शीघ्रता से लोकप्रसिद्धि प्राप्त कर ली। इस पुस्तक के प्रकाशन के सम्बन्ध में एक रोचक कथा प्रचलित है। गोल्डस्मिथ की आर्थिक स्थिति कभी अच्छी न रही। एक बार जब वह लण्डन के एक मकान में एक कमरा भाड़े पर लेकर रहता था, तो मकान की मालकिन ने किराए के लिये उसे तंग करना आरंभ किया। गोल्डस्मिथ पलटे में उसे डाँटने लगा। फलस्वरूप झगड़ा यहाँ तक बढ़ा कि दोनों में हाथापाई की नौबत आ गई। ठीक ऐसे समय इंगलैण्ड का सुप्रसिद्ध लेखक डाक्टर जानसन गोल्डस्मिथ से मिलने के लिये वहाँ आ पहुँचा। जानसन गोल्डस्मिथ की प्रतिभा का क़ायल था और दोनों में घनिष्ठ मित्रता स्थापित हो चुकी थी। जब जानसन ने गोल्डस्मिथ को मकान की मालकिन के साथ किराए के लिये झगड़ते देखा, तो उसने दोनों को शान्त किया और झगड़ने का कारण पूछा। कारण मालूम होने पर जानसन को गोल्डस्मिथ जैसे प्रतिभाशाली लेखक की घोर आर्थिक दुर्दशा पर बड़ा दुःख हुआ। उसने गोल्डस्मिथ से पूछा कि उसके पास कोई पुस्तक लिखी हुई तैयार है या नहीं। गोल्डस्मिथ ने उत्तर दिया कि तैयार है और 'विकार आफ़ वेकफील्ड' की हस्तलिपि जानसन के हाथ में दे दी। जानसन ने वहीं बैठकर उसे पढ़ा। वह उपन्यास उसे इतना अधिक पसन्द आया

कि वह तत्काल उसे लेकर एक प्रकाशक के पास गया और उसके प्रकाशन का अधिकार बेचकर साठ पौंड (प्रायः आठ सौ रुपये) गोल्डस्मिथ को दिला दिए। जो अमरत्व गोल्डस्मिथ की उक्त रचना ने प्राप्त किया है उसे देखते हुए साठ पौंड कुछ भी नहीं है। पर उस समय अँगरेज़ी पुस्तकों के प्रकाशकों की स्थिति विशेष अच्छी नहीं थी।

'विकार आफ़ वेकफील्ड' ने जो सफलता पाई, उससे गोल्डस्मिथ को नाटककार बनने की प्रेरणा प्राप्त हुई। उसने 'गुडनेचर्ड मैन' (भला आदमी) नामक एक नाटक लिखा। कुछ समय बाद 'शी स्टूप्स टु कंकर' नामक एक प्रहसनात्मक नाटक उसने तैयार किया। इस दूसरे नाटक को विशेष सफलता प्राप्त हुई। जब 'कानवेन्ट गार्डन थियेटर' में वह खेला गया, तो सारी दर्शक-मण्डली हँसते हँसते लोट पोट हो गई।

४ अप्रैल, १७७४ को गोल्डस्मिथ की मृत्यु हुई।

—:o:—

वेकफील्ड का पादड़ी

मेरी स्त्री यद्यपि विशेष शिक्षिता नहीं थी, पर गिरस्ती के काम-धन्धों में बड़ी निपुण थी। उसका स्वभाव अत्यन्त सरल और सहृदय था। अतिथि-सत्कार की भावना हम दोनों में विशेष रूप से वर्तमान थी। मेरी स्त्री बहुत सुन्दर व्यञ्जन तैयार करती थी और लोगों को खिलाने-पिलाने में हमें बहुत सुख मिलता था। हम लोगों के इस मनोभाव से हमारे पास-पड़ोसी भली भाँति परिचित हो गए थे। इस कारण अतिथियों का कोई अभाव हमारे यहाँ नहीं रहता था।

मेरे सब बच्चे सुन्दर और स्वस्थ थे। मेरी दो लड़कियाँ थीं, जो वास्तव में बहुत सुन्दरी थीं। बड़ी लड़की आलीविया का प्रफुल्ल सौन्दर्य सब समय जगमगाता रहता था और छोटी लड़की सोफिया की कमनीय स्निग्धता बहुत मनोरम थी। मेरा सबसे बड़ा लड़का जार्ज आक्सफोर्ड में शिक्षा पा चुका था और दूसरा लड़का मोजेज़ घर पर विभिन्न विषयों की शिक्षा पा रहा था। हम लोग सब प्रकार से अपने गृहस्थ-जीवन से सन्तुष्ट और सुखी थे।

पर अकस्मात् दुर्भाग्य के किसी निष्ठुर प्रकोप के कारण मेरी सारी सम्पत्ति नष्ट हो गई और मेरे पास जो चौदह हज़ार पौण्ड (प्रायः दो लाख रुपये) सुरक्षित थे उनमें से चार सौ भी शेष न रहे। इसका एक फल यह हुआ कि मेरे पड़ोसी मिस्टर विलमट की लड़की अरेबेला के साथ मेरे लड़के जार्ज के विवाह की जो बात पक्की हो चुकी थी, वह फिर खण्डित हो गई। मिस्टर विलमट में एक गुण पूर्ण मात्रा में वर्तमान था—वह अपने स्वार्थ के विषयों में सब समय बहुत सचेत रहा करते थे।

सम्पन्न स्थिति से निपट दरिद्रावस्था को पहुँचने पर मैंने धैर्य से काम लिया और परिस्थितियों के अनुसार चलने लगा। मैंने जार्ज को पाँच पौन्ड दिए और उसे लण्डन भेज दिया. ताकि वहाँ जाकर वह अपनी जीविका का कोई प्रबन्ध करे और परिवार की भी सहायता करने का उद्योग करे। मुझे हमारे गाँव से कुछ दूर एक स्थान में पन्द्रह पौन्ड वार्षिक वेतन पर एक नौकरी मिल गई। अपनी स्त्री और बाल-बच्चों को साथ लेकर मैं उस स्थान को रवाना हो गया।

रास्ते में हमारा परिचय एक सहयात्री से हुआ जिसने अपना नाम बर्चेल बताया। वह बड़े काम का आदमी निकला। जिस नये स्थान में हमें जाना था वहाँ के सम्बन्ध में बहुत सी बातें उसने बताईं। उसकी बातों से मालूम हुआ कि हमारा नया ज़मींदार सर विलियम थार्नहिल नामक एक प्रसिद्ध व्यक्ति का भतीजा, स्क्वायर थार्नहिल है। रास्ते में जब एक स्थान में मेरी लड़की सोफिया एक नदी में गिर पड़ी, तो बर्चेल ने उसे डूबने से बचा लिया। हम लोगों ने उसके प्रति हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की। मेरी स्त्री अपने मन में सोफिया और बर्चेल के बीच प्रेम और उसके बाद दोनों के विवाह की कल्पना करने लगी। उसने जब अपनी इस कल्पना का उल्लेख मेरे आगे किया, तो मैं केवल मुसकरा दिया। पर मैं इस प्रकार की मन को लुभानेवाली कल्पनाओं को बुरा नहीं समझता। उनसे दुःखित मन को बड़ी सान्त्वना मिलती है।

जब हम लोग नये स्थान में पहुँचे, तो हमारा ज़मींदार स्क्वायर थार्नहिल हमारी छोटी सी कुटिया में अक्सर आने-जाने लगा। किस लोभ से वह हमारे यहाँ आना पसन्द करता था, इस विषय में मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता। संभव है कि मेरी स्त्री द्वारा तैयार किए गए हिरन के मांस की टिकिया उसे विशेष प्रिय

लगती थी ; अथवा यह भी हो सकता है कि मेरी सुन्दरी लड़कियों ने अपने रूप और गुणों के कारण उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सफलता प्राप्त कर ली हो। बर्चेल भी हमारे यहाँ आया करता था। इस प्रकार नये स्थान में संगी-साथियों की कमी का अनुभव हमें नहीं होता था।

मेरी स्त्री के मन की यह शुभ महत्त्वकांक्षा थी कि हम लोग समाज में अपना मस्तक सदा ऊँचा किए रहें। इसलिये उसने यह इच्छा प्रकट की कि मैं अपने टट्टू को मेले के अवसर पर बेच डालूँ और उसके बदले एक अच्छा और सुन्दर घोड़ा मोल लूँ। इस काम के लिये हमने अपने लड़के मोजेज़ को नियुक्त किया। जिस स्थान में हम लोग रहते थे वहाँ से कुछ दूर मेला लगने वाला था। मोजेज़ की बहनों ने उसे अच्छी वेष-भूषा से सुसज्जित करके उसे पूरी तैयारियों के साथ भेजा। पर हम लोगों के दुःख का ठिकाना न रहा, जब हमने सुना कि मेले में एक गुण्डे ने मोजेज़ को धोखा देकर ठग लिया है। मोजेज़ ने टट्टू को अच्छे दामों में बेच लिया था, पर उक्त गुण्डे ने उसे अपनी चिकनी चुपड़ी बातों के फेर में डालकर एक हरे रंग का चश्मा उसके हाथ बेच दिया और उसके मूल्य के बतौर वह सब रुपया उससे झटक लिया जो उसने टट्टू बेच कर वसूल किया था।

इस दुर्घटना के कुछ समय बाद मेरी लड़कियों ने एक दिन सैर के लिये शहर में जाने का प्रस्ताव किया। बर्चेल ने इस बात का ऐसा तीव्र विरोध किया कि मेरी स्त्री के और उसके बीच झगड़ा हो गया। फल यह हुआ कि बर्चेल क्रुद्ध हो कर हमारे यहाँ से चला गया। सोफिया के कातर प्रार्थना से भरी आँखों का कोई प्रभाव उस पर न पड़ा।

इसी बीच मेरी स्त्री ने यह प्रस्ताव किया कि हम लोगों का जो एक घोड़ा बचा है उसे मैं स्वयं मेले में जाकर बेच आऊँ। जब मैं

मेले में गया, तो ग्राहकों ने एक-एक करके उसे परखना आरम्भ किया। किसी ने कहा कि वह काना है, किसी ने कहा कि लंगड़ा है, किसी ने कुछ और दोष बताया। इतने अधिक दोषों की बातें मैंने सुनीं कि मुझे भी उसके निकम्मेपन पर विश्वास हो गया। अन्त में एक व्यक्ति के हाथ मैंने उसे बेच डाला। पर मेरे दुःख का ठिकाना न रहा जब नक़द दामों के स्थान में मुझे एक जाली रुक़्का मिला। वास्तव में यह करतूत भी उसी दुष्ट की थी जिसने मोजेज़ के हाथ हरा चश्मा बेचकर उसे ठग लिया था।

जब से बर्चेल ने हमारे यहाँ आना छोड़ दिया, तब से सोफिया दुःखी रहने लगी। पर उसके, सिवा हम लोगों से और किसी को विशेष दुःख नहीं हुआ, क्योंकि हमारे ज़मींदार थार्नहिल के संसर्ग में हम लोगों का समय प्रसन्नतापूर्वक बीतता था। मैं यह बात छिपाना नहीं चाहता कि मेरी स्त्री ने इस बात के लिये सैकड़ों जाल रचे कि वह आलीविया को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करने के लिये तैयार हो जाय। आलीविया को वह ऐसी बहुत सी कलाएँ सिखाती रही, जिनसे उसके रूप-रंग और बात व्यवहार का आकर्षण अधिक बढ़ जाय। इन उपायों से भी जब कोई फल होते न दिखाई दिया, तो मेरी स्त्री ने थार्नहिल के मन में ईर्ष्या का भाव जगाने के उद्देश्य से यह संकेत किया कि फार्मर विलियम्स नाम का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति, जो कि हमारा पड़ोसी था, आलीविया से विवाह करने की इच्छा रखता है। इस बात से भी जब थार्नहिल विचलित न हुआ, तो अन्त में विवश होकर मेरी स्त्री ने फार्मर विलियम्स से ही आलीविया का विवाह करने का निश्चय कर लिया। विवाह का दिन नियत हो गया। पर विवाह के चार दिन पहले अकस्मात् आलीविया ग़ायब हो गई। मुझे सूचना मिली कि वह एक गाड़ी में बैठकर किसी एक व्यक्ति के साथ भाग निकली है। जिस व्यक्ति ने उन दोनों को जाते हुए देखा था उसने

कहा कि आलीविया के साथी ने उसके गले में हाथ डालते हुए यह कहा कि वह उसके (आलीविया के) लिये मर मिटने को तैयार है। यह बात जानने में मुझे देर न लगी कि जिस दुष्ट व्यक्ति के साथ आलीविया निकल भागी है वह थार्नहिल के सिवा और कोई नहीं है। मैंने जब यह सुना, तो मेरे हृदय की जो दशा हुई उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। मैंने आन्तरिक मन से भगवान् से प्रार्थना की कि वह मुझे उस महान् कष्ट को अविचलित भाव से धैर्यपूर्वक सहन कर सकने की क्षमता दे। मेरी स्त्री आलीविया और उसके प्रेमिक को जी भर कर उच्च स्वर से कोसने लगी। उसने कहा कि यदि आलीविया अब लौटकर कभी घर आवे, तो वह उसका मुँह नहीं देखेगी। मैंने उसे समझाया-बुझाया और कहा कि यदि आलीविया घर लौट आवे और अपनी भूल के लिये पश्चात्ताप प्रकट करे, तो मेरे घर का द्वार उसके लिये मुक्त रहेगा और हमें उसे हृदय से क्षमा कर देना होगा।

मैं आलीविया की खोज में निकल पड़ा। पूछ-ताछ करने के बाद मुझे पहले यह सन्देह होने लगा कि आलीविया को भगानेवाला स्क्वायर थार्नहिल नहीं, बल्कि बर्चेल है। पर बाद में यह बात असत्य सिद्ध हुई। बहुत तलाश के बाद मैंने अपनी लड़की को एक गुप्त स्थान में छिपा हुआ पाया। दुष्ट थार्नहिल के पञ्जे से किसी प्रकार छुटकारा पाकर वह भागकर उस स्थान में चली आई थी। मुझे यह भी मालूम हुआ कि थार्नहिल ने विवाह का ढोंग रचकर उस सरल स्वभाव लड़की को नष्ट कर डाला है। यह भी मालूम हुआ कि एक गुण्डे पादड़ी ने झूठ-मूठ उन दोनों के विवाह का स्वांग रचा था और वह गुण्डा इसी प्रकार इसके पहले सात-आठ लड़कियों से उसका विवाह कर चुका था! उन सब 'पत्नियों' को उसने उसी तरह धोखा दिया था जिस प्रकार मेरी लड़की आलीविया को।

मैं अपनी दुःखिता लड़की को घर ले गया। घर पहुँचने पर मुझे यह घोर दुःखपूर्ण और विस्मयजनक समाचार मिला कि मेरी छोटी सी कुटिया आग लग जाने से एकदम नष्ट हो गई है। मेरी स्त्री अपना सिर पीट रही थी। पर मैंने उसे सान्त्वना दी और शान्त किया। परम मंगलमय भगवान् को इस बात के लिये धन्यवाद देकर कि उसकी कृपा से एक के बाद दूसरी घोर विपत्ति आ टूटने पर भी मेरा धैर्य विचलित नहीं हुआ, मैं अपनी स्त्री और बाल-बच्चों के साथ एक अत्यन्त साधारण मकान में जाकर रहने लगा और यथाशक्ति शान्तिपूर्वक जीवन बिताने की चेष्टा करने लगा।

पर वह शान्ति स्थिर न रह सकी। नीच थार्नहिल का विवाह मिस विलमट के साथ होना निश्चित हुआ था। यह मिस विलमट वही थी जिसके साथ कभी मेरे लड़के जार्ज के विवाह की बात पक्की हो चुकी थी। एक दिन मेरे पास आकर थार्नहिल ने यह घोर नीचतापूर्ण प्रस्ताव किया कि आलीविया का विवाह किसी दूसरे व्यक्ति से कर दिया जाय और साथ ही वह (आलीविया) उसकी मित्र बनी रहे! मैंने इसका प्रबल विरोध किया, जिसके फलस्वरूप थार्नहिल ज़मींदार की हैसियत से बदला चुकाने की धमकियाँ दीं। शीघ्र ही उसने वार्षिक लगान के लिये तक़ाज़ा करना आरम्भ कर दिया। मेरी आर्थिक स्थिति इतनी बिगड़ चुकी थी कि मैं उस समय लगान चुकाने में एकदम असमर्थ था। फल यह हुआ कि थार्नहिल की कृपा से मुझे जेलख़ाने में बन्द होना पड़ा। पर मैंने उस अवस्था में भी अपने मन को यथासंभव शान्त रखा। मन ही मन सर्वशक्तिमान भगवान का गुणगान करते हुए मैं उस बद्ध वातावरण में भी मुक्ति के सुख का अनुभव करता।

घोर संकट के अवसर पर दार्शनिक विचारों से मन को बहुत कुछ शान्ति मिलती है, सन्देह नहीं; पर सभी बातों की एक सीमा

होती है। जेल में मुझे किसी ने यह समाचार सुनाया कि मेरी प्यारी लड़की आलीविया की मृत्यु हो गई, यद्यपि बाद में मुझे मालूम हुआ कि वह समाचार ग़लत था। मेरी दूसरी लड़की सोफिया को कोई दुष्ट बलपूर्वक भगा कर ले गया है, यह कुसंवाद भी मेरे कानों तक पहुँचा। मैं दर्शन-शास्त्र के विचारों को भूलने लगा और मेरे कष्ट की सीमा न रही।

जब मुझे मालूम हुआ कि जो गुण्डा सोफिया को भगा ले गया था, बर्चेल की कृपा से उसके पञ्जे से वह छूट गई, तो मैंने अत्यन्त कृतज्ञता का अनुभव करके सोफिया का विवाह बर्चेल के साथ कर दिया। बाद में पता लगा कि 'बर्चेल' वास्तव में प्रसिद्ध सर विलियम थार्नहिल का दूसरा नाम है। यह जानकर मेरे और मेरी स्त्री के हर्ष का ठिकाना न रहा कि इतने प्रतिष्ठित और योग्य व्यक्ति के साथ मेरी लड़की का विवाह हुआ है। दूसरी बड़ी प्रसन्नता मुझे यह जानकर हुई कि मेरी लड़की आलीविया हमारे ज़मींदार थार्नहिल की जायज़ पत्नी है। इसमें सन्देह नहीं कि नीच पादड़ी ने उसके और जितने भी विवाह किए थे वे सब स्वांग थे, पर आलीविया को स्क्वायर थार्नहिल वास्तव में बहुत चाहता था और उसके साथ उसने यथार्थ विवाह किया था। मुझे कष्ट पहुँचाकर वह इतने दिनों तक एक प्रकार से मेरी परीक्षा लेता रहा और सर विलियम थार्नहिल के समझाने पर वह ठीक रास्ते पर आ गया।

बाद में जब मेरा बड़ा लड़का जार्ज लण्डन से अच्छी स्थिति में घर वापस आया, तो मिस्टर विलमट उसके साथ अपनी लड़की का विवाह करने को राज़ी हो गए। मेरे सौभाग्य के दिन फिर आए थे। जिस ठग ने जालसाज़ी करके मेरी सारी सम्पत्ति हड़प ली थी वह गिरफ्तार कर लिया गया और मेरी आर्थिक स्थिति फिर से सुधर गई। जेल से तो मैं छूट ही चुका था, इसलिये अब मेरे जीवन में किसी प्रकार का भी कष्ट शेष नहीं रहा।

औएरबाख़

बर्टहोल्ड औएरबाख़ का जन्म २८ फरवरी, १८१२ को जर्मनी के अन्तर्गत नार्डस्टेटन नामक स्थान में हुआ। उसके माँ-बाप यहूदी थे और उनकी इच्छा थी कि उनका बेटा मन्त्रिपद के लिये अपने को योग्य बनाए। पर औएरबाख़ ने दर्शनशास्त्र का गहरा अध्ययन किया और स्पिनोज़ा के सिद्धान्तों से परिचित होकर उसने कट्टर यहूदियों के गुट से अपने को अलग कर दिया। इसके बाद साहित्य की ओर उसकी रुचि बढ़ी।

उसकी प्रथम साहित्यिक रचना प्रसिद्ध दर्शनशास्त्री स्पिनोज़ा की जीवनी को लेकर थी। उसने उस जीवनी को एक उपन्यास का रूप देकर विशेष सफलता प्राप्त की। इसके अतिरिक्त उसने स्पिनोजा की पुस्तकों का अनुवाद स्पेनिश भाषा से जर्मन भाषा में किया।

इसके बाद उसने जर्मन किसानों के जीवन की कहानियाँ लिखीं। उन कहानियों की कला-सम्बन्धी विशेषता और सहृदयता के कारण शीघ्र ही उसने ख्याति प्राप्त कर ली। कुछ समय तक वह इसी प्रकार की कहानियाँ लिखता चला गया। बाद में उसने उपन्यास रचना की ओर फिर से ध्यान दिया और वह उपन्यास लिखा जिसका सार वर्तमान प्रकरण में दिया गया है। इस उपन्यास ने शीघ्र लोकप्रियता प्राप्त कर ली। तब से वह उपन्यास पर उपन्यास लिखता चला गया।

औएरबाख़ की मृत्यु सन् १८८२ में हुई।

—:०:—

गिरि-शिखर में

जर्मन राष्ट्र पहले कई राज्यों में विभाजित था। उन्हीं में से एक विशिष्ट राज्य के राजघराने को लेकर वर्तमान कहानी लिखी गई है। वहाँ के राजा का व्यक्तित्व बहुत सुन्दर था और वह अपने योग्य शासन के लिये प्रसिद्ध था। रानी बहुत ही सुन्दर थी और उसका स्वभाव भी बहुत मधुर था। पर वह अत्यन्त संकीर्ण रूप से नीतिनिष्ठ और कट्टर धार्मिक थी और जो लोग नैतिक धर्म के पालन में उसी के समान कट्टरता नहीं दिखाते थे उन्हें वह घृणा की दृष्टि से देखती थी। उसे अपने शरीर और मन की पवित्रता का ध्यान बहुत अधिक रहता था। पर राजा धार्मिकता की अपेक्षा प्रेम और सौन्दर्योपासना को अधिक महत्त्व देता था।

जब राज-परिवार में एक राजकुमार का जन्म हुआ, तो उसकी देखभाल के लिये एक दाई बुलाई गई। वह दाई हाँसे नामक एक किसान की पत्नी थी, जिसका नाम था वालपुर्गा। जब उसने महल के भीतर प्रवेश किया, तो रानी ने उसकी आकृति-प्रकृति में एक ऐसा शुद्ध और पवित्र भाव पाया कि वह प्रसन्न हो उठी और उसने भावुकतावश उसका मुँह चूम लिया। एक साधारण किसान लड़की के प्रति एक रानी इस प्रकार की कृपा और प्रेम-भाव प्रदर्शित करे, यह बात राजघराने के नियमाचार के विरुद्ध थी। इसलिये उसे लेकर लोगों ने रानी के सम्बन्ध में तरह-तरह की अफ़वाहें फैलानी शुरू कर दीं। संवादपत्रों में उसकी चर्चा हुई और टीका-टिप्पणियाँ हुईं। राजा के मन में बहुत चोट पहुँची और उसको यह विश्वास हो गया कि रानी के स्वभाव में अत्यन्त दुर्बल भावुकता वर्तमान है।

कौन्टेस इर्मा नाम की एक सुन्दरी युवती राजा के अन्तःपुर की प्रधान प्रबन्धकर्त्री के रूप में नियुक्त थी। उसका पिता कौन्ट विल्डेनार्ट संभ्रान्तवंशी था और राजकीय कर्मों में बड़ा निपुण था। पर अपने परिवार के लोगों के प्रति वह एकदम उदासीन रहता था। कौन्टेस इर्मा के प्रति वह विशेष स्नेह-परायण नहीं था।

इर्मा ने अपनी सुन्दरता के कारण राजा का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। एक दिन जब इर्मा शिशु राजकुमार के कमरे में खड़ी हुई तो राजा ने उसके हाथ से हाथ मिलाते हुए ऐसी उत्सुक दृष्टि से उसकी ओर देखा कि दाई—वालपुर्गा—को यह बात अत्यन्त अनुचित मालूम हुई। राजा के चले जाने पर वालपुर्गा ने कौन्टेस इर्मा के आगे अपने मन का भाव प्रकट कर दिया। पर इर्मा ने उसे डाँट बताते हुए कहा कि उसे दूसरों के कामों से कोई वास्ता रखने की आवश्यकता नहीं है। अपनी एक सखी को इर्मा ने एक पत्र लिखा जिसमें यह सूचित किया कि राजा उस पर सबसे अधिक कृपा रखता है और उसने एक गरुड़ पक्षी का शिकार करके उसका एक पर उसे (इर्मा को) प्रदान किया है।

कुछ समय बाद एक दिन जब राजा ने इर्मा को अकेले में पाया, तो उससे पूछा कि वह उसे अपनी 'सच्ची संगिनी' कहने की धृष्टता कर सकता है या नहीं। इर्मा ने जो उत्तर दिया, उससे उसका उत्साह बढ़ गया और उसने अपने मन की यह गुप्त बात उसके आगे प्रकट कर दी कि वह अपनी रानी को नहीं चाहता और रानी भी उससे खिंची रहती है।

पर रानी उससे खिंची नहीं रहती, इस बात का प्रमाण शीघ्र ही सब को मिल गया। राजा कैथलिक धर्म का अनुयायी था और रानी प्रोटेस्टेन्ट थी। यह सोचकर कि किसी भी विषय में अपने पति से अलग रहना पत्नी के लिये उचित नहीं, उसने अपना धर्म त्याग कर कैथलिक धर्म स्वीकार करने का निश्चय कर लिया।

पर राजा उसके इस निश्चय से प्रसन्न होने के बजाय और अधिक असन्तुष्ट हो उठा। उसने उसे रानी के स्वभाव की अस्थिरता और दुर्बलता का चिह्न समझा। परिवार के डाक्टर गुन्टर को बीच में डालकर राजा ने रानी को उस निश्चय से हटाने का प्रयत्न किया।

इस घटना के कुछ समय बाद राजा शिकार खेलने के उद्देश्य से कुछ दिनों के लिये बाहर चला गया। जाते समय उसने रानी से कहा कि शिशु राजकुमार की कुशल उसे पत्र द्वारा बराबर मिलती रहनी चाहिये और इस काम के लिये यदि रानी कौन्टेस इर्मा को नियुक्त करे, तो अच्छा हो। इस बात से रानी के मन में प्रथम बार यह सन्देह उत्पन्न हो गया कि राजा और कौन्टेस इर्मा के बीच निश्चय ही गुप्त सम्बन्ध स्थापित होने जा रहा है।

इसी बीच इर्मा के पिता के यहाँ से बुलावा आया और इर्मा घर चली गई। पर पिता-पुत्री एक दूसरे को ठीक तरह से समझने में असमर्थ थे और दोनों में बनती न थी। इर्मा घर में उदास रहने लगी। कुछ समय बाद राजा ने तथा राजघराने की स्त्रियों ने जब सम्मिलित हस्ताक्षरयुक्त एक पत्र लिख भेजा, जिसमें इर्मा से वापस चले आने की प्रार्थना की गई थी, तो वह कुछ असमञ्जस के बाद चली गई। राजा का प्रेम उसके प्रति बढ़ता चला गया। उसने एक स्वतन्त्रता की देवी की मूर्ति का निर्माण कराया, जिसकी आकृति का आदर्श इर्मा को बनाया गया। एक दिन राजा उसे उसी स्थान में ले गया जहाँ वह मूर्ति स्थापित की गई थी और वहाँ उसने इर्मा को अपनी बाँहों से जकड़ लिया और अपने ओठों से उसके मुख पर "अनन्त के चुम्बन" का चिह्न अंकित कर दिया। कुछ समय बाद एक नृत्योत्सव में राजा ने स्पष्ट शब्दों में इर्मा को यह सूचित किया कि वह उससे प्रेम करता है। इर्मा उसके मुँह से बात सुनकर पुलकित हो उठी। वह अपनी अपराधी आत्मा को

यह कह कर सन्तुष्ट करने लगी कि "पुरोहित ने राजा का सम्बन्ध रानी से कराया, पर प्रकृति ने उसे उसके (इर्मा के) हाथ सौंप दिया।"

चूँकि सारी राजधानी में इर्मा से राजा के सम्बन्ध के विषय में तरह-तरह की चर्चाएँ होने लगी थीं, इसलिये इर्मा के भाई ने एक दिन अपनी बहन को इस बात के लिये राज़ी करने का उद्योग किया कि वह विवाह कर ले। कर्नल फान ब्रोनेन नामक एक संभ्रान्त और प्रतिष्ठित व्यक्ति ने इर्मा से विवाह का प्रस्ताव किया, पर इर्मा ने अस्वीकार कर दिया। वह जानती थी कि फान ब्रोनेन का आचरण अत्यन्त शुद्ध है, इसलिये अपना पाप-हृदय लेकर उसके साथ रहना उसे एक भयंकर अपराध के समान जान पड़ता था।

इसी बीच वालपुर्गा की नौकरी की अवधि समाप्त हो गई। अपने गाँव को वापस जाने के पहले वह इर्मा से मिली। इर्मा ने उसे अशर्फ़ियों से भरी एक थैली प्रदान की। उन अशर्फ़ियों को उसने पिछली रात जुए में जीता था।

वालपुर्गा जिस गाँव में रहती थी वह एक पादड़ी स्थान में बसा हुआ था। गाँव के लोगों ने जब देखा कि वह निर्धन किसान-पत्नी राज-परिवार में रहकर बड़े ठाठ-बाट के साथ घर वापस आई है, तो उन्होंने प्रारंभ में उसका और उसके पति का बड़ा आदर किया। पर बाद में जब उन्होंने देखा कि उनसे कोई प्राप्ति उन्हें नहीं होती, तो वे उनके ऐश्वर्य से जलने लगे और वालपुर्गा के चरित्र के सम्बन्ध में तरह-तरह की अफ़वाहें फैलाने लगे। बाद में वालपुर्गा और उसके पति हाँसे ने मिलकर अपना पुराना आवास छोड़ने के विचार से एक दूसरे स्थान में ज़मीन ख़रीद ली। जब वे लोग अपने नये आवास के लिये रवाना हुए थे, तो रास्ते में

उन्हें इर्मा मिली, जो संसार त्यागने के उद्देश्य से अकेली चली आ रही थी।

बात यह हुई थी कि किसी व्यक्ति ने इर्मा के पिता को स्पष्ट शब्दों में यह सूचित कर दिया था कि उसकी लड़की राजा के साथ अनुचित सम्बन्ध स्थापित किए हुए है। इस संवाद से इर्मा के पिता को ऐसी चोट पहुँची कि वह सख्त बीमार पड़ गया। उसके अन्तिम समय में इर्मा उससे मिलने आई। मरने के कुछ समय पहले उसने अपना हाथ अपनी बेटी के कपाल पर रखकर उसे दबा दिया। इससे इर्मा समझ गई कि उसके पिता ने उसके मस्तक पर एक विशेष प्रकार का रहस्यवादी चिह्न अंकित करके उसे एक जीवनव्यापी प्रतिज्ञा के बन्धन में बाँध दिया है; उसे तोड़ने से उसके जीवन में एक भयंकर अभिशाप फलेगा, जो मृत्यु के बाद भी उसका पीछा न छोड़ेगा। उसने उस अदृश्य और काल्पनिक चिह्न के स्थान में एक पट्टी बाँध ली, जिसे फिर आजीवन नहीं उतारा। अपने पिछले पाप-कर्मों के लिये उसके मन में भयंकर ग्लानि उत्पन्न होने लगी। वह जानती थी कि राजा से अथवा अन्य किसी पुरुष से सम्बन्ध स्थापित करते ही जो प्रतिज्ञा उस पर आरोपित कर दी गई है वह खण्डित हो जायगी और उसके पिता का रहस्यात्मक अभिशाप भीषण रूप से फूट पड़ेगा।

तब से इर्मा सब समय अपने सिर के भीतर एक भयंकर भार का सा अनुभव करने लगी और उसकी मानसिक दशा अत्यन्त शोचनीय हो उठी। राजा को जब उसकी चित्त की विकलता का हाल मालूम हुआ, तो उसने लिखा—"तुम सीधे मेरे पास चली आओ, मैं अपने चुम्बन द्वारा तुम्हारे मस्तक में अंकित रहस्यात्मक चिह्न को सदा के लिये मेट दूंगा।" यह पढ़कर इर्मा के मन की बेचैनी घटने के बदले और अधिक बढ़ने लगी और उसने आत्म-हत्या करने का निश्चय कर लिया। उसने एक पत्र में रानी को

लिखा—" मैंने जो घोर पाप किया है, उसके लिये क्षमा चाहती हूँ और मृत्यु द्वारा इसका प्रायश्चित्त करना चाहती हूँ।" राजा को उसने लिखा—" हम दोनों आज तक ग़लत रास्ते में चलते रहे हैं। आपको केवल अपने सुख के लिये जीवित नहीं रहना चाहिये, दूसरों के सुखों में आपको अपने सुख का सा अनुभव होना चाहिये। मैंने जो पाप किया है, उसका उपचार मेरे लिये मृत्यु के सिवा और कुछ नहीं रह गया है। पर आपको जीवित अवस्था में ही प्रायश्चित्त करना होगा। त्याग ही आपका प्रायश्चित्त है।"

जब इर्मा आत्महत्या करने के उद्देश्य से जाती है, तो रास्ते में एक अत्यन्त दयनीय स्त्री से उसकी भेंट होती है। उस स्त्री का जीवन इर्मा के भाई ब्रूनो ने नष्ट कर दिया था, वह संसार में अपने को निराश्रित देखकर अपना जीवन समाप्त करने के उद्देश्य से चली आई थी। इर्मा की आँखों के सामने ही उसने एक झील में कूद कर आत्महत्या कर ली। इर्मा दुःख, शोक और ग्लानि से पीड़ित होकर गिरते-पड़ते चली जा रही थी। उसके कोमल शरीर में कई बार चोट आ गई थी और वह अन्यमनस्क सी होकर निरुद्देश्य भटक रही थी। उसी रास्ते राजकुमार की भूतपूर्व दाई वालपुर्गा और उसका पति अपने कुछ साथियों के साथ नये निवास-स्थान की ओर चले जा रहे थे। वालपुर्गा ने इर्मा को देखते ही पहचान लिया। इर्मा ने और किसी को अपना परिचय नहीं दिया। वह उन लोगों के साथ चुपचाप चली गई।

कुछ समय बाद राजधानी में यह संवाद फैल गया कि इर्मा ने आत्महत्या कर ली है। पर कहीं भी उसकी लाश का कोई पता नहीं मिला। लोगों ने अन्त में यही अनुमान किया कि वह निश्चय ही उसी झील में डूब मरी होगी, जिसमें ब्रूनो द्वारा नष्ट की गई स्त्री कूद पड़ी थी। झील के किनारे एक स्मारक की स्थापना की गई, जिसमें यह लिखा गया—" यहाँ विल्डेनार्ट की कौन्टेस

इर्मा ने अपना जीवन त्याग किया है। यात्री, उसकी आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करो, उसकी स्मृति का सम्मान करो।"

इधर जब से राजा को इर्मा का अन्तिम पत्र मिला था, तब से उसके स्वभाव में विशिष्ट रूप से परिवर्तन दिखाई देने लगा। अपने पूर्वकृत कर्मों के लिये उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ और उसके मन में यह धारणा जम गई कि आदर्श जीवन बिताने के लिये विशुद्ध आचरण परम आवश्यक है। वह रानी के पास अपनी पिछली भूलों के लिये हार्दिक क्षमा चाहने के उद्देश्य से गया, पर रानी उससे अत्यन्त घृणा करने लगी थी। पहले तो उसने सोने का बहाना किया और बाद में उसे ऐसी गालियाँ सुनाईं कि राजा का जी जल गया। उसके मन में यह विश्वास हो गया कि राज-परिवार के डाक्टर गुन्टर की कृपा से रानी के स्वभाव में इस तरह की तेजी आई है। डाक्टर को उसने बरखास्त कर दिया और स्वयं पहाड़ के ऊपर स्थित अपने पुराने महल में जाकर रहने लगा।

इर्मा ने वास्तव में आत्महत्या नहीं की थी। तीन वर्ष तक वह बालपुरी के साथ रहकर गुप्त वास करती रही। वह तन से और मन से अपने पिछले पापों का प्रायश्चित्त कर रही थी। फलस्वरूप उसके मुख में एक ऐसा शान्त और स्निग्ध भाव छा गया था कि जो कोई भी उससे मिलता उसके मन में यह धारणा जम जाती कि वह एक देवी है और एक अपूर्व स्वर्गीय प्रेरणा उसे प्राप्त होती।

अन्त में इर्मा एक घातक रोग से पीड़ित हो उठी। उसने डाक्टर गुन्टर को बुलाया। गुन्टर के शुद्ध चरित्र पर इर्मा की पूर्ण श्रद्धा थी। उसने इर्मा के अनुरोध से उसके कपाल पर हाथ रखा और कहा—"तुम्हारे पिता के नाम पर मैं तुम्हें आशीर्वाद

देता हूँ और तुम पर जो अभिशापपूर्ण भार आरोपित कर दिए गए थे उन्हें झाड़ देता हूँ। आज से तुम मुक्त हो।"

वालपुर्गा ने रानी के पास जाकर उसे इर्मा की मरणासन्न अवस्था की सूचना दी। रानी को इस बीच यह ज्ञान हो गया था कि आज तक अपने पवित्र आचरण पर गर्व करते हुए वह दूसरों के प्रति जो घृणा प्रदर्शित करती रही है, वह वास्तव में अत्यन्त अनुचित है। उसके मन में ग्लानि का भाव उत्पन्न हो गया था। उसे यह विश्वास होने लगा था कि इर्मा को जो साधना करनी पड़ी है, वह स्वयं भी जब तक वैसा नहीं करेगी, तब तक उसका विकृत अहंभाव दूर नहीं होगा। जिस झोंपड़ी में इर्मा मृत्यु की प्रतीक्षा में पड़ी हुई थी, रानी वहीं जा पहुँची। दोनों ने एक-दूसरे को क्षमा कर दिया और विद्वेष के स्थान में पारस्परिक मंगल-कामना की भावना दोनों के भीतर उमड़ आई।

राजा पास ही किसी जंगल में शिकार कर रहा था। इर्मा का अन्तिम पत्र पाने के समय से वह अपनी प्रजा की भलाई के उपाय सोचने और अपनी स्वार्थपूर्ण विलासिता के भावों को जड़ से नष्ट करने के उद्योग में निरन्तर लगा हुआ था। उसे जब मालूम हुआ कि इर्मा मृत्यु-शय्या पर पड़ी हुई है, तो वह अपने घोड़े पर सवार होकर बड़ी तेज़ी से उसे दौड़ाता हुआ कौन्टेस की कुटिया में पहुँचा। पर उसके पहुँचने के पहले ही इर्मा की मृत्यु हो चुकी थी। रानी रो रही थी। राजा को देखकर रानी ने कहा—"मुझे क्षमा करो! तुमने भी कौन्टेस की ही तरह अपने पिछले कर्मों का प्रायश्चित्त कर लिया है। केवल मैं ही नहीं कर पाई हूँ!" उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे।

राजा ने जब अपने प्रति रानी का भाव इस प्रकार बदला हुआ पाया, तो उसे बड़ा हर्ष हुआ। रानी ने अपने गले से एक कवच उतार कर उसे दिया। वह उसके विवाह के समय की अंगूठी थी

जिसे राजा ने उसे दिया था। इतने दिनों तक वह उसे अपने हृदय से लगाये हुए थी। राजा ने नये सिरे से वह सुहाग की अंगूठी अपने हाथ से रानी की उँगली में पहना दी और दोनों वर्षों बाद हर्ष-गद्गद हृदय से एक दूसरे के गले मिले।

दूसरे दिन सूर्य निकलने के पहले ही कौन्टेस को पृथ्वी माता के हरित् अञ्चल के भीतर छिपाकर सदा के लिये सुला दिया गया। मृतक-सत्कार हो जाने के बाद राजा और रानी नीचे घाटी में चले आए। वहाँ से ऊषा के अरुण प्रकाश में उन्होंने फिर एक बार उस गिरि-शिखर की ओर देखा जहाँ इर्मा क़ब्र में गाड़ दी गई थी।

ल्यू वालेस

लेविस उर्फ़ ल्यू वालेस का जन्म सन् १८२७ में अमेरिका की इण्डियाना रियासत के अन्तर्गत ब्रुकविल नामक स्थान में हुआ।

जब मेक्सिकन युद्ध छिड़ा, तो अपने छात्र-जीवन को तिलाञ्जलि देकर वह युद्ध में भरती हो गया। अमेरिकन गृह-युद्ध में भी उसने भाग लिया और स्वयंसेवक सेना के मेजर-जनरल के पद तक पहुँच गया। युद्ध समाप्त होने के बाद वह फिर क़ानून की शिक्षा प्राप्त करने लगा। सन् १८७८ से १८८१ तक वह यूटा का गवर्नर रहा और १८८१ से १८८९ तक टर्की में अमेरिकन मन्त्री की हैसियत से रहा। टर्की का तत्कालीन अत्याचारी शासक अब्दुल हमीद उसका परम मित्र बन गया था।

साहित्य रचना की ओर उसका विशेष झुकाव था और अपने तीन उपन्यासों से उसने अमर कीर्ति प्राप्त की है। उसका पहला उपन्यास 'दि फेयर गाड' १८७३ में प्रकाशित हुआ, 'बेन हूर' १८८० में और 'दि प्रिन्स आफ़ इण्डिया' १८९३ में। प्रथम उपन्यास स्पेन-निवासियों द्वारा मेक्सिको-विजय की घटना से संबन्धित है। मेक्सिको के जिन मूलनिवासियों पर आक्रमण करके साम्राज्यवादी स्पेन-वासियों ने जो अत्याचार किए उनका वर्णन बड़ी खूबी के साथ उक्त रचना में किया गया है और मूल-निवासियों के प्रति मार्मिक सहानुभूति प्रदर्शित की गई है। जिस उपन्यास

ने ल्यू वालेस को अमर कर दिया है वह है 'बेन-हूर'। इस रचना में महात्मा ईसा के जन्म के समय रोमन शासकों द्वारा पीड़ित यहूदी जाति के जीवन का जो यथार्थ वर्णन और मार्मिक चित्रण किया गया है वह वास्तव में अद्वितीय है। यह रचना इतनी अधिक लोकप्रिय हुई है कि यूरोप तथा अमेरिका के सुप्रसिद्ध रंगमञ्चों में अनेक बार इसका नाटकीय प्रदर्शन हो चुका है।

ल्यू वालेस की मृत्यु सन् १९०५ में हुई।

—:o:—

बेन-हूर

महात्मा ईसा को जन्म लिए बीस वर्ष हो चुके थे। पर किसी को इस बात की खबर नहीं थी कि पापियों के उद्धार के लिये एक ऐसे महापुरुष ने पृथ्वी में अवतार लिया है, जो शीघ्र ही दलितों के जीवन में एक महाक्रान्ति मचा देगा। महात्मा ईसा के स्वजातीय देशवासी साम्राज्यवादी रोमन महाप्रभुओं के कठोर शासन के लौह-चक्र के नीचे कुचले जा रहे थे। उस स्वाभिमानी जाति का आत्म-गौरव अत्यन्त निर्ममता के साथ रौंदा जा रहा था। रोमन लोग अपनी यहूदी प्रजा को अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखते थे, और उन पर मनमाना अत्याचार करते थे। यहूदी लोग भी रोमनों से कुछ कम घृणा नहीं करते थे, पर अपनी घृणा को व्यक्त करने का साहस उनमें नहीं रह गया था।

वेलेरियस ग्रेटस यूडिया का नया रोमन गवर्नर नियुक्त होकर यरूशलम में आया हुआ था। उसके स्वागत का विराट् आयोजन सरकारी अध्यक्षों की ओर से हो रहा था, जिसमें उनके कुछ 'जी-हुजूर'-वादी यहूदी पिट्ठू भी भाग ले रहे थे। जब उसका जलूस यरूशलम की सड़कों से होकर निकल रहा था, तो एक धनी यहूदी युवक अपने विशाल भवन के छज्जे से उस दृश्य को देख रहा था। कुछ गरम रक्तवाले यहूदी युवक ज़ोर ज़ोर से चिल्लाकर और तालियाँ पीटते हुए गवर्नर को लक्ष्य करके व्यंगात्मक वाक्य बोलते चले जाते थे। इससे रोमन कर्मचारी जले ही हुए थे कि अकस्मात् जिस छज्जे पर वह धनी युवक खड़ा था, उसमें से एक आधा उखड़ा हुआ ईंट खिसककर नीचे गिर पड़ा और भाग्य की विडम्बना से ठीक गवर्नर के ऊपर जा गिरा। गवर्नर बच गया,

और उसे विशेष चोट नहीं आई, पर यहूदियों को दण्डित करने का कोई भी मौक़ा रोमन कर्मचारी हाथ से जाने देना नहीं चाहते थे। इसके अलावा, धनी यहूदियों की सम्पत्ति को हड़पने का कोई बहाना मिलने पर उसका पूरा लाभ उठाने के लिये रोमन लोग सब समय तैयार रहते थे।

जिस यहूदी युवक के छज्जे से ईंट गिरा था, उसका नाम बेन-हूर था। गवर्नर का दक्षिण-हस्त और प्रियपात्र मेसाला यद्यपि उस युवक का मित्र रह चुका था, तथापि शासक-सम्प्रदाय के एक युवक की मित्रता शासित सम्प्रदाय के किसी व्यक्ति से कब तक निभ सकती थी? वरन् बेन-हूर का वह छुटपन का मित्र मेसाला ही उसका सबसे बड़ा शत्रु बन बैठा था, और उसे एक अमित ऐश्वर्य का अधिकारी जानकर उससे जलने लगा था। इसलिये बेन-हूर को ईंट गिराने के लिये दण्डित करने के उद्देश्य से मेसाला तत्काल उसके घर के भीतर घुसा, और घर की स्त्रियों की आब्रू का कोई खयाल न करके अन्तःपुर से होते हुए सीधे उसके पास पहुँचा। बेन-हूर को गिरफ़्तार कर लिया गया, उसकी सारी ज्ञात सम्पत्ति छीन ली गई, और उसे एक रोमन जहाज़ में कठोर शृंखला-बद्ध अवस्था में मल्लाह के काम में नियुक्त होने के लिये भेज दिया गया। उस ज़माने में जब किसी व्यक्ति को कठोर से कठोर दण्ड देना होता था तो उसे किसी बड़े जहाज़ में भेज दिया जाता था और उसके पाँवों में कड़ी बेड़ियाँ पहनाकर सैकड़ों दूसरे क़ैदियों के साथ जहाज़ को रात-दिन खेते रहने के काम में नियुक्त कर दिया जाता था। वहाँ उसकी ऐसी दुर्दशा होती थी कि एक वर्ष से अधिक कोई भी क़ैदी जीवित नहीं रह पाता था।

केवल बेन-हूर को ही दण्डित नहीं किया गया, उसकी माता और बहन को एण्टोनिया के प्रसिद्ध बुर्ज की एक गुप्त काल कोठरी

में आजीवन कारावास-दण्ड भुगतने के उद्देश्य से बन्द कर दिया गया। वहाँ उनकी यह दुर्दशा हुई कि कोढ़ियों के बीच में रहना पड़ा, और फलतः उन्हें भी कोढ़ हो गया। कठोर अग्नि परीक्षा के उन दिनों में केवल एक घटना ऐसी घटित हुई जिसने बेन-हूर के मृत प्राणों में नवीन स्फूर्ति और नव-जीवन का सञ्चार कर दिया। जब रोमन कर्मचारी उसे जहाज़ में दासत्व की चिर-शृंखला में बाँधने की तैयारियाँ कर रहे थे, तो उसे सहसा ऐसा अनुभव हुआ जैसे किसी ने उसकी पीठ पर अपना करुणा-कोमल हाथ रख दिया। वह तत्काल अपनी मोहाच्छन्न अवस्था से जाग पड़ा। उसने ऊपर को देखा। एक उसी की उम्र का नवयुवक अत्यन्त स्निग्ध, सरस, कोमल और करुण दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था। उसकी आँखों में एक ऐसी स्वर्गीय आभा झलक रही थी कि बेन-हूर मन्त्र-मुग्ध होकर कुछ समय के लिये देखता ही रह गया। कुछ देर बाद वह स्वर्गीय मूर्ति अन्तर्हित हो गई, पर बेन-हूर के हृदय में वह अपना चिर-स्मरणीय चिह्न छोड़ गई। जिस दिव्य स्वरूप का दर्शन बेन-हूर को उस समय हुआ था, वह महात्मा ईसा के अतिरिक्त और कोई नहीं था। बेन-हूर को उस समय इस बात का कुछ भी पता नहीं था कि जिस व्यक्ति ने उसे मंगलमय आशीर्वाद दिया है वह एक ईश्वरीय आत्मा है, जिसने उसकी जाति के उद्धार के लिये अवतार लिया है। पर उस समय से अपनी आत्मा में वह एक अलौकिक बल का अनुभव करने लगा।

जिस जहाज़ में बेन-हूर कठोर शृंखलाबद्ध होकर मल्लाह के काम में नियुक्त किया गया वह रोमन नौसेना के प्रधान अध्यक्ष एरियस का रणपोत था। कुछ ही समय बाद एक भयंकर समुद्री लड़ाई में वह जहाज़ नष्ट हो गया। बेन-हूर ने एक रेती से अपनी बेड़ियाँ काटकर एरियस के प्राणों की रक्षा की। एरियस उसकी वीरता से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उसे अपना पोष्य पुत्र बना लिया, और

अपने शत्रु से इस प्रकार पूर्ण विजय प्राप्त करके बेन-हूर के विजयोल्लास का ठिकाना न रहा। ईस्थर नाम की एक सुन्दरी और सहृदया यहूदी युवती से बेन-हूर का प्रेम हो गया था। ईस्थर भी उसे अपने प्राणों की अपेक्षा अधिक चाहने लगी थी। रथ की दौड़ के अवसर पर वह दर्शक-मण्डली में वर्तमान थी और भीत तथा पुलकित हृदय से बेन-हूर की प्रगति देख रही थी। जब तक दौड़ समाप्त न हो गई तब तक उसकी अशान्ति, अस्थिरता और उत्तेजना का अन्त नहीं था। दौड़ समाप्त होने पर वह अपने प्रियतम की विजय से हर्षाकुल हो उठी। पर उसे यह खबर नहीं थी कि उसके अतिरिक्त एक और स्त्री बेन-हूर के तेजोदीप्त व्यक्तित्व और अपूर्व साहसिकता पर मुग्ध होकर उसपर टकटकी लगाए हुए है। वह स्त्री मिस्र की एक संभ्रान्तवंशीया सुन्दरी थी। दौड़ समाप्त होते ही उस मिस्री महिला ने बेन-हूर पर ऐसे डोरे डाले कि वह उसके फन्दे में प्रायः फंस ही चुका था। पर अन्त में ईस्थर के सच्चे प्रेम की विजय हुई।

इस बीच जनता में वह संवाद फैल चुका था कि दासत्व के बन्धन से ग्रस्त यहूदी जाति के उद्धार के लिये एक महान् आत्मा ने जन्म लिया है। कोई कहता था कि वह मसीहा है, और कोई कहता था कि वह यहूदियों का जन्म-सिद्ध राजा है। बेन-हूर चूँकि साम्राज्यवादी रोमन शासकों के अत्याचारों के कारण उनसे बहुत जलता था, इसलिये वह हृदय से चाहता था कि एक ऐसा व्यक्ति प्रकट हो जो रोमनों का विनाश करके उसकी जाति के लोगों को स्वतन्त्र करे और जाति के प्राचीन गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा करे। स्वर्गीय राज्य की स्थापना करनेवाले महापुरुष की आवश्यकता वह नहीं समझता था। कुछ भी हो, इस आशा से कि जिस महान् आत्मा ने जन्म लिया है वह यहूदियों का जन्म-सिद्ध राजा है, बेन-हूर ने उसकी पार्थिव विजय में सहायता करने के उद्देश्य से

अपनी सारी शक्तियाँ, अपना समस्त धन उसकी सेवा में अर्पित करने का निश्चय कर लिया।

पर जो 'राजा' आ रहा था वह वास्तव में आध्यात्मिक जगत् में यहूदियों का राज्य प्रतिष्ठित करने का महान् व्रत लेकर आया था, और उसी महान उद्देश्य से प्रेरित होकर आगे बढ़ता चला जाता था। इस सत्य से बेन-हूर की माँ और बहन उससे पहले परिचित हो गई थीं। जिस गहन काल-कोठरी में वे दोनों कुष्ठ रोग से ग्रस्त होकर बन्द पड़ी हुई थीं, वहाँ से एक दिन जेलर की असावधानता से लाभ उठाकर दोनों भागकर बाहर निकल आईं। जब उन्होंने मसीहा को सड़क पर जाते हुए देखा, तो हृदय-वेदना से व्याकुल और गद्गद होकर गिड़गिड़ा कर बोल उठीं—"प्रभो! हम दोनों का उद्धार कीजिए! हम दोनों नरक-यातना भुगत रही हैं।"

मसीहा ने पूछा—"क्या वास्तव में तुम्हें यह विश्वास है कि मैं तुम्हारा उद्धार कर सकता हूँ?"

उन्होंने उत्तर दिया—"तुम वह मसीहा हो, जिनके बारे में तत्त्वदर्शियों ने भविष्यवाणी की है। तुम जगत् के कल्याण-कर्ता हो!"

मसीहा ने प्रशान्त भाव से कहा—"हे नारी! तुम्हारा विश्वास अमित है! तुम्हारे शरीर से और मन से सब रोग दूर हो जायें, यह मेरा आशीर्वाद है!"

आशीर्वाद मिलते ही माता और पुत्री दोनों वास्तव में किसी आश्चर्यजनक दैवी माया से चंगी हो गईं। उनके शरीर से कुष्ठ रोग का लेश न रहा, और उनके मन में मसीहा की महा महिमा का उज्ज्वल आलोक प्रभासित हो उठा।

यह माहात्म्य देखकर बेन-हूर की भी आँखें खुलीं। वह राष्ट्रीय उत्थान और पार्थिव राज्य की प्रतिष्ठा द्वारा अत्याचारियों से

जेन पोर्टर

जेन पोर्टर का जन्म इंगलैण्ड के अन्तर्गत डरहम नामक स्थान में सन् १७७६ में हुआ। उसका सारा व्यक्तिगत और साहित्यिक जीवन उसकी बहन अन्ना मेरिया पोर्टर और उसके भाई सर राबर्ट केर पोर्टर के साथ घनिष्ट रूप से जुड़ित रहा। अन्ना मेरिया पोर्टर ने अपनी बहन की ही तरह उपन्यास-क्षेत्र में ख्याति पाई और सर राबर्ट केर पोर्टर अपनी चित्रकला तथा विश्व भ्रमण के लिये प्रसिद्ध था।

जब जेन पोर्टर के पिता की मृत्यु हुई, तो उस समय वह बहुत छोटी थी। उसकी माँ अपने तीनों बच्चों को लेकर एडिनबरा चली गई। एडिनबरा में अन्ना मेरिया ने सन् १७९७ और १८३० के बीच बहुत से उपन्यास लिखे। जेन ने अपना प्रथम उपन्यास 'थैडियुस आफ़ वारसा' सन् १८०३ में लिखा। इस उपन्यास के प्रकाशित होते ही जेन ने आश्चर्यजनक प्रसिद्धि प्राप्त कर ली। कई यूरोपियन भाषाओं में उसका अनुवाद हुआ और सर्वत्र उसकी चर्चा होने लगी।

सर वाल्टर स्काट के 'वेवरली' नामक उपन्यास के प्रकाशन के पहले ही जेन पोर्टर ने 'स्काटिश चीफ़्स' नामक एक राष्ट्रीय रोमान्स' लिखा। इस उपन्यास की शैली अत्यन्त परिमार्जित और आकर्षक थी। इसके बाद उसने कई उपन्यास और लिखे, जिनमें प्रमुख ये हैं—'दि पेस्टर्स फायर-

साइड', 'ड्यूक क्रिश्चियन आफ़ ल्यूनेनबर्ग', 'कमिंग आउट' और 'दि फील्ड आफ़ फार्टी फुटस्टेप्स'। एक उपन्यास उसने अपनी बहन के साथ मिलकर लिखा, उसका नाम रखा गया 'टेल्स राउन्ड ए विन्टर हर्थ।' उसने कुछ नाटकों की रचना भी की और सामयिक पत्रों में उसके कई लेख भी प्रकाशित होते रहते थे।

जेन पोर्टर कुछ समय तक रूस में अपने भाई सर राबर्ट के साथ रही और जब सर राबर्ट की मृत्यु हो गई, तो वह अपने सबसे बड़े भाई के साथ ब्रिस्टल में जाकर रहने लगी। वहीं २४ मई, १८५० को उसकी मृत्यु हुई।

—:o:—

पोलैण्ड का वीर-युवक

यह कथा उस ज़माने की है जब चिर-अभागे राष्ट्र पोलैण्ड पर रूस और आस्ट्रिया की सम्मिलित शक्तियों ने मिलकर भयंकर रूप से आक्रमण किया था। स्वतन्त्रता-प्रेमी पोलैण्ड-निवासी अपनी मातृभूमि की रक्षा के उद्देश्य से कास्सिउस्को नामक जनरल के तत्त्वावधान में तन, मन और धन से लड़े, पर शत्रुओं की दुर्दमनीय दानवी शक्ति से अन्त में उन्हें हार माननी पड़ी। तब से लेकर विगत महायुद्ध तक पोलैण्ड की कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं रही। महायुद्ध के बाद पोलैण्ड को फिर से स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, पर इधर फिर हिटलर ने उसे ध्वंस-विध्वंस कर डाला है। इस वीर राष्ट्र की पराधीनता की करुण कहानी की स्मृति पाठकों के मन पर ताज़ा होने के कारण जेन पोर्टर लिखित 'थेडियुस आफ़ वारसा' नामक उपन्यास का संक्षिप्त सार अवश्य ही कौतूहलोद्दीपक सिद्ध होगा।

पोलैण्ड में सोबिएस्की वंश अत्यन्त सम्भ्रान्त था और देशप्रेम के लिये प्रसिद्ध था। बुड्ढे सोबिएस्की की धमनियों में अभी तक गरम रक्त प्रवाहित हो रहा था, और अपनी मातृभूमि पर अत्याचारी राष्ट्रों के आक्रमण का समाचार पाते ही वह युद्ध के लिये तैयार हो गया। अपने नाती थेडियुस को भी उसने उसकाया और दोनों सेनानायकों के रूप में पूरी शक्ति से शत्रुओं का सामना करने के लिये भिड़ गए। थेडियुस अभी एक अनुभवहीन नवयुवक था, और इसके पहले वह कभी किसी युद्ध में नहीं गया था। फिर भी उसका उत्साह और वीरता देखकर उसका बुड्ढा नाना गर्व से फूला नहीं समाता था।

युद्ध में जाने के पहले थेडियुस की माता कौन्टेस टेरेस ने अपने लड़के को एक बहुत छोटे आकार का चित्र प्रदान किया। वह चित्र वास्तव में थेडियुस के पिता का था। थेडियुस से यह कहा गया था कि उसका पिता मर चुका है। पर इस बार उसकी माता ने भी उसे धोखे में रखना उचित नहीं समझा। उसने चित्र के साथ एक पत्र भी अपने बेटे के हाथ में दे दिया उस पत्र से थेडियुस को मालूम हुआ कि उसका पिता सैकविल नामक एक अंगरेज़ है। वह अंगरेज़ एक बार सोबिएस्की इस्टेट में अतिथि के रूप में आया था। वहाँ टेरेस से उसका प्रेम हो गया। प्रेम के परिणाम-स्वरूप जब टेरेस गर्भवती हो गई, तो सैकविल उसे त्यागकर निकल भागा। थेडियुस को उसके दादा के ही वंश का उपनाम—सोबिएस्की—प्राप्त हुआ। उसके दादा ने बाद में उससे यह वचन ले लिया था कि वह इस उपनाम को किसी भी हालत में जीवन-भर नहीं बदलेगा।

जब पत्र पढ़कर थेडियुस को यह मालूम हुआ कि वह एक अंगरेज़ का लड़का है, तो उसे किसी प्रकार की ग्लानि का अनुभव न होकर प्रसन्नता ही हुई। इसका कारण यह था कि उसका एक घनिष्ठ मित्र भी अंगरेज़ था, जिसका नाम पेमब्रोक सोमरसेट था। पेमब्रोक जब रूस-भ्रमण कर रहा था, तो उसे रूस की तरफ़ से पोलैण्ड के साथ लड़ने की सनक सवार हुई। युद्ध में वह घायल हो गया, और यदि थेडियुस ने ऐन मौक़े पर उसकी सेवा न की होती, तो निश्चय ही वह घोर दुर्गति के साथ मृत्यु को प्राप्त हो जाता। थेडियुस उस शत्रुपक्षी युवक की दुर्दशा देखकर करुणा से पिघल गया और उसे अपने घर ले गया। वहाँ उसने उसकी सेवा शुश्रूषा ऐसे अच्छे ढंग से की कि वह स्वस्थ हो गया। पेमब्रोक का व्यवहार ऐसा अच्छा था कि सोबिएस्को परिवार के सब लोग उसके प्रति स्नेह का भाव प्रदर्शित करने लगे, और वह उन लोगों का परम आत्मीय बन गया।

अन्त में इंगलैण्ड से उसके लिये बुलावा आया, तो वह हार्दिक दुःख के साथ अपने पोलैण्ड-निवासी स्वजनों से विदा हुआ। उसने थेडियुस से इस बात के लिये बड़ा आग्रह किया कि युद्ध समाप्त होने पर वह एक बार निश्चय ही इंगलैण्ड आवे, और वहाँ आकर लण्डन में उससे अवश्य मिले।

थेडियुस को इस बात का पूरा विश्वास था कि युद्ध में अवश्य ही पोलैण्ड की विजय होगी। पर वास्तव में पोलैण्ड के दुर्भाग्य के दिन आ पहुँचे थे। रूसी और आस्ट्रियन सैन्यों की संख्या भी बहुत अधिक थी और युद्ध का सामान भी बहुत बढ़ा-चढ़ा था। पोलैण्ड के सिपाही प्रत्येक स्थान में हारते चले गए। अन्त में उनका प्रधान जनरल कार्सीउस्को क़ैद हो गया। पोलैण्ड के राजा ने जब देखा कि युद्ध को जारी रखने से समग्र जनता के विनाश के सिवा कोई लाभ नहीं है, तो उसने आत्म-समर्पण कर दिया, और पोलैण्ड के अंगच्छेदन के सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर कर दिए।

थेडियुस सोबिएस्की के दुःख, शोक और निराशा का अन्त न रहा। उसने अपने अनुचर सिपाहियों को फिर से संगठित करने की व्यर्थ चेष्टा की। क़ज्ज़ाक लोग रूस की तरफ़ से पराजित सेना पर अत्यन्त निर्भयता के साथ टूट पड़े। थेडियुस ने जब कोई चारा न देखा, तो वह भागकर अपनी 'इस्टेट' की ओर चला गया। रास्ते में उसे अपने बूढ़े नाना की लाश पड़ी हुई मिली। शत्रुओं का सामना करते हुए उसकी मृत्यु हो गई थी। पर नाना की मृत्यु पर शोक करने का अवकाश उसे नहीं था। वह दौड़ा हुआ अपने क़िले-नुमां भवन में जा पहुँचा। वहाँ घर की सब स्त्रियाँ अरक्षित अवस्था में पड़ी हुई थीं। थेडियुस की माँ एक घातक रोग से पीड़ित होकर कराह रही थी। थेडियुस उसकी शुश्रूषा के उद्देश्य से ठहर गया। पर शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई। वहाँ अधिक ठहरना थेडियुस के लिये घातक था। वह तत्काल अपने घोड़े पर सवार होकर उसे तेज़

रफ्तार से दौड़ाता हुआ भाग निकला। शत्रु-सैनिकों ने उसके क़िले पर आक्रमण करके उसमें आग लगा दी। अपने देश में टिके रहने का कोई उपाय अब उसके लिये नहीं रह गया था। मातृभूमि से अन्तिम विदाई लेकर वह इंगलैण्ड की ओर चल पड़ा। सोबिएस्की वंश की परंपरागत संपत्ति बहुत-कुछ मातृभूमि की रक्षा के उद्देश्य से सेना की सहायता में समाप्त हो चुकी थी और जो शेष बची थी वह लुट गई थी। थेडियुस निःस्व अवस्था में इंगलैण्ड पहुँचा।

उस घोर दुर्गति और निराशा की अवस्था में भी थेडियुस एक आशा को बलपूर्वक अपने हृदय से जकड़े हुए था। वह यह कि पेमब्रोक सोमरसेट से शीघ्र ही उसकी भेंट हो जायगी, और अपने मित्र से बहुत दिनों बाद मिलने पर अपने और अपने देश के घोर कष्ट तथा संकट का वर्णन उसके आगे करके उसे विशेष सान्त्वना प्राप्त होगी। युद्ध के झंझट में फंसे रहने के कारण पेमब्रोक का ठिकाना वह खो चुका था। इसके अतिरिक्त जब से पेमब्रोक ने पोलैण्ड छोड़ा था तब से उसने एक पत्र भी थेडियुस के पास नहीं भेजा था। पर इस बात से थेडियुस के मन में किसी प्रकार की शंका उत्पन्न नहीं हुई थी। उसके मन में यह विश्वास दृढ़ता के साथ जमा हुआ था कि उसका अंगरेज़ मित्र उसे कभी भूल नहीं सकता।

लण्डन पहुँचने पर थेडियुस ने एक होटल की शरण ली। उसने सोचा कि जब तक पेमब्रोक का पता नहीं मालूम होता, तब तक उसी होटल में रहना ठीक होगा, और बाद में वह अपने मित्र के यहाँ जाकर रहेगा। पर पेमब्रोक का पता नहीं लग पाता था। होटल का व्यय अधिक समय तक चुका सकने की स्थिति उसकी नहीं थी। इसलिये एक दिन जब एक दयालु स्त्री के साथ सड़क में उसका परिचय हुआ, तो वह उसकी राय मानकर उसके साथ एक सस्ते किराएवाले स्थान में जाकर रहने लगा। उस नये मकान में पहुँचते ही थेडियुस इतने दिनों के शारीरिक परिश्रम और मानसिक

उत्तेजना के परिणाम-स्वरूप सख्त बीमार पड़ गया। जो स्त्री उसे अपने साथ उस मकान में लाई थी, उसने यदि थेडियुस की सेवा-शुश्रूषा न की होती, तो वह मर ही गया होता।

धीरे-धीरे उसका स्वास्थ्य सुधरने लगा। पर अब उसके पास एक पैसा भी नहीं बचा था। उसने अपनी चीज़ों को एक-एक करके गिर्वी रखना आरंभ कर दिया, और कुछ दिनों तक इसी प्रकार अपना खर्चा चलाता रहा। इस घोर दुर्गति के अवसर पर एक और संकट उसके ऊपर यह टूट पड़ा कि जिस दयाशीला महिला ने उसकी शुश्रूषा की थी उसकी मृत्यु हो गई। चूँकि उस महिला के पास एक भी पैसा नहीं था, इसलिये उसकी दवा-दारू के समस्त व्यय का भार थेडियुस को अपने ऊपर लेना पड़ा। इस बीच थेडियुस ने अपना नाम बदल कर 'मिस्टर कान्स्टेन्टाइन' रख लिया था।

कुछ समय बाद पेमब्रोक सोमरसेट का पता मालूम हो जाने पर थेडियुस ने उसके नाम पर दो पत्र भेजे। पर दोनों पत्र बिना किसी उत्तर के उसके पास वापस चले आए। उसके दुःख और निराशा का ठिकाना न रहा। एक दिन उसने सड़क में पेमब्रोक को जाते हुए देखा, पर पेमब्रोक उससे कतराकर निकल गया। थेडियुस को विश्वास हो गया कि जिस मित्र पर भरोसा करके वह इंगलैंड आया था, वह उसकी वर्तमान दीन-हीन दशा को देखकर उससे घृणा करने लगा है। जिस व्यक्ति को उसने मरने से बचाया, उसकी इस प्रकार की उदासीनता देखकर थेडियुस के मनुष्यता-सम्बन्धी विश्वास को गहरा धक्का पहुँचा।

वह यह सोच ही रहा था कि परदेश में वह जीविकाहीन अवस्था में किस प्रकार दिन बितावे कि अकस्मात् एक और भार उसके ऊपर आ धमका। पोलिश सेना का एक भूतपूर्व बुड्ढा जनरल उसके पास आया। वह बीमार था और उसके पास चिकित्सा के

लिये कोई भी साधन नहीं बचा था। थेडियुस के पास जो दो-एक चीज़ें शेष रह गई थीं उन्हें गिर्वी रखकर उसने जनरल की सेवा-शुश्रूषा की। अन्त में जब कोई चीज़ गिर्वी रखने के लिये भी नहीं बची, तो थेडियुस ने अपनी चित्रकला-सम्बन्धी साधारण जानकारी से कुछ कमाने का निश्चय किया। दो-चार चित्र बनाकर उन्हें बेचकर उसने जो कुछ प्राप्त किया उससे वह काम चलाने लगा। पर दो व्यक्तियों का निर्वाह उतने से नहीं हो पाता था।

अन्त में जब थेडियुस की दुर्गति चरम सीमा को पहुँच गई, तो लेडी टाइनमाउथ नाम की एक प्रतिष्ठिता और धनी महिला से उसका परिचय हो गया। लेडी टाइनमाउथ उसकी बातों से प्रभावित होकर उसके प्रति सदय हो गई। उसने अपने दो-चार मित्रों से उसका परिचय कराया। फल यह हुआ कि कुछ स्त्रियाँ उससे विभिन्न भाषाओं की शिक्षा प्राप्त करने को राज़ी हो गईं। इस प्रकार के अध्यापन का काम मिल जाने से थेडियुस की आर्थिक चिन्ता कुछ दूर हुई। पर शीघ्र ही इस काम में भी उसे संकट का सामना करना पड़ा। उसकी दो शिष्याएं उससे प्रेम करने लगीं, और दोनों ने अपने हृदय की बात उसके आगे प्रकट भी कर दी। इन दो महिलाओं में से एक का नाम था लेडी सारा रास, जो विवाहित थी; दूसरी का नाम था यूफेमिया डण्डास, जो एक मूर्ख और भावुकता-पूर्ण कुमारी थी। इन फ़ैशनेबुल महिलाओं के चक्रजाल में पड़कर थेडियुस का उन्नत स्वभाव विद्रोही हो उठा। उसके मन में उनके प्रति घृणा उत्पन्न होने लगी; पर अपनी निपट निर्धनता के कारण विवश होकर वह नौकरी छोड़ने में असमर्थ था।

यूफेमिया डण्डास के यहाँ एक दिन लेडी मेरी बोफोर से उसका परिचय हो गया। यह सुन्दरी और सहृदय-स्वभाव युवती एक बहुत बड़े धनी की एक मात्र उत्तराधिकारिणी थी, और थेडियुस (उर्फ़ मिस्टर कान्स्टेन्टाइन) के लिये जो बात अधिक महत्त्वपूर्ण

थी वह यह कि लेडी मेरी बोफोर उसके भूतपूर्व मित्र पेमब्रोक सोमरसेट की निकट-सम्बन्धिनी थी। इस महिला के शील-स्वभाव का ऐसा प्रभाव थेडियुस पर पड़ा कि वह हृदय से उसे चाहने लगा। वह भी थेडियुस के प्रति आकर्षित हो गई थी।

अपने इन अंगरेज़ मित्रों के बीच में इतने दिनों तक रहने से थेडियुस ने उनमें से बहुतों के मन में यह सन्देह उत्पन्न कर दिया था कि वह एक साधारण भाषा-शिक्षक के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ है। उसके बात-व्यवहार और शील-स्वभाव में जो एक अपूर्व शालीनता वर्तमान थी उसने उसके मित्रों को बहुत अधिक प्रभावित कर दिया था, और इस बात पर विश्वास करना उनके लिये असंभव सा हो गया था कि वह एक साधारण श्रेणी का व्यक्ति है। वे लोग भरसक यह जानने की चेष्टा करते रहे कि 'मिस्टर कान्स्टेन्टाइन' का पूर्व जीवन कहाँ और कैसे बीता है; पर थेडियुस ने एक भी बात अपने सम्बन्ध की व्यक्त नहीं होने दी। यदि वह अपना यथार्थ परिचय दे देता तो उसके मित्रों और प्रशंसकों की संख्या बहुत अधिक बढ़ जाती, क्योंकि इंगलैण्ड में उन दिनों पोलैण्ड के वीर सैनिकों की प्रशंसा की आवाज़ चारों ओर गूंज रही थी, और उनके अधिनायक कासिउस्को और रण-धीर सोविएस्की (थेडियुस के नाना) की ख्याति सर्वत्र फैल चुकी थी। पर थेडियुस अपना यथार्थ परिचय देकर, अपनी विजित मातृभूमि की ग्लानि की चर्चा को फिर से उभाड़कर यश प्राप्त करना नहीं चाहता था। उसने निश्चय कर लिया था कि अपने वर्तमान गुणों के बल पर यदि वह अपने को खड़ा रख सकने में समर्थ हुआ, तो ठीक है, नहीं तो उसके टिके रहने की सार्थकता नहीं है।

पर उसके इस हठ का परिणाम उसके लिये अत्यन्त कष्टकर हुआ। कुछ समय बाद जब उसके शरणागत जनरल बुटज़ू की मृत्यु हो गई, तो उसकी अन्त्येष्टि क्रिया में जो व्यय हुआ उसे

चुकाने में वह असमर्थ निकला। ऋण न चुका सकने के अपराध में वह क़ैद हो गया। अन्त में मेरी बोफोर ने उसकी दुर्दशा को चरम सीमा में पहुँचा हुआ जानकर अपने निकट-सम्बन्धी पेमब्रोक को जेल में उसके पास भेजा; और उससे यह प्रार्थना की कि वह थेडियुस का ऋण चुकाकर उसे जेलख़ाने से मुक्त कर लावे। पर पेमब्रोक के मन में यह धारणा जम गई थी कि जिस व्यक्ति के लिये उसकी रिश्ते की बहन मेरी बोफोर इतनी करुणाशील हो उठी है, वह वास्तव में एक पेशेवर गुण्डा है; इसलिये स्वयं जेलख़ाने में न जाकर उसने अपने एक आदमी को भेज दिया। यदि वह स्वयं गया होता, तो थेडियुस से इतने दिनों बाद उसकी भेंट हो जाती। अपने आदमी के हाथ उसने रुपया भेज दिया था, इसलिये ऋण चुक जाने पर थेडियुस जेल से छूट गया।

लेडी टाइनमाउथ सोमरसेट परिवार के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित थी। उसके घर पर एक दिन पेमब्रोक आया हुआ था। वहीं अकस्मात् थेडियुस से उसकी भेंट हो गई। पेमब्रोक ने जब अपने मित्र को पहचाना, तो उसे हार्दिक प्रसन्नता हुई। उसने थेडियुस को इस बात के लिये उलाहना दिया कि उसने इतने दिनों तक अपने लण्डन आने की सूचना उसे नहीं दी, न उसकी खोज की। इसपर थेडियुस ने सूचित किया कि उसने कई पत्र पेमब्रोक के पते पर भेजे, पर सब उसके पास बिना उत्तर के वापस चले आए। पेमब्रोक को यह सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। पर उसने यह बात स्वीकार की कि उसके पिता के मन में पोलैण्ड के प्रति सदा घृणा का भाव वर्तमान रहा है, और उसने पेमब्रोक को पोलैण्ड जाने से निषेध कर दिया था। इस कारण पेमब्रोक ने कभी अपने पिता को इस बात की सूचना नहीं दी थी कि वह पोलैण्ड गया था, और वहाँ सोबिएस्की परिवार से उसकी घनिष्ठ मित्रता हो गई

थी। उसने अनुमान लगाया कि उसके पिता ने थेडियुस के सब पत्र बिना उसे दिखाए वापस कर दिए होंगे।

पर अब जब लण्डन में थेडियुस से पेमब्रोक का मिलन हो गया, तो पेमब्रोक ने अपने पिता से अपनी पोलैण्ड-यात्रा से संबंध रखनेवाली सब बातें स्पष्टतया कह डालीं। साथ ही उसने यह भी प्रार्थना की कि जिस पोलैण्ड-निवासी सम्भ्रान्त युवक ने उसके प्राणों की रक्षा की थी, उसे उनके घर में रहने की आज्ञा दे दी जावे। पर पेमब्रोक का पिता सर राबर्ट सोमरसेट अपने बेटे की इस कातर प्रार्थना से पिघलने के बदले और अधिक बिगड़ बैठा। उसने इस चेष्टा में कोई बात उठा न रखी कि उन दोनों मित्रों के बीच वैमनस्य उत्पन्न हो जावे।

बाद में यह बात प्रकट हुई कि कई वर्ष पहले सर राबर्ट ने पोलैण्ड की यात्रा की थी। वहाँ टेरेस सोबिएस्की से उसका प्रेम हो गया, और उससे उसने विवाह कर लिया। पर विवाह के कुछ ही समय बाद अपनी पोलिश पत्नी को अत्यन्त नीचतापूर्वक त्याग कर सर राबर्ट भागकर इंगलैण्ड चला आया था। तबसे उसके मन में बराबर यह भय बना रहा कि कभी कोई पोलैण्ड-निवासी उसके नीचकर्म की बात मालूम करके उसे पकड़कर दबोच न डाले। निश्चय ही उसे यह मालूम हो गया था कि थेडियुस सोबिएस्की उसका लड़का है, इसलिये वह उससे और भी अधिक दूर रहने की चिन्ता में था। उसे डर था कि कहीं थेडियुस उसका भण्डाफोड़ न कर डाले और सोमरसेट इस्टेट का जो वर्तमान उत्तराधिकारी (पेमब्रोक सोमरसेट) है, उसे नाजायज्ञ सिद्ध करके कहीं स्वयं उसकी सम्पत्ति को हड़पने का उद्योग न करे।

पर धीरे-धीरे जब सर राबर्ट को यह विश्वास हो गया कि उसकी प्रथम विवाहिता पत्नी से उत्पन्न लड़का बड़ा ही उदार-

स्वभाव और सज्जन है, तो उसने उसे अपने पास रख लिया। सर राबर्ट को अपना पिता मानने में उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। थेडियुस ने यह वचन दिया कि वह पेमब्रोक को अपने सगे भाई के समान मानेगा और पेमब्रोक अपने बाप की जिस सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनेगा उसपर वह (थेडियुस) किसी प्रकार का दावा नहीं करेगा। पर चूँकि उसने अपने नाना को यह वचन दे दिया था कि वह सदा सोबिएस्की ही बना रहेगा, इसलिये उसने अपने को सोमरसेट कहने से अस्वीकार किया। सर राबर्ट ने थेडियुस को अलग से अपनी सम्पत्ति का एक भाग प्रदान कर दिया। कुछ समय बाद लेडी मेरी बोफोर से उसका विवाह हो गया, और वह पक्का अंगरेज़ बन गया।

आइबानेज़

विन्सेन्ट ब्लास्को आइबानेज़ का जन्म स्पेन के अन्तर्गत वालेन्शिया नामक स्थान में सन् १८६७ में हुआ। जब वह बड़ा हुआ, तो उसके पिता ने, जो एक साधारण दुकान का मालिक था, उसके पढ़ने-लिखने की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया। बाद में उसने वालेन्शिया विश्व-विद्यालय से क़ानून की डिग्री प्राप्त की। अपने कालेज-जीवन से ही वह स्पेन की तत्कालीन शासन-व्यवस्था के विरुद्ध था। १८ वर्ष की अवस्था में उसने एक राज-विद्रोहात्मक कविता लिखी। फलस्वरूप उसे जेल भुगतना पड़ा। इसके बाद कई बार सरकार का विरोध करने के कारण जेल जाना पड़ा और पेरिस में तथा इटली में निर्वासित भी होना पड़ा। क्यूबा द्वीप के निवासियों ने जब स्पेनिश सरकार के विरूद्ध विद्रोह मचाया, तो उसे दबाने के लिये स्पेनिश सरकार ने बड़े कड़े उपायों को काम में लाया। आइबानेज़ ने विद्रोहियों का पक्ष लेकर सरकार की कड़ी नीति का घोर विरोध किया। इस 'अपराध' के लिये भी उसे दंड भोगना पड़ा। उसने एक प्रजातन्त्रवादी पत्र निकाला। उस पत्र का सम्पादक, रिपोर्टर और पुस्तक-समालोचक, सब कुछ वही था। बाद में उसने एक प्रकाशन संस्था की स्थापना की। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य स्पेन देश के निवासियों को सस्ते दामों में यूरोपियन देशों के प्रसिद्ध साहित्य से परिचित कराना था।

वह आजीवन नाना उपायों से अपने पिछड़े हुए देश को आधुनिक प्रगति के निकट लाने का प्रयत्न करता रहा। बाद में वह स्पेनिश पार्लामेन्ट का सदस्य चुना गया, और वहाँ अपने दल का नेता बना रहा।

उसके उपन्यासों में स्पेनिश जीवन का अत्यन्त मार्मिक और यथार्थ चित्रण पाया जाता है। वह बड़ा विकट यथार्थवादी था, और श्लीलता तथा अश्लीलता के प्रति तनिक भी ध्यान न देकर सामाजिक चित्रों को वह ऐसे नग्न रूप में सामने रख देता था कि नीतिपंथी जनता घबरा उठती थी। फिर भी उसकी प्रतिभा का क़ायल लोगों को होना पड़ा। जिस उपन्यास का सार वर्तमान प्रकरण में दिया जा रहा है वह उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है। इस उपन्यास का अनुवाद संसार की प्रायः सभी प्रमुख भाषाओं में हो चुका है।

—:०:—

महानाश के अग्रदूत

सन् १८७० में मार्सेलो देनोए की आयु उन्नीस वर्ष की थी। उस समय वह मार्सेल में रहता था। जब यह समाचार आया कि जर्मनी और फ्रान्स में युद्ध छिड़ गया है, तो देनोए शान्ति का पक्षपाती होने के कारण दक्षिण अमेरिका को चला गया। वहाँ प्रारंभ में वह इधर-उधर भटकता रहा, और कहीं जीविका का कोई निश्चित प्रबन्ध वह नहीं कर पाया। अन्त में डान मादारिआगा नामक एक बहुत बड़े धनी जमींदार के यहाँ उसे नौकरी मिल गई।

डान मादारिआगा ने स्वयं अपने उद्योग से एक विशाल सम्पत्ति जोड़ ली थी। वह यद्यपि एक उच्छृंखल और कठोर-प्रकृति व्यक्ति था, तथापि अपने नये फ्रेञ्च निरीक्षक—मार्सेलो देनोए—के प्रति उसके मन में किसी अज्ञात कारण से एक प्रकार की ममता-सी उत्पन्न हो गई थी। एक दिन देनोए ने एक दुर्घटना से मरने से उसे बचा लिया। इस बात का बड़ा गहरा प्रभाव मादारिआगा पर पड़ा। उसने कहा—"फ्रेञ्ची !* मैं तुम्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ। तुम सब विषयों में निपुण और अनुभवी हो। मैं तुम्हें पुरस्कृत करना चाहता हूँ। आज से तुम मेरे परिवार के ही आदमी समझे जाओगे।"

शीघ्र ही देनोए का विवाह मादारिआगा की बड़ी लड़की लुइसा से हो गया। उसके कुछ ही समय बाद कार्ल हार्ट्रौट नामक एक जर्मन युवक से उसकी दूसरी लड़की एलेना का भी विवाह हो गया। मादारिआगा अपनी दोनों लड़कियों को अपने-अपने पति

---

* 'फ्रान्स देश के निवासी !'

के साथ प्रसन्न देखकर स्वयं भी हर्ष का अनुभव करता था। एक दिन जब गरमियों की सुहावनी रात के समय परिवार के सब लोग खुले बरामदे में ठण्ढी हवा का सेवन कर रहे थे, तो मादारिआगा ने एक मधुर स्नेहरस से पुलकित होकर देनोए से कहा—"ज़रा सोचो तो सही, फ्रेञ्ची, हमारे कुटुम्ब में कितने विभिन्न देशों के और विभिन्न जातियों के व्यक्तियों का समावेश है। मैं स्पेनिश हूँ, तुम फ्रेञ्च हो, कार्ल जर्मन है, मेरी लड़कियाँ आर्गेन्टाइनियन हैं, रसोइया रूसी है, उसका सहायक ग्रीक है, सईस अंगरेज़ है, रसोई के नौकर गैलीशियन या इटालियन हैं। पर सब आपस में मेल और शान्ति से रहते हैं। यदि हम लोग यूरोप में होते, तो इस समय तक आपस में लड़-झगड़कर सब तितर-बितर हो गए होते। पर यहाँ हम सब परम मित्रता पूर्वक रह रहे हैं।"

देनोए का लड़का जूलियो अपने नाना का सबसे अधिक प्रिय-पात्र था। उसका मुंह स्नेह से चूमते हुए वह कहता—"तुम बहुत सुन्दर हो! तुम्हें किसी बात की चिन्ता नहीं होनी चाहिये, लल्ला! क्योंकि तुम्हारे नाना के रुपयों की थैली तुम्हारे लिये सब समय खुली रहेगी!"

पर नाना अधिक समय तक जीवित न रहा। एक दिन उसका घोड़ा खाली गाड़ी लिये घर पहुँचा। जब घर के लोगों ने चिन्तित होकर खोज की, तो मादारिआगा को रास्ते में मृत अवस्था में पड़ा पाया।

बुड्ढे की मृत्यु के बाद कार्ल हार्ट्रोट तत्काल अपनी पत्नी और बाल-बच्चों को साथ लेकर बर्लिन चला गया और देनोए सपरिवार पैरिस जा पहुँचा। वे दोनों ससुर की बदौलत विशाल-सम्पत्ति के अधिकारी बन चुके थे। दैनोए ने पैरिस में अपने लिये एक ठाठदार मकान तैयार करवाया। इसके अतिरिक्त वियीब्लांश नामक स्थान में एक क़िलेनुमां विशाल भवन भी उसने ख़रीद लिया, जहाँ वह

मूल्यवान चित्र, शिल्पमूर्तियाँ तथा कला-सम्बन्धी अन्यान्य सामग्रियों को सञ्चित करता जाता था।

देनोए का जीवन निश्चय ही सुख और शान्तिपूर्वक बीतता, पर एक बात के कारण उसके हृदय में बड़ा खटका लगा हुआ था। उसके बच्चे उसके वश में नहीं थे। उसकी लड़की शिशी स्वतन्त्र विचारों की पक्षपातिनी हो उठी थी, और उसका लड़का जूलियो निरुद्देश्य जीवन व्यतीत कर रहा था। जूलियो, मार्गेरीत लोरियो नाम की एक विवाहिता स्त्री के प्रेम में फँस गया था। मार्गेरीत भी जूलियो के बहकावे में आकर इस चिन्ता में पड़ गई थी कि किस प्रकार वह अपने पति से अलग होकर जूलियो के साथ विवाह करे। जूलियो का नाना दक्षिण अमेरिका में अपने नाती के लिये अपनी सम्पत्ति का एक भाग अलग छोड़ गया था। मार्गेरीत से विवाह करके स्वतन्त्र जीवन बिताने के लिये उसे धन की आवश्यकता थी। इसलिये वह कुछ समय के लिये दक्षिण अमेरिका चला गया, ताकि वहाँ अपनी उत्तराधिकार-प्राप्त सम्पत्ति से आवश्यक रुपया वसूल कर लाये।

कुछ समय बाद जब जूलियो वापस आया, तो महायुद्ध के बादल यूरोप में मंडराने लगे थे। देनोए के साढ़ू हार्ट्रौट ने उससे कहा—"कल या परसों युद्ध की घोषणा हो जायगी। अब किसी भी उपाय से वह रुक नहीं सकता। मानवता के कल्याण के लिये इस युद्ध की विशेष आवश्यकता है।"

युद्ध की घोषणा के एक दिन पहले जूलियो के एक मित्र ने जिसका नाम चर्नाफ़ था, उससे कहा—"मैंने एक भयंकर स्वप्न देखा है, जो इस प्रकार है—एक भीषण दैत्य समुद्र से उठ खड़ा हुआ है। उसके चार अग्रदूत घोड़ों पर सवार होकर अत्यन्त निष्ठुर भाव से, उन्मत्त प्रचण्डता के साथ पृथ्वी को रौंद रहे हैं। ये चार दूत हैं—युद्ध, लूट-खसोट, अकाल और मृत्यु।"

जूलियो का जन्म आर्गेन्टाइन में होने से वह युद्ध में भरती होने के लिये विवश नहीं था। उसने यह आशा की थी कि युद्ध के बीच में भी वह अपनी प्रेमिका के साथ इस स्वच्छन्दता से जीवन बितायेगा कि जैसे कहीं कुछ हुआ ही न हो। पर युद्ध ने उसकी प्रेमिका की आँखें खोल दी थीं। पहले वह जिस निर्द्वन्द्वता, विलासिता और फ़ैशन के बीच में जीवन बिता रही थी, वह उसे एक दम फीका और नीरस लगने लगा। उसके मन में पीड़ितों की सेवा का भाव प्रबल रूप से जग उठा। जब उसे यह पता लगा कि अपने जिस पति के साथ उसने अन्यायपूर्ण आचरण किया है वह युद्ध में वीरता के साथ लड़कर घायल हो गया है, तो उसकी आत्मा पश्चात्ताप की भावना से कराह उठी, और उसका सेवा-सम्बन्धी निश्चय और अधिक दृढ़ हो गया। उसने जूलियो से कहा—"तुम्हें अब मेरा साथ छोड़ देना होगा। जीवन को हम लोग जिस रूप में देख रहे थे, वह वास्तव में वैसा नहीं है। यदि यह युद्ध न छिड़ा होता, तो सम्भवतः हम लोगों के जीवन का स्वप्न सफल हो गया होता। पर अब स्थिति ही कुछ दूसरी आ पड़ी है। जीवन के अन्त तक अब मैं एक बहुत बड़ा भार वहन करती रहूँगी। पर वह भार कल्याण-कारी और सुखद होगा, क्योंकि मैं जितना ही उससे दबती रहूँगी, उतना ही अधिक मेरा प्रायश्चित्त होगा।"

जूलियो के बहुत दिनों का स्वप्न भंग हो जाने से उसके हृदय को बहुत भारी आघात पहुँचा। पर साथ ही नयी शक्ति का सञ्चार उसके भीतर होने लगा, जिसने उसके जीवन की शून्यता को भरना आरंभ कर दिया।

जब जर्मनों द्वारा पैरिस के आक्रमण की आशंका दिखाई देने लगी, और फ्रान्स के अन्यान्य स्थानों में लूटमार मचने लगी, तो डान मार्सेलो (देनोए) को वियीव्लांश में स्थित अपने क़िले के संबंध में चिन्ता होने लगी। वह उसकी देखभाल के लिये स्वयं

वहाँ गया। फ्रेञ्च सिपाही जर्मनों द्वारा विताड़ित होकर पीछे को हटते चले जाते थे, और जर्मन सैनिक उन्मत्त रव से चिल्ला रहे थे—"नाख पारी! नाख पारी!" अर्थात्—"पैरिस की ओर बढ़ो! पैरिस की ओर बढ़ो!"

विर्यावलांश में जर्मन सिपाहियों ने अपने डेरे डाल दिए थे, और डान मार्सेलो की सारी इस्टेट को तहस-नहस करके उन्होंने सारे गाँव को लूट लिया था। गाँव के प्रतिष्ठित स्त्री-पुरुषों की हत्या अत्यन्त पाशविकता के साथ की जा रही थी। यह सब दृश्य देखकर डान मार्सेलो जी मसोसकर, मन मारकर चुप बैठा हुआ था। साधारण से साधारण जर्मन सिपाही भी उसका घोर अपमान करता, तो उसे चुपचाप सहन करना पड़ता था। एक युवा जर्मन अफसर मार्सेलो के पास आया, और उसने अपना नाम कैप्टेन ओटो फान हार्ट्रोट बताया। मार्सेलो को मालूम हुआ कि वह उसकी साली का लड़का है। उस युवक कप्तान ने अत्यन्त गर्व के साथ अपने मौसा को सूचित किया कि उसी के सिपाहियों ने मार्सेलो के क़िले को लूटा है, और कहा—"यह युद्ध है। इसमें सगे-सम्बन्धियों का ध्यान नहीं रखा जाता। इसके अतिरिक्त युद्ध को शीघ्र समाप्त करने के उद्देश्य से हमें बड़ी कड़ाई से काम लेना होगा। सच्ची दया का प्रदर्शन निष्ठुरता द्वारा होता है, क्योंकि निष्ठुर बनने से शत्रुपक्ष आतंकित होकर शीघ्र ही आत्म-समर्पण कर देता है, जिसका फल यह होता है कि धन और जन की अधिक हानि होने से बच जाती है।"

डान मार्सेलो ने जब अपने साढ़ू के लड़के के मुँह से इस तरह की बात सुनी, तो वह स्तम्भित रह गया। जर्मनों के युद्ध-संबंधी दर्शनशास्त्र से उसका वह प्रथम परिचय हुआ। चार दिन तक वह एक भयंकर मोहाच्छन्न अवस्था में पड़ा रहा, और आतंक उत्पन्न करनेवाले दुःस्वप्नों के जाल से घिरा रहा। उसकी आँखों के सामने

सारा गाँव नष्ट-भ्रष्ट होकर मिट्टी और ईंटों के ढेर के रूप में परिणत हो चुका था, और चारों ओर बिखरी हुई लाशें एक महा-श्मशान का प्रलय दृश्य उसकी आँखों के आगे उपस्थित कर रही थीं। उसकी इस्टेट में कुछ समय पहले एक लड़ाई का अस्पताल खोला गया था। पर गाँव में जब सिपाहियों ने लूटमार मचाना आरंभ किया, तो अस्पताल वहाँ से हटाकर किसी दूसरे स्थान में स्थापित किया गया था। किन्तु 'रेडक्रास' का झण्डा जर्मनों ने वहीं रहने दिया। इससे उनका उद्देश्य फ्रेञ्च सिपाहियों को धोखा देने का था। जिस स्थान में वह झण्डा गड़ा था वहाँ जर्मनों ने अपने शस्त्रास्त्र छिपा रखे थे। झण्डा गड़ा होने से फ्रेञ्च सिपाही यह समझे कि वहाँ अभी तक अस्पताल है। पर बाद में जब एक फ्रेञ्च हवाई जहाज़ को वास्तविकता का पता लगा, तो डान मार्सेलो की स्थिति बड़ी विकट हो उठी। उसने अपने को एक भयंकर युद्ध के बीच में पाया। जर्मनों की तोपों और फ्रान्सीसियों के बमों की प्रलय-वर्षा ने उसे आतंकित कर दिया। अन्त में फ्रेञ्च सिपाहियों की एक प्रबल सेना मार्न नदी पार करके आ पहुँची, और जर्मनों के भीषण गोलों से तनिक भी विचलित न होकर उन नवागत फ्रान्सीसी सैनिकों ने प्रचण्ड वेग से उनपर हमला कर दिया। जर्मन सेनाएँ पराजित होकर भागने लगीं डान मार्सेलो ने यह दृश्य देखकर चैन की एक लम्बी साँस ली।

विर्याब्लांश की जिस 'इस्टेट' के निर्माण में उसने लाखों रुपये ख़र्च किए थे, और उसे एक सुन्दर, कलात्मक रूप देकर अपने हृदय की बहुत दिनों की आकांक्षा को चरितार्थ करने में सफलता प्राप्त की थी, उसका पूर्ण ध्वंस देखकर वह उस स्थान से सदा के लिये विदा हुआ, और पैरिस को वापस चला गया। कुछ समय बाद एक युवा सैनिक उससे मिलने आया। वह सैनिक उसका लड़का जूलियो था। सिपाही की जो साधारण पोशाक वह पहने

था, उससे उसके व्यक्तित्व की शोभा बहुत बढ़ गई थी। डान मार्सेलो अपने जिस आवारा फिरनेवाले और लक्ष्यहीन जीवन बितानेवाले पुत्र से इतने दिनों तक घोर असन्तुष्ट था, उसका यह रूप देखकर आज उसका हृदय हर्ष से गद्गद हो उठा।

युद्धभूमि से जूलियो की कुशल नियमित रूप से नहीं मिल पाती थी, इस कारण डान मार्सेलो बहुत चिन्तित रहने लगा। कुछ समय बाद उसने निश्चय किया कि वह स्वयं युद्ध-क्षेत्र में जाकर जूलियो से मिलेगा। एक मित्र की सहायता से वह जूलियो के पास पहुँचने में समर्थ हुआ। यात्रा बड़ी कष्टकर थी। सैकड़ों खाई-खन्दकों और अँधेरी सुरंगों को पार करके गोलियों की बौछारों के बीच से होकर उसे जाना पड़ा।

जब डान मार्सेलो जूलियो के पास पहुँचा, तो वह पहले तो उसे पहचान ही न सका—उसके रूप-रंग में इतना अधिक अंतर हो गया था! पर कठिन जीवन बिताने पर भी जूलियो अपने सैनिक साथियों के बीच में रहकर सन्तुष्ट था। जीवन की उस कठोरता में ही जीवन की वास्तविकता का सुख उसे प्राप्त हुआ था। जीवन में प्रथम बार उसे यह अनुभव होने लगा था कि वह निरुद्देश्य नहीं है, उसके जीवन की भी कोई सार्थकता है। जब डान मार्सेलो अपने बेटे से विदा हुआ, तो उसके व्याकुल हृदय में रह-रहकर आशा की यह वाणी गूंज रही थी—"मेरा लड़का नहीं मरेगा, वह विजयी होकर जीवित अवस्था में लौटकर घर आवेगा।"

जूलियो ने युद्धभूमि में वास्तव में विशेष वीरत्व का परिचय दिया। वह एक साधारण सिपाही से पहले सार्जन्ट के पदपर नियुक्त हुआ, बाद में सब-लेफ़्टनेन्ट बन गया, और अपने असाधारण वीरत्व के कारण उसने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सैनिक पदक प्राप्त किया। अन्त में उसने यहाँ तक उन्नति की कि फ्रान्स का

सर्वश्रेष्ठ सैनिक सम्मान प्राप्त करने की पूरी आशा दिखाई देने लगी।

एक दिन डान मार्सेलो देनोए जब एक शैम्पेन-पार्टी से तरंगित हृदय लेकर घर लौटा, तो उसे एक घातक समाचार मिला। उसका एकमात्र पुत्र जूलियो युद्धभूमि में यश प्राप्त करके सदा के लिये सो गया था।

जब मार्सेलो अपने पुत्र की क़ब्र के पास खड़ा था, तो उसे चर्नाफ़ के स्वप्न की बात याद आई—समुद्र से जगे हुए विराट् दैत्य और उसके चार अग्रगामी घुड़सवार दूतों के विनाश-काण्ड की भविष्यवाणी वर्तमान के प्रत्यक्ष सत्य के रूप में उसकी आँखों के आगे भासमान होने लगी। अपने चारों ओर विध्वंस का दृश्य देखते हुए वह कहने लगा—"वह रक्तशोषी दानव कभी मरता नहीं! वह मानव के पीछे चिरशाप की तरह लगा ही रहता है। बीच-बीच में वह घायल होकर काल-सागर की गहराई में छिप जाता है, और चालीस, साठ अथवा सौ वर्ष तक उसके आहत शरीर से रक्त की धाराएँ फूटती रहती हैं। पर कुछ स्वस्थ होते ही वह फिर पूरी शक्ति से, बौखलाता हुआ उठ खड़ा होता है, और नये सिरे से नाशलीला का ताण्डव मचाने लगता है। हम केवल यही आशा कर सकते हैं कि उसके घाव ऐसे गहरे हों कि वह फिर शीघ्र ही न उठ सके, ताकि जो लोग उसे एक बार देख चुके हैं, वे अपने जीवन-काल तक फिर उसे न देखें।"

वाल्टर स्काट

वाल्टर स्काट का जन्म १५ अगस्त, १७७१ को एडिनबरा में हुआ। उसका बाप एक वकील था।

स्काट की सर्व प्रथम मौलिक रचना 'दि ले आफ़ दि लास्ट मिन्सट्रल' तब प्रकाशित हुई जब उसकी अवस्था ३४ वर्ष की हो चुकी थी। इस पद्य-कथा ने बड़ी शीघ्रता से लोकप्रियता प्राप्त कर ली; तब से अपनी मृत्यु के समय तक स्काट अंग्रेज़ी भाषा का सबसे अधिक मान्य लेखक बना रहा।

कुछ समय तक स्काट पद्य में ही लम्बी-लम्बी रोमान्टिक कथाएँ लिखता रहा। पर जब जनता इस प्रकार की पद्य-रचनाओं से उकता गई, तो उसने गद्य में उपन्यास लिखना आरम्भ किया। उसका सर्वप्रथम उपन्यास 'वेवरली' सन् १८१४ में प्रकाशित हुआ, जब कि उसकी आयु ४३ वर्ष की हो चुकी थी। इसके बाद १८ वर्ष तक निरन्तर वह एक के बाद दूसरा उपन्यास लिखता चला गया। उसके उपन्यास अधिकतर ऐतिहासिक प्रेम-कथाओं को लेकर रहते थे। सन् १८२५ तक वह गुप्त नाम से लिखता रहा, पर उक्त वर्ष उसे एक भयंकर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा, और अपना असली नाम प्रकट करना उसके लिये लाज़मी हो गया। बात यह हुई कि वह जिस प्रकाशन-संस्था का गुप्त शेयर होल्डर था वह 'फ़ेल' कर गई, और अकेले उस पर प्रायः २० लाख रुपये का क़र्ज़ चढ़ गया। इस घटना से स्काट को भयंकर धक्का पहुँचा। फिर भी उसने प्रचंड साहसिकता का परिचय दिया। उसने दिवालिया बनने से साफ़ इनकार कर दिया, और केवल ऋण चुकाने के लिये समय माँगा।

तब से वह निरन्तर दिन-रात परिश्रम करता रहा, और उपन्यास पर उपन्यास लिखता चला गया। जनता ने उसकी रचनाओं का काफ़ी अच्छा स्वागत किया और दो वर्ष के भीतर उसने प्रायः सात लाख रुपये चुका दिए। और अधिक शीघ्रता से रुपया प्राप्त करने के उद्देश्य से उसने कुछ समय के लिये उपन्यास लिखना स्थगित करके नेपोलियन की जीवनी लिखी। इस पुस्तक से उसे प्रायः साढ़े तीन लाख रुपये मिले।

कुछ समय बाद उस पर लकवे का ज़बर्दस्त आक्रमण हुआ। उसकी जान बच गई, पर उसका मस्तिष्क बहुत ढीला पड़ गया। फिर भी उसने लिखना न छोड़ा। अपने जीवन-काल में ही समस्त ऋण चुका देने की जो भीष्म प्रतिज्ञा वह किए बैठे था उसे पूरा करने की धुन में उसने उसी दिमाग़ी हालत में कुछ उपन्यास और लिख डाले। इस प्रकार पाँच वर्ष के भीतर उसने आधा से अधिक ऋण चुका दिया।

अपने जीवन के अन्तिम वर्ष तक उसके मन में यह भ्रमपूर्ण विश्वास घर कर गया कि उसका सारा ऋण चुक गया है। इस भ्रम ने उसके अन्तिम जीवन को सुखी बना दिया। वास्तव में प्रायः सात लाख रुपये उसे और चुकाने थे। उसकी मृत्यु के बाद जीवन बीमा से प्रायः साढ़े तीन लाख रुपये वसूल हो गये और केवल साढ़े तीन लाख शेष रह गये। जिन पुस्तकों पर उसका अपना अधिकार था उनकी बिक्री से वह शेष ऋण भी चुक गया। इस प्रकार बिना किसी की सहायता के, अकेले अपने बल पर उसने उस महा ऋण से मुक्ति पाई।

स्काट के उपन्यासों में 'आइवानहो' और 'केनिलवर्थ' सर्वश्रेष्ठ गिने जाते हैं। २१ सितम्बर, १८३२ को इस महान शक्तिशाली लेखक की मृत्यु हुई।

केनिलवर्थ

उस समय इंगलैण्ड में रानी एलिज़ाबेथ शासन कर रही थी। इंगलैंड के इतिहास का वह युग प्रेम-सम्बन्धी कूटचक्रों के लिये प्रसिद्ध हो चुका है। रानी एलिज़ाबेथ के बहुत से प्रेमिक थे और बहुधा यह देखा जाता था कि वह अपने एक प्रेमिक को दूसरे प्रेमिक के विरुद्ध भड़काकर राजकीय विषयों में अपना स्वार्थ सिद्ध कर लेती थी। उसके कूटचक्र ऐसे अज्ञात रूप से चलते थे कि किसी को कुछ पता न लगता था। पर कभी-कभी उसका क्रोधावेग भयंकर रूप धारण कर लेता था, जिससे कभी-कभी उसका सारा बना-बनाया खेल बिगड़ जाता था। इसके अतिरिक्त चापलूसी का भी उस पर बहुत प्रभाव पड़ता था।

एलिज़ाबेथ के प्रेमिकों की संख्या यद्यपि काफ़ी बड़ी थी, तथापि केवल एक ही व्यक्ति को वह सच्चे हृदय से चाहती थी। उस व्यक्ति का नाम था राबर्ट डडले। वह लीसेस्टर का 'अर्ल' था। यह कहा जाता था कि रानी एलिज़ाबेथ उससे विवाह करने की इच्छा रखती है। वास्तव में अर्ल आफ़ लीसेस्टर बड़ा ही कुशल और नीतिज्ञ सभासद् था और उसके हृदय में इंगलैंड की राजगद्दी का आधा मालिक बनने की महत्वाकांक्षा ने प्रबल रूप धारण कर लिया था। पर वह अपने जीवन में एक बहुत बड़ी भूल कर बैठा था। वह यह कि एमी राबसार्ट नाम की एक स्त्री से उसने गुप्त रूप से विवाह कर लिया था। उस भूल का निराकरण हुए बिना वह इंगलैंड का अधिपति बनने की चेष्टा में आगे नहीं बढ़ सकता था, क्योंकि एक विवाह की पत्नी के जीते जी वह दूसरा विवाह नहीं कर सकता था। रानी एलिज़ाबेथ को उसके उस गुप्त

विवाह की बात मालूम नहीं थी, सन्देह नहीं; पर यदि कभी किसी उपाय से मालूम हो जाय, तो उसका परिणाम अच्छा न होगा, यह बात अर्ल आफ़ लीसेस्टर भली भाँति जानता था। इसलिये उसने रिचार्ड वार्नी नामक एक व्यक्ति को अपना कारिन्दा नियुक्त करके उसकी सहायता से एबिंगडन मेनर नामक स्थान में अपनी पत्नी की हत्या करवा डाली।

यह तो हुई इतिहास की बात। इस बात को नाना काल्पनिक रंगों से रंगकर स्काट ने अपनी सुप्रसिद्ध रचना 'केनिलवर्थ' का निर्माण किया है। कथा का उद्‌घाटन एक सराय में होता है, जिसका मालिक गोस्लिंग नाम का एक व्यक्ति था। उसका भतीजा माइकेल लेम्बोर्न वर्षों तक घर से ग़ायब रहने के बाद एक दिन अकस्मात् अपने चचा के पास वापस चला आया। वह बहुत शराब पिया करता था और बड़ी-बड़ी डींगें मारा करता था। आवारा फिरना और मटरगश्ती करना उसका काम था। एक दिन इधर-उधर चक्कर लगाते हुए 'कमनार मेन्सन' नामक एक विशाल भवन में पहुँचा। वहाँ उसे इस रहस्य का पता लगा कि टोनी फ़ास्टर नामक एक बुड्ढा गुण्डा उस भवन के भीतर छिपी हुई एक सुन्दरी महिला की निगरानी कर रहा है।

लेम्बोर्न ने ट्रेसीलियन नामक एक व्यक्ति को इस बात की सूचना दी। यह ट्रेसीलियन वास्तव में एक सम्भ्रान्त-वंशीय व्यक्ति था और वह अपनी परिणीता की खोज में बहुत दिनों से भटक रहा था। कोई व्यक्ति उसकी परिणीता को उसके बाप के यहाँ से बहका कर ले भागा था। ट्रेसीलियन ने जब यह सुना कि कमनार भवन में कोई स्त्री छिपी हुई है, तो उसे यह जानने की बड़ी उत्सुकता हुई कि वह कौन है। लेम्बोर्न की सहायता से वह उक्त भवन में प्रवेश करने में समर्थ हुआ। वहाँ उसने छिपी हुई स्त्री को देखा और देखते ही उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। क्योंकि

वह स्त्री उसकी परिणीता एमी राबसार्ट थी, जिसकी खोज में वह भटका फिर रहा था। उसने एमी को बहुत समझाया-बुझाया और अपने पिता के पास वापस चलने के लिये कहा, पर एमी किसी तरह भी राजी न हुई। अन्त में निराश हो कर जब ट्रेसीलियन उस मकान से चुपचाप भाग निकलने की चेष्टा कर रहा था, तो उसे एक अपरिचित व्यक्ति मिला। उस व्यक्ति का नाम रिचार्ड वार्नी था। वह अत्यन्त दुष्ट-प्रकृति और षड्यन्त्री था। लीसेस्टर ने उसे अपना विशेष कारिन्दा नियुक्त कर रखा था और वह निरन्तर लीसेस्टर को इंगलैंड की राजगद्दी पर अधिकार जमाने के उद्देश्य से उसकाता रहता था।

ट्रेसीलियन ने जब रिचार्ड वार्नी को देखा, तो उसने स्वभावतः यह अनुमान किया कि वही एमी राबसार्ट को बहकाकर लाया है और वह उसका प्रेमिक है। उसने अपनी तलवार निकाली और रिचार्ड वार्नी को पकड़ कर वह उस पर वार करने ही को था कि लेम्बोर्न ने आकर उसका हाथ पकड़ लिया। ट्रेसीलियन अब अपनी जान बचाकर भागा।

बाहर निकलकर ट्रेसीलियन ने यह निश्चय किया कि वह रानी के आगे इस मामले को पेश करेगा। वह जानता था कि रानी इस प्रकार के मामलों में दिलचस्पी लेती है। अपनी यात्रा के बीच में ट्रेसीलियन को एक स्थान में इस बात का पता लगा कि वहाँ वेलैंड स्मिथ नामक एक रहस्यमय व्यक्ति रहता है, जिसे आस-पास के लोग 'शैतान का दूत' कहा करते हैं। उसके सम्बन्ध में पूरी जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता ट्रेसीलियन के मन में जोर मारने लगी और वह एक लड़के को साथ लेकर उसके पास पहुँचा। उसे मालूम हुआ कि वेलैंड स्मिथ एक रसायन-तत्व-वेत्ता है और उसकी प्रयोगशाला जमीन के नीचे है। ट्रेसीलियन ने देखा कि वह उसके काम का आदमी है और उसे फुसलाकर अपने पास

नौकर रख लिया। दोनों साथ ही यात्रा करते हुए राबसार्ट के पिता सर ह्यूग राबसार्ट के पास पहुँचे। उसे जब मालूम हुआ कि एमी वार्नी के क़ब्जे में है; तो उसने यह लिखित वचन दिया कि वह लीसेस्टर की सहायता प्राप्त करके रानी को इस बात के लिए राज़ी कराने की पूरी चेष्टा करेगा कि वह वार्नी के फन्दे से एमी को मुक्त करे।

इसके कुछ ही समय बाद ट्रेसीलियन और वेलैंड लार्ड ससेक्स से जाकर मिले। इधर ससेक्स पर यह अभियोग लगाया गया था कि उसने रानी एलिज़ाबेथ के विशेष डाक्टर का अपमान किया है। इस कारण उसे दरबार में उपस्थित होकर अपनी सफ़ाई देने की आज्ञा हुई। ट्रेसीलियन और वेलैंड लार्ड ससेक्स के साथ ही चल पड़े।

ससेक्स का बयान सुनकर रानी उससे सन्तुष्ट हो गई और उसे अभियोग से मुक्त कर दिया गया। रानी का रुख़ अच्छा देखकर ससेक्स ने उसका ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया कि एमी राबसार्ट अत्यन्त निष्ठुरतापूर्वक क़ैद की गई है। इस पर रानी की आज्ञा से वार्नी और लीसेस्टर को दरबार में उपस्थित होने के लिये बुलाया गया। जब दोनों उपस्थित हुए तो पहले वार्नी ने अपना बयान दिया। उसने दृढ़ता के साथ कहा कि एमी उसकी स्त्री है। इस बात से लीसेस्टर के मुख में घबराहट के स्पष्ट चिह्न दिखाई दिए, जिस पर सभी उपास्थित व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित हुआ। इस पर वार्नी ने एलिज़ाबेथ को यह विश्वास दिलाया कि लीसेस्टर की घबराहट का कारण यह है कि उसके हृदय में रानी के प्रति जो एक उन्नत, आध्यात्मिक प्रेम उत्पन्न हो गया है, वह रानी की उपस्थिति में बहुत बढ़ गया है। सब बातें सुनकर अन्त में रानी ने यह फ़ैसला सुनाया कि केनिलवर्थ नामक स्थान में जो विराट उत्सव मनाया जाने वाला है, उस

अवसर पर वार्नी एमी को लेकर वहाँ पहुँचे ; वहीं अन्तिम निर्णय होगा।

इस पर वार्नी और लीसेस्टर के सामने एक जटिल समस्या उठ खड़ी हुई। दोनों जानते थे कि एमी कभी वार्नी की पत्नी के रूप में किसी के आगे अपना परिचय देना पसन्द नहीं करेगी। फल यह होगा कि वार्नी ने जो झूठ बात रानी के आगे प्रकट की थी उसका भण्डाफोड़ हो जावेगा। इसलिये उन दोनों ने निश्चय किया कि एमी को कमनार में ही पड़े रहने के लिये वाध्य किया जायगा।

इस निश्चय को कार्यरूप में परिणत करने के उद्देश्य से वार्नी ने डिमिट्रियस नामक एक रासायनिक को ऐसी बूटी तैयार करने का आदेश दिया जिसे खाकर एमी बेहोश हो जाय और केनिलवर्थ के मेले में जाने का हठ न करे। यही किया गया, पर ट्रेसीलियन का साथी वेलैंड डिमिट्रियस की धूर्तता से परिचित हो चुका था। वह एक फेरीवाले का वेश बनाकर एमी के पास पहुँचा और उसने एक बूटी का सेवन उसे कराया, जिसके फलस्वरूप डिमिट्रियस द्वारा तैयार किए गए विष का सारा असर जाता रहा। इसके बाद वेलैंड ने एमी को समझाया कि वह किस प्रकार के शत्रुओं के फेर में पड़ी हुई है।

केनिलवर्थ के महान् उत्सव का समय निकट आ पहुँचा था। लोग हजारों की संख्या में दूर-दूर से वहाँ पहुँच रहे थे। एमी वेलैंड के साथ यात्रा कर रही थी। रास्ते में उन्हें तमाशेवालों का एक दल मिल गया। उस दल के साथ वे लोग केनिलवर्थ पहुँच गए। केनिलवर्थ के विशाल क़िले में पहुँचने पर संयोगवश एमी को उस कमरे में रहने की आज्ञा मिल गई, जो वास्तव में ट्रेसीलियन के लिये नियत किया गया था। उस कमरे में बैठकर एमी ने लीसेस्टर को एक पत्र लिखा, जिसमें उससे वह प्रार्थना की कि वह उससे

आकर मिले। पत्र लिखकर उसने उन दिनों प्रचलित अन्धविश्वास के अनुसार उस पत्र को अपने बालों की 'प्रेम-गाँठ' से बाँध दिया। इसके बाद वेलैंड के साथ उसे भेज दिया। पर वेलैंड के पास से वह पत्र बीच ही में किसी ने चुरा लिया।

इसी बीच ट्रेसीलियन ने अपने कमरे में प्रवेश किया। उसे इस बात का पता तनिक भी नहीं था कि एमी उसके कमरे में आई हुई है और न एमी को ही यह बात मालूम थी कि वह कमरा ट्रेसीलियन के लिये नियत है। ट्रेसीलियन ने जब एमी को देखा, तो वह चकित रह गया। एमी को भी कुछ कम आश्चर्य नहीं हुआ। साथ ही उसे यह भय हुआ कि कहीं ट्रेसीलियन उसके वहाँ आने की बात का प्रचार सर्वत्र न कर बैठे। वह इस आशा में बैठी थी कि लीसेस्टर उसका पत्र पाते ही उससे मिलने वहाँ आवेगा। इसलिये उसने ट्रेसीलियन से यह वचन ले लिया कि वह कम से कम चौबीस घन्टे तक उसके सम्बन्ध में एकदम मौन धारण किए रहे। ट्रेसीलियन रानी के आगमन का दृश्य देखने के उद्देश्य से चला गया।

केनिलवर्थ के उस ऐतिहासिक महोत्सव का जो आयोजन लीसेस्टर ने किया था और रानी एलिज़ाबेथ के स्वागत के लिये उसने जो तैयारियाँ की थीं, उनमें रुपया पानी की तरह बहाया गया था। तड़क-भड़क और शान-शौक़त के जो दृश्य लोगों ने देखे वे अभूतपूर्व थे। रानी के आगमन के समय तरह-तरह के संगीत, वाद्य और नृत्य का समां बंध गया था। रानी असंख्य मणि-मुक्ताओं से सुसज्जित थी और संभ्रान्तवंशीय स्त्री-पुरुष उसे चारों ओर से घेरे हुए थे। उन सब में लीसेस्टर अधिक शोभायमान हो रहा था। वह एक सोने की मूर्ति की तरह चमक रहा था। जलूस वारविक नामक स्थान से निकाला गया था। झील के पास पहुँचने पर सब लोग सवारियों से उतर पड़े। तैरते हुए द्वीप के समान एक बहुत

बड़ा बजरा किनारे पर आ लगा। सब लोग उस पर सवार होकर केनिलवर्थ के क़िले में जा पहुँचे। क़िले में रानी के पहुँचते ही आतिशबाज़ियाँ छूटने लगीं, जो उस ज़माने के लिए एक नयी और अनोखी बात थी। रस्मों की पूरी अदायगी के साथ रानी को एक सुसज्जित 'हाल' में ले जाया गया और वहाँ लीसेस्टर ने उसे एक रत्न-जटित राज-आसन पर बैठाया। लीसेस्टर ने बड़े सम्मानपूर्ण प्रेम के साथ रानी का हाथ चूमा और उसकी प्रशंसा में चाटुकारी से पूर्ण शब्द कहे। रानी की आँखें जता रही थीं कि वह लीसेस्टर से बहुत प्रसन्न है।

कुछ समय बाद रानी ने वार्नी को बुला भेजा। वार्नी अकेला आया। एमी को उसके साथ न देखकर रानी ने पूछा कि उसकी स्त्री क्यों नहीं आई और राजाज्ञा का उल्लंघन करने का साहस उसने कैसे किया। इस पर वार्नी ने उत्तर दिया कि उसकी स्त्री की तबीअत ठीक नहीं है। अपनी बात प्रमाणित करने के उद्देश्य से दो-चार झूठे मेडिकल सर्टीफिकेट पेश कर दिए। इस पर ट्रेसीलियन ने उन्मत्त आवेग के साथ यह घोषित किया कि वार्नी सरासर झूठ बोलता है। पर शीघ्र ही उसे स्मरण हो आया कि एमी ने उसे चौबीस घन्टे तक उसके सम्बन्ध में एकदम मौन रहने के लिये कहा है। वह बीच ही में रुक जाता है और हकलाते हुए अस्पष्ट शब्दों में कुछ बड़बड़ाने लगता है। रानी ने एक प्रतिष्ठित दरबारी को आज्ञा दी कि वह ट्रेसीलियन को पकड़ कर कुछ समय के लिये शान्त रखे।

इसके बाद भोज हुआ, जिसके लिये लीसेस्टर ने विराट् आयोजन कर रखा था। भोज समाप्त होने पर वार्नी लीसेस्टर के पास गया और उसे विश्वास दिलाने लगा कि उसके (लीसेस्टर के) ग्रहों के लक्षण बहुत अच्छे मालूम होते हैं और निश्चय ही रानी उससे विवाह करने के लिए राज़ी हो जावेगी। वार्नी ने यह

सूचना भी दी कि ट्रेसीलियन अपने साथ अपनी एक प्रेमिका को भी लाया है।

दूसरे दिन प्रातःकाल एमी अपने कमरे से चुपचाप बाहर निकल आई और एक स्थान में जा छिपी, जहाँ पास ही लीसेस्टर रानी एलिज़ाबेथ के निकट एकान्त में अपना प्रेम निवेदित कर रहा था। एलिज़ाबेथ ने जो भाव दिखाया उससे लीसेस्टर बहुत आशान्वित हुआ। पर ज्योंही वे दोनों एक दूसरे से अलग हुए, त्योंही एमी रानी के पास आकर खड़ी हो गई। एमी ने रानी को यह सूचित किया कि वह वार्नी की स्त्री नहीं है और लीसेस्टर को अच्छी तरह पता है कि यथार्थ बात क्या है। उसकी बात की सचाई पर रानी को विश्वास हो गया और वह क्रोध से तमतमाई हुई लीसेस्टर के पास पहुँची। पर लीसेस्टर ने ऐसे ज़ोरदार शब्दों में एमी के बयान का खण्डन किया कि रानी को चुप रह जाना पड़ा। एमी को पागल सिद्ध कर दिया गया और वह कड़ी निगरानी में रखी गई। लीसेस्टर एमी से इस कारण बहुत असन्तुष्ट हुआ कि उसने केनिलवर्थ आकर उसके सम्बन्ध में रानी के मन में खटका उत्पन्न कर दिया। उसने एमी से यह कहला भेजा कि वह शीघ्र ही उससे आकर मिलेगा, पर शर्त यह है कि वह वर्तमान समय के लिये अपने को वार्नी की पत्नी बतावे।

एमी ने इस प्रस्ताव को घृणा के साथ अस्वीकार कर दिया। उसने अपने चोट खाए हुए नारी हृदय की पूर्ण शक्ति को काम में लाते हुए अर्ल आफ़ लीसेस्टर से कहा कि यदि वह एक वास्तविक पुरुष है, तो रानी एलिज़ाबेथ के पास उसे ले जाकर स्पष्ट शब्दों में यह स्वीकार करे कि उसने उससे (एमी से) विवाह किया है।

लीसेस्टर का पुरुषत्व जागरित हो उठा और उसने एमी को विश्वास दिलाया कि वह ऐसा ही करेगा। पर वार्नी नहीं चाहता था कि लीसेस्टर भावुकतावश इस प्रकार की 'दुर्बलता' का परिचय

दे और रानी से विवाह करने तथा इंगलैंड की राजगद्दी पर अधिकार जमाने की महत्त्वकांक्षा को तिलाञ्जलि दे देवे। इसके अतिरिक्त उसकी आत्मरक्षा का प्रश्न भी आ खड़ा हुआ था। यह मालूम हो जाने पर कि एमी उसकी पत्नी नहीं है, बल्कि लीसेस्टर से उसका विवाह हुआ है, निश्चय ही उसे धोखेबाज़ी के अपराध में कड़ा दण्ड मिलने की सम्भावना थी। इसलिये उसने निश्चय किया कि किसी न किसी उपाय से एमी की हत्या करनी होगी।

सबसे पहला काम वार्नी ने यह किया कि लीसेस्टर को एमी के विरुद्ध भड़का दिया। उसने लीसेस्टर के मन में यह विश्वास जमा दिया कि एमी के साथ ट्रेसीलियन का अनुचित सम्बन्ध स्थापित हो चुका है। स्वभावत: लीसेस्टर इस बात से बहुत उत्तेजित हो उठा और वार्नी ने जो हत्याकारी षड्यन्त्र रचा, उसमें उसकी सहायता करने को वह राज़ी हो गया।

उसी दिन संध्या के समय लीसेस्टर से ट्रेसीलियन की भेंट हो गई। ट्रेसीलियन के मन में अभी तक यह विश्वास जमा था कि एमी को रिचार्ड वार्नी ने अपने वश में कर रखा है। इसलिये उसने लीसेस्टर से यह प्रार्थना की कि वह वार्नी के पञ्जे से एमी को मुक्त करने में उसकी सहायता करे। पर उसकी बातों से लीसेस्टर के मन में भ्रम उत्पन्न हो गया, और उसके मन में यह विश्वास और अधिक दृढ़ हो गया कि एमी उसकी प्रेमिका रह चुकी है। उसने कड़े शब्दों द्वारा ट्रेसीलियन का अपमान किया और दोनों अपनी-अपनी तलवार खींचकर द्वन्द्वयुद्ध करने लगे। पर किसी के हस्तक्षेप से बीच में विघ्न पड़ गया। यह तय हुआ कि दूसरे दिन दोनों एक नियत स्थान में नियत समय पर द्वन्द्वयुद्ध करेंगे।

दूसरे दिन प्रात:काल फिर दोनों एक दूसरे पर तलवार की वार करने लगे। ज्यों ही लीसेस्टर ने ट्रेसीलियनपर विजय प्राप्त करके

उसे मार गिराने के लिये हाथ बढ़ाया, त्यों ही डिकी स्मज नामक एक गुण्डे ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसके हाथ में एमी का वह पत्र दिया जो उसने वेलैंड के पास से चुराया था। उस पत्र से लीसेस्टर को स्थिति की यथार्थता का पता लग गया। ट्रेसीलियन की आँखों से भी इतने दिनों का पर्दा हट गया। फल यह हुआ कि लीसेस्टर ने रानी के आगे स्पष्ट शब्दों में यह स्वीकार कर लिया कि वह विवाहित है और एमी उसकी पत्नी है। तब से एमी कौन्टेस आफ़ लीसेस्टर के नाम से परिचित हो गई।

रानी एलिज़ाबेथ के आगे जब वह गुप्त भेद खुला, तो वह क्रोध से उन्मत्त हो उठी। उसने कहा—"लीसेस्टर के गुप्त विवाह के कारण वह सदा के लिये एक पति से वञ्चित रह गई और इंगलैंड एक राजा से वञ्चित रहा।"

वास्तव में इस रहस्योद्घाटन से एलिज़ाबेथ को ऐसा ज़बर्दस्त धक्का लगा कि वह अपना राजकीय गाम्भीर्य भूल कर बहुत दिनों तक कटु शब्दों में लीसेस्टर को गालियाँ देती रही और राज-काज छोड़कर अत्यन्त उत्तेजित मानसिक अवस्था में रहने लगी। अन्त में लार्ड बर्ले ने एक दिन उसे बहुत समझाया-बुझाया और कहा कि जिस दुर्बलता का प्रदर्शन वह कर रही है वह किसी भी रानी को शोभा नहीं देता, फिर इंगलैंडेश्वरी के सम्बन्ध में तो कहना ही क्या है! इस बात का बड़ा प्रभाव उस पर पड़ा और वह शान्त हो गई।

इधर वार्नी ने शराबी लेम्बोर्न को गोली से मार कर एमी को फिर 'कमनार-भवन' में छिपाया। वहाँ उसने उसे क़ैद की हालत में रखा। जिस गुप्त कमरे में एमी बन्द थी वह एक प्रकार का तिलस्माती कमरा था, जिसमें जाने के लिये एक हाथ से खींची जाने वाली पुल को पार करना पड़ता था। वार्नी ने एमी को इस

सम्बन्ध में सावधान कर दिया था कि वह कभी उस पुल को पार करने की चेष्टा न करे। पर जब ट्रेसालियन और रैले उस दुष्ट के पञ्जे से एमी का उद्धार करके उसे केनिलवर्थ में उसके पति (लीसेस्टर) के पास पहुँचाने के उद्देश्य से आए, तो एमी ने घोड़ों के टापों की आवाज़ सुनकर यह सोचा कि उसका प्रियतम लीसेस्टर उसे लेने आया है। हर्ष के आवेग के कारण वह रह न सकी और वार्नी की चेतावनी का कोई स्मरण उसे न रहा। वह अपने कमरे से दौड़ी हुई आई और ज्योंही नकली पुल को पार करने की चेष्टा उसने की, त्योंही नीचे गिर कर मर गई। दुष्ट वार्नी ने जान बूझ यह मृत्यु-जाल तैयार कर रखा था। पर बाद में जब उस गुण्डे को यह मालूम हुआ कि लीसेस्टर ने एमी को खुल्लम-खुल्ला अपनी विवाहिता पत्नी घोषित कर दिया है, तो उसने अपनी रक्षा का कोई उपाय न देखकर आत्महत्या कर ली। जिस रासायनिक को उसने हत्याकारी कूटचक्रों के लिए नियुक्त कर रखा था वह भी अपनी प्रयोगशाला में विष खाकर मर गया। टानी फास्टर नामक जो व्यक्ति कमनार भवन के रक्षक के रूप में नियुक्त था वह बहुत दिनों तक ग़ायब रहा। बाद में एक दिन उसी भवन में सोने के ढेर से भरे हुए एक तहखाने में उसका कंकाल पाया गया। लीसेस्टर कुछ समय तक रानी एलिज़ाबेथ के दरबार से अलग रहा, पर बाद में रानी फिर उसके प्रति सदय हो उठी। अन्त में एक दिन उसने अपने किसी प्रतिद्वन्द्वी के लिये जो विष तैयार किया था उसे स्वयं पी बैठा और उसकी मृत्यु हो गई।

फ़्योडोर डास्टाएव्सकी

फ़्योडोर डास्टाएव्सकी का जन्म सन् १८८१ में मास्को में हुआ। उसके पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, फिर भी उसकी शिक्षा-दीक्षा में कोई रुकावट नहीं पड़ी। सन् १८४४ में उसका प्रथम उपन्यास 'दरिद्र जन' प्रकाशित हुआ। प्रकाशित होते ही इस पुस्तक ने साहित्य-संसार में धूम मचा दी। बड़े-बड़े प्रतिष्ठित आलोचकों और लेखकों ने उसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

सन् १८४६ में एक षड्यन्त्र के अभियोग में वह ४३ व्यक्तियों के साथ गिरफ़्तार किया गया। सब को मृत्यु दण्ड की आज्ञा सुनाई गई। मृत्यु-दण्ड के दिन डास्टाएव्सकी अपने सह-अपराधियों के साथ एक क़तार के साथ सेमियानेव्सकी चौक में खड़ा था। पहले तीन व्यक्तियों को खंभों से बाँध कर उनकी आँखों पर पट्टी चढ़ा दी गई। ज्योंही उन पर गोली चलाये जाने की आज्ञा हुई, त्योंही एक आदमी दौड़ा हुआ घटनास्थल पर पहुँचा। वह ज़ार का यह सन्देश लेकर आया कि सब अपराधियों को मृत्युदण्ड से मुक्त करके साइबेरिया में चार वर्ष के लिये निर्वासित कर दिया जाय। मृत्युदण्ड के उस 'स्वांग' का बड़ा भयंकर-प्रभाव डास्टाएव्सकी पर पड़ा। उसके मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य में ख़राबी आ गई।

साइबेरिया में बड़े कष्ट से उसने चार वर्ष बिताए। वहाँ से लौटने पर उसने वहाँ के जीवन के भीषण और लोमहर्षक अनुभव 'मृत पुरुषों

का घर' शीर्षक एक पुस्तक में वर्णित किया। सन् १८६६ में उसने 'अपराध और दण्ड' शीर्षक उपन्यास लिखा। इस उपन्यास ने उसे अमर ख्याति प्रदान कर दी। इसके बाद उसने बहुत-से उपन्यास लिखे, जो आज तक विश्व-साहित्य में श्रेष्ठ स्थान अधिकृत किये हुए हैं।

यद्यपि डास्टाएव्सकी ने काफ़ी संख्या में उपन्यास लिखे, पर अन्त तक वह घोर दरिद्रावस्था में जीवन बिताता रहा। साइबेरिया में निर्वासित जीवन बिताने के कारण उसका स्वास्थ्य नष्ट हो चुका था और मृगी के दौरे उसे अक्सर आते रहते थे। फिर भी वह बड़े-बड़े वृहत् ग्रन्थ लिखकर रूसी साहित्यक्षेत्र को प्रबल रूप से प्रभावित करता रहा। उसका अन्तिम जीवन अपेक्षाकृत सुखी रहा। उसे जीवन-काल में ही जो लोकप्रियता प्राप्त हुई वह बहुत कम लेखकों के भाग्य में बदी होती है।

विश्व-साहित्य-क्षेत्र में डास्टाएव्सकी का स्थान बहुत ही ऊँचा है। बीसवीं सदी के प्रारंभ में यूरोपियन उपन्यास-कला ने जो धारा ग्रहण की वह डास्टाएव्सकी की शैली से विशेष रूप से प्रभावित हुई। इस समय भी संसार के सब युगों के पाँच सर्वश्रेष्ठ औपान्यासिकों के नाम यदि लिये जायँ, तो उनमें डास्टाएव्सकी का नाम निश्चय ही अन्यतम स्थान ग्रहण करेगा। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और पीड़ित मानवता के रात-दिन के निर्यातित जीवन की पंकिलता के भीतर निहित आध्यात्मिकता के प्रस्फुटन में जिस मार्मिक प्रतिभा का परिचय डास्टाएव्सकी ने दिया है वह वास्तव में साहित्य-रसज्ञों को सदा आश्चर्यान्वित और पुलकित करती रहेगी।

सन् १८८१ में डास्टाएव्सकी की मृत्यु हुई।

—:०:—

कर लिया कि वह स्वयं आतंकित हो उठा। वह उस भावना को भूलने की चेष्टा करने लगा, पर उसने जोंक की तरह उसके मन और मस्तिष्क को जकड़ लिया था। एक दिन वह एक पानशाला में अन्यमनस्क भाव से बैठा हुआ था। वहीं एक अफ़सर और एक विद्यार्थी आपस में बातें कर रहे थे। रास्कोलनिकाफ़ के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने सुना कि वे दोनों उसी सूदख़ोर बुढ़िया के सम्बंध में बातें कर रहे हैं। विद्यार्थी ने बुढ़िया के सम्बन्ध में ठीक वे ही विचार प्रकट किये जो रास्कोलनिकाफ़ के मन में उदित हो रहे थे। उसने कहा कि ऐसी पिशाचिनी की हत्या करके उसका धन खसोटना पाप नहीं बल्कि पुण्य है। रास्कोलनिकाफ़ ने जब यह सुना, तो उसका सारा शरीर रोमाञ्चित हो उठा। उसने सोचा—"विधि का यह कैसा विधान है! जिस विचार ने मुझे मेरी इच्छा के विरुद्ध इतने दिनों से बेचैन कर रखा है, जिसे भूलने के लिये मैं इस पानशाला में आया हूँ, वह अकस्मात्, अप्रत्याशित रूप से इस विद्यार्थी की बातें सुन कर फिर उभड़ उठी है। मालूम होता है कि भाग्य इस कठिन कार्य का विधायक मुझी को बनाना चाहता है।"

एक दिन अकस्मात् रास्ते में चलते हुए रास्कोलनिकाफ़ ने सूद-ख़ोर बुढ़िया की बहन एलिजाबेथ को देखा। वह किसी व्यक्ति से कह रही थी—"कल संध्या को मैं घर पर नहीं रहूँगी।" अप्रत्याशित रूप से इस सूचना का मिल जाना भी रास्कोलनिकाफ़ को भाग्य की निश्चित योजना जान पड़ी। उस दिन वह रात-भर नाना प्रकार की दुश्चिन्ताओं से पीड़ित रहा। दूसरे दिन भी वह अपने गन्दे कमरे में गन्दे बिस्तर पर अर्द्धनिद्रावस्था में लेटा रहा। उसी अवस्था में तरह-तरह के दुःस्वप्न और दुर्भावनाएं उसके मस्तिष्क को आच्छन्न किए रहीं। अकस्मात् बाहर किसी का शब्द सुन कर वह जाग पड़ा। संध्या हो चुकी थी। उसने अपने को इस बात के

लिए धिक्कारा कि वह ग़ाफ़िल सोया हुआ है जब कि जीवन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य उसके आगे पड़ा हुआ है।

जिस मकान में वह रहता था उसी की एक कोठरी में एक कुली भी रहता था। उसकी कोठरी खुली थी और उस समय वहाँ कोई नहीं था। वहाँ एक कुल्हाड़ी रखी थी। रास्कोलनिकाफ़ चुपचाप वहाँ से कुल्हाड़ी उठा लाया और अपने ओवरकोट के भीतर उसे छिपा कर वह सूदखोर बुढ़िया के यहाँ गया। जिस कमरे में बुढ़िया रहती थी वह भीतर से बन्द था। रास्कोलनिकाफ़ बहुत देर तक ज़ोर से घन्टी बजाता रहा, पर किसी ने दरवाज़ा नहीं खोला। अन्त में बहुत देर बाद धीरे से दरवाज़ा खुला। रास्कोलनिकाफ़ भीतर घुसा। उसने देखा बुढ़िया मारे घबराहट के हाँफ रही है। वह जानता था कि बुढ़िया बहुत शक्की और डरपोक है। उसने कहा—"एलेना, मैं तुम्हारा पुराना परिचित रास्कोलनिकाफ़ हूँ।" बड़ी मुश्किल से बुढ़िया के होश ठिकाने लगे। दोनों रोशनी के पास गए। रास्कोलनिकाफ़ ने एक चीज़ निकाल कर बुढ़िया के हाथ में दी जो चारों ओर से तागे से इस मजबूती से बंधी थी कि उसका खुलना कठिन था। वास्तव में उसके भीतर टीन के एक टुकड़े के सिवा और कुछ नहीं था। बुढ़िया को फेर में डालने के लिए उसने उसे कपड़े से अच्छी तरह लपेट कर बाँध दिया था। उसने कहा—"जिस घड़ी का ज़िक्र मैंने तुमसे किया था, यह वही है, इसे मैं गिर्वी रखना चाहता हूँ।" बुढ़िया उसे खोलने लगी, पर वह खुलता नहीं था। इतने में रास्कोलनिकाफ़ ने कुल्हाड़ी निकाल कर उससे बुढ़िया पर कस कर एक चोट जमाई, बुढ़िया चीख़ उठी और गिर पड़ी। पहले रास्कोलनिकाफ़ झिझक रहा था, पर अब उसमें साहस आ गया। उसने बुढ़िया की चाँद पर दो बार कुल्हाड़ी से वार किया। ख़ून की धारा बह चली और बुढ़िया मर गई। इसके बाद रास्कोलनिकाफ़ बुढ़िया के पास से चाबियों का

गुच्छा निकाल कर सब बक्स और अलमारियों से बुढ़िया का सारा सञ्चित धन बटोरने लगा।

कुछ समय बाद उसने अकस्मात् किसी के रोने का शब्द सुना। पीछे लौट कर उसने देखा कि एलिज़ाबेथ अपनी बहन की लाश के पास बैठी रो रही है। उसकी घबराहट और आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि एलेना की हत्या करते समय उसे भीतर से दरवाज़ा बन्द करने का ध्यान ही नहीं रहा था! दरवाज़ा साफ़ खुला हुआ था, इसी कारण एलिज़ाबेथ भीतर घुस आई थी। उसने फ़ौरन दरवाज़ा बन्द किया। उसके सिर पर फिर एक बार भूत सवार हो उठा, और उसने कुल्हाड़ी उठाकर एक ही चोट में एलिज़ाबेथ का भी काम तमाम कर दिया। इस दूसरी हत्या से वह बहुत घबरा उठा, क्योंकि उसके लिये वह बिलकुल तैयार नहीं था। इसके बाद अपने हाथ में कुल्हाड़ी में और जूतों में लगे हुए रक्त के चिह्न धोकर उसने साफ़ कर डाले और भागने की चिन्ता करने लगा। पर इतने में दो आदमियों के ऊपर आने की आवाज़ सुनाई दी। रास्कोलनिकाफ़ सन्न होकर भीतर खड़ा रहा। दोनों आदमी ऊपर आए और उन्होंने बुढ़िया के कमरे की घन्टी बजाई। जब दरवाज़ा नहीं खुला, तो दरवाज़े पर धक्के देने लगे। बहुत देर तक पुकारने और चिल्लाने से भी जब कोई फल नहीं हुआ, तो उन्हें सन्देह हुआ, और वे कुछ और आदमियों को बुलाने के लिये नीचे गए। उनके जाते ही रास्कोलनिकाफ़ बाहर निकला और सीढ़ियों से होकर नीचे जाने लगा। जब वह दूसरी मंजिल में पहुँचा, तो उसे ऐसा जान पड़ा कि बहुत से आदमी ऊपर चले आ रहे हैं। उसने सोचा कि अब वह निश्चय ही पकड़ लिया जायगा और उसका बचना असंभव है। पर अकस्मात् ज़ीने के पास ही उसे एक ख़ाली अंधेरी कोठरी दिखाई दी। वह तत्काल उसके भीतर जाकर छिप

गया। जो आदमी ऊपर की ओर चले आ रहे थे वे सीधे चले गए। रास्कोलनिकाफ़ चुपचाप नीचे चला गया और गली में जनता की भीड़ में जाकर मिल गया।

उसे अब यह चिन्ता हुई कि बटोरा हुआ धन कहाँ छिपाना चाहिये। वह जब अपने डेरे में पहुँचा, तो रात भर उसकी सरसाम की-सी अवस्था रही। भयंकर दुःस्वप्नों के बीच में उसने यह तय कर लिया कि जो कुछ रुपया-पैसा और जवाहरात वह बुढ़िया के वहाँ से लाया है उसे नदी में डुबो देगा। पर दूसरे दिन उसका विचार बदल गया और कहीं गुप्तस्थान में सारा धन गाड़ देने का निश्चय उसने किया। एक कपड़े में सब चीज़ें बाँध कर वह पोटली को छिपा कर ले गया और एक गढ़े में उसे डाल कर एक बड़े पत्थर से उसे ढक दिया।

इस प्रकार उसने हत्या द्वारा प्राप्त धन को छिपा तो दिया, पर उसकी अन्तरात्मा प्रतिक्षण, प्रतिपल भयंकर-रूप से अशान्त रहने लगी। कभी उसके मन में यह भावना उत्पन्न होती कि अपने अमानुषिक अपराध को सबके आगे स्वीकार कर दे। पर फिर उसका विचार बदल जाता।

जिस पानशाला में उसने अफ़सर और विद्यार्थी के बीच सूदख़ोर बुढ़िया के सम्बन्ध की बातचीत सुनी थी, वहीं एक दिन एक अधेड़ अवस्था के शराबी से उसका परिचय हो गया। वह एक मध्यवित्त श्रेणी का भद्रपुरुष था, पर शराब की लत और बेकारी ने मिलकर उसे बरबाद कर दिया था। रास्कोलनिकाफ़ के साथ उसने बहुत देर तक बातें कीं, जिनसे रास्कोलनिकाफ़ को मालूम हुआ कि वह घोर दरिद्रावस्था में अपना जीवन बिता रहा है, और उसकी स्त्री और बालबच्चे भूखों मर रहे हैं। मारमेला-डाफ़ ने (शराबी का यही नाम था) यह भी सूचित किया कि उसके पहले ब्याह की लड़की सोनिया परिवार की भयंकर

आर्थिक दुरवस्था देखकर अपने यौवन को बेचने के लिये बाध्य हुई है, और पेशा करके वहाँ जो कुछ कमाती है वह सब अपनी सौतेली माँ को दे देती है।

रास्कोलनिकाफ़ उस विचित्र शराबी का पारिवारिक इतिहास सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। मारमेलाडाफ़ के कहने से वह उसके साथ उसके डेरे पर गया। वहाँ उसकी स्त्री और बालबच्चों की जो दुर्दशा उसने देखी उससे उसका दिल दहल उठा। जब सोनिया को रास्कोलनिकाफ़ ने पहली बार देखा, तो उसके मुख पर एक मार्मिक करुणा भरी दारुण विकलता के साथ ही एक अपूर्व स्निग्ध, शान्त, संयत और सलज्ज भाव झलकता हुआ पाया। उसे देखकर उसका हृदय बरबस रो पड़ा। यह बात समझने में उसे तनिक भी देर न लगी कि अपने शराबी पिता, दुःखिनी और अस्वस्थ सौतेली माँ और सौतेले भाई-बहनों को घोर आर्थिक संकटावस्था के कारण चरम विनाश से बचाने के उद्देश्य से ही उसने वेश्या का पेशा अख्तियार किया है, और वह आत्मत्याग की पराकाष्ठा का आदर्श समाज के आगे रखते हुए अपने शरीर को बेचकर अपने कुटुम्बी जनों की सहायता कर रही है।

कुछ समय बाद रास्कोलनिकाफ़ की माँ और उसकी बहन डूनिया उससे मिलने पीटर्सबर्ग आईं। अपनी माँ के एक पत्र से उसे पहले ही मालूम हो गया था कि डूनिया का विवाह लूशिन नामक एक अधेड़ अवस्था के अफ़सर से होना तय हुआ है। उसकी माँ ने लूशिन का परिचय जिस रूप में दिया था उससे रास्कोलनिकाफ़ को यह समझने में देर न लगी कि वह एक नम्बर का अर्थ-पिशाच है, और उसके मन में यह विश्वास जम गया कि वह डूनिया को एक दासी के बतौर रखने के लिये उससे विवाह करना चाहता है डूनिया कभी अपनी आन्तरिक इच्छा से उससे

विवाह करने को तैयार नहीं हो सकती, बल्कि परिवार की आर्थिक स्थिति का ध्यान रखते हुए इस प्रस्ताव पर राज़ी हुई है, इस बात का अनुमान भी उसने आसानी से लगा लिया था। उसकी माँ के पत्र में इस बात का स्पष्ट इंगित था कि लूशिन की सहायता से उसे (रास्कोलनिकाफ़ को) कोई नौकरी अवश्य ही मिल जायगी। निश्चय ही भाई के स्वार्थ को सामने रखते हुए डूनिया ने अपने जीवन और यौवन को भाड़ में झोंकने का निश्चय किया है! रह-रह कर यह कल्पना रास्कोलनिकाफ़ को बहुत दिनों से मर्म-पीड़ा पहुँचा रही थी। कुछ समय बाद जब लूशिन से उसकी भेंट हुई तो रास्कोलनिकाफ़ ने उसको अपमानित और तिरस्कृत किया। यह बात उसकी माँ और बहन को मालूम नहीं थी।

रास्कोलनिकाफ़ के उदार-हृदय मित्र राजूमिखेन के साथ जब उसकी माँ और बहन ने उसके गन्दे कमरे में प्रवेश किया, तो उसे तनिक भी प्रसन्नता नहीं हुई, बल्कि उसका विषाद-भाव और अधिक बढ़ गया। हत्या की भावना पाषाण-भार की तरह उसकी छाती को पहले से दबाए हुए थी, तिसपर माँ और बहन को देख कर परिवारिक दुश्चिन्ताओं ने विकट रूप से उसे धर दबोचा। कुछ देर तक इधर-उधर की बातें हुईं, अकस्मात् रास्कोलनिकाफ़ ने डूनिया के विबाह की चर्चा छेड़ दी। उसने कहा कि वह लूशिन से डूनिया का विवाह किसी दशा में भी नहीं होने देगा। इस बात से डूनिया बहुत क्रोधित हुई और उसकी माँ को बहुत दुःख पहुँचा। राजूमिखेन ने उन दोनों को समझा-बुझाकर शान्त किया और कहा कि इस समय रोडियन (रास्कोलनिकाफ़) का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं है, इसलिये वह इस तरह की बातें कर रहा है।

राजूमिखेन रास्कोलनिकाफ़ की तरह ही निर्धन था। पर वह बहुत ही सहृदय और सेवा-भाव-परायण था। रास्कोलनिकाफ़ के

यहाँ स्थान न होने के कारण उसने दोनों मां-बहन को अपने यहाँ ठहराया। डूनिया को देखते ही वह उसके प्रति प्रबल रूप से आकर्षित हो उठा था। डूनिया भी उसकी सहृदयता पर मुग्ध हो गई थी। पर राजूमिखेन अपने मन के भाव को बाहर प्रकट नहीं होने देना चाहता था; और डूनिया का भी यही हाल था।

एक दिन रास्कोलनिकाफ़ अपने सहज अन्यमनस्क और चिन्तित भाव से एक सड़क में निरुद्देश्य चला जा रहा था। अकस्मात् उसने देखा कि एक स्थान में भीड़ लगी है। भीड़ में जाकर उसने देखा कि एक अधेड़ अवस्था का व्यक्ति ज़मीन पर बेहोश पड़ा है। उसके सिर से खून बह रहा था। वह सोनिया का शराबी पिता, मारमेलाडाफ़ था। एक गाड़ी से दबने के कारण उसकी वह दुर्दशा हो गई थी। रास्कोलनिकाफ़ ने पुलिसवाले से कहकर मारमेलाडाफ़ को उसके डेरे पर पहुँचाया, और स्वयं फ़ीस देना स्वीकार करके एक डाक्टर को बुलवाया। मारमेलाडाफ़ की स्त्री, सोनिया और छोटे बच्चे उसे उस अवस्था में देखकर व्याकुल भाव से रोने लगे। डाक्टर आया, पर मारमेलाडाफ़ को बचाया नहीं जा सका। उसकी स्त्री के पास अपने पति के अन्तिम सत्कार के लिये एक पैसा भी नहीं था, और सोनिया परिवार की सहायता के लिये घृणित पेशा करने को बाध्य होने पर भी कुछ कमा नहीं पाई थी। रास्कोलनिकाफ़ के पास किसी से उधार लिये हुए बीस रूबल (प्राय: चालीस रुपये) थे। उसने वे सब सोनिया की सौतेली मां के हाथ में दे दिए, और चुपचाप बाहर चला आया। सोनिया ने अपनी एक छोटी सौतेली बहन को उसके पीछे दौड़ाकर उसका पता पूछ लिया। दूसरे दिन सोनिया रास्कोलनिकाफ़ के डेरे में गई। उस समय रास्कोलनिकाफ़ की मां और डूनिया भी उसके पास बैठी हुई थीं। सोनिया उन्हें देखकर बहुत घबराई। रास्कोलनिकाफ़ का अत्यन्त सहृदयतापूर्ण व्यवहार देखकर उसे साहस हुआ, और

उसने उसे अपने पिता के अन्तिम संस्कार और भोज के लिये रास्कोलनिकाफ़ को निमन्त्रित किया, साथ ही उसने उसकी मां को जो आर्थिक सहायता दी थी उसके लिये हार्दिक धन्यवाद दिया। सोनिया के जाने के पहले रास्कोलनिकाफ़ ने उससे उसका पता पूछा। सोनिया ने अत्यन्त लज्जित भाव से अपना स्वतन्त्र पता बता दिया।

संध्या को रास्कोलनिकाफ़ उस मकान में गया, जहाँ सोनिया एक स्वतन्त्र कमरा किराए में लेकर अपनी इच्छाओं के विरुद्ध परिस्थितियों से विवश होकर, यौवन की दुकान खोले हुए थी। रास्कोलनिकाफ़ को देख वह निदारुण लज्जा और ग्लानि से संकुचित और त्रस्त हो उठी। रास्कोलनिकाफ़ ने कहा—"मुझे मालूम है कि तुम क्यों इस प्रकार का जीवन बिताने के लिये विवश हुई हो!"

सोनिया जब कुछ संभली, तो रास्कोलनिकाफ़ ने उससे प्रश्न किया कि इस प्रकार का जीवन बिताने पर भी वह दरिद्र क्यों है। सोनिया ने उत्तर दिया कि उसने कई बार धन संचय करने का प्रयत्न किया, पर कुछ विशेष कारणों से वह सफल न हो सकी। वे 'विशेष कारण' क्या थे, यह रास्कोलनिकाफ़ जानता था। उसका रहन-सहन जिस कोटि का था, उससे यह बात स्पष्ट प्रकट थी कि उसके पास धनी ग्राहक नहीं आते। तिस पर उसके पिता ने उससे बहुत-से रुपये लेकर शराब पीने में फूँक दिए थे, और अपनी बची-खुची आय वह अपनी सौतेली मां को दे दिया करती थी। अब उसकी यह दशा थी कि वह किराए का रुपया चुकाने में असमर्थ थी, और मकान की मालकिन नें उसे नोटिस दे दिया था।

रास्कोलनिकाफ़ कुछ देर तक उसकी बातें सुनता रहा। पहले तो सोनिया के प्रति एक क्रोध का-सा भाव उसके मन में उत्पन्न हुआ। पर शीघ्र ही एक अपार श्रद्धा की भावना उसके भीतर उमड़ चली, और वह गद्गद भाव से सोनिया के सामने लोटकर

उसके चरण चूमने लगा। सोनिया ने घबराकर कहा—'आप यह क्या अंधेर करते हैं!" रास्कोलनिकाफ़ ने उत्तर दिया—"मैंने तुम्हें नहीं, बल्कि तुम्हारे रूप में व्यक्त पीड़ित मानवता को प्रणाम किया है।" इसके बाद काफ़ी देर तक इन दोनों के बीच धर्म और जीवन के संबंध में बातें होती रहीं। रास्कोलनिकाफ़ ने देखा कि सोनिया की धर्म-परायणता असाधारण है, और तिसपर भी वह अपने पतित जीवन के दलदल से मुक्त होने में असमर्थ है। वह उसमें मुक्त होने के लिये छटपटा रही थी, पर जितनी ही चेष्टा करती थी, उतना ही अधिक उसमें धँसती जाती थी। रास्कोलनिकाफ़ को इस बात पर अत्यन्त आश्चर्य हो रहा था कि उस पंकिलता में डूबे रहने पर भी सोनिया अपनी आत्मा को पूर्ण रूप से निष्कलंक बनाए रखने में कैसे सभव हुई है। इस संबंध में वह जितना ही सोचता था उतना ही अधिक विस्मय उसे होता था, और उस पतिता के प्रति श्रद्धा का भाव उसके मन में बढ़ता चला जाता था। रह-रहकर उसके मन में यह लहर उठती थी कि अपने पाप का सारा कच्चा चिट्ठा उस निष्पाप-हृदया अभागिनी नारी के आगे खोलकर अपनी छाती के वज्रभार को हलका करे। पर बात उसके गले में अटक जाती थी। जब वह सोनिया के यहाँ से चला गया, तो सोनिया के मन में उसके संबंध में एक अत्यन्त रहस्यात्मक प्रश्न उत्पन्न हो गया। रास्कोलनिकाफ़ के हृदय की उदारता और सद्भावना के विषय में तो कोई सन्देह ही उसके मन में नहीं रह गया था, पर उसकी अस्पष्ट बातों से सोनिया को कुछ ऐसा भान होने लगा था कि उसकी आत्मा किसी अत्यन्त गहन और मार्मिक वेदना के भार से पीड़ित है।

वास्तव में रास्कोलनिकाफ़ की बेचैनी दिन पर दिन बढ़ती चली जाती थी। वह अपने मन की बात किसी से खुलकर नहीं कह सकता था, इस कारण उसकी अशान्ति ने और अधिक विकट

रूप धारण कर रखा था। मन और मस्तिष्क की उत्तेजित अवस्था के कारण उसे मृगी रोग हो गया था और समय-समय पर उसे मूर्च्छा आ जाया करती थी। वह मजिस्ट्रेट से उसके घर पर कई बार मिला, और प्रत्येक बार उसने अपने अपराध को स्पष्ट शब्दों में स्वीकार करने का प्रयत्न किया, पर कर न सका। इधर सूदखोर बुढ़िया और उसकी बहन की हत्या के मामले की जाँच पुलिस बड़ी सरगर्मी से कर रही थी, और कई निरपराध व्यक्तियों को सन्देह पर गिरफ्तार कर लिया गया था। रास्कोलनिकाफ़ के मन की अस्थिरता चरम सीमा को पहुँच गई थी। एक दिन उसने प्रबल शक्तिसे अपने मन की सारी दुबिधा हटाकर सोनिया के आगे अपना सारा पाप खोल दिया। सोनिया पहले तो वज्र-स्तम्भित रह गई। रास्कोलनिकाफ़ को पूरा विश्वास था कि उसकी स्वीकारोक्ति सुनकर सोनिया निश्चय ही उससे भयंकर रूप से घृणा करने लगेगी। वास्तव में कुछ समय के लिये सोनिया की भ्रान्ति ने अत्यन्त उत्कट रूप धारण किया; पर बाद में जब वह उस आकस्मिक धक्के से संभलकर उठी, तो उसने विस्मय-विमूढ़ रास्कोलनिकाफ़ के गले में अपनी दोनों बाहें डाल दीं और कहा—"तुमने महापाप किया है। तुम्हारी आत्मा विनष्ट हो चुकी है। इसलिये तुमसे अधिक पीड़ित व्यक्ति इस समय संसार में दूसरा शायद ही कोई हो।" यह कहते हुए उसकी आँखों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी।

रास्कोलनिकाफ़ ने अत्यन्त व्यथित भाव से कहा—"सोनिया, मैंने संसार का त्याग दिया है और संसार ने भी मुझे त्याग दिया है। मैं जानता हूँ कि मैंने महापाप किया है। मैं जानता हूँ कि मेरी आत्मा विनष्ट हो चुकी है। इसीलिये मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। मेरा उद्धार करो, सोनिया!"

सोनिया ने उत्तर दिया—"मैं स्वयं महापापिनी हूँ, मैं तुम्हारा क्या उद्धार कर सकती हूँ! मेरे प्रियतम, मेरे सर्वस्व, तुम इस

अभागिनी के जीवन में पहले क्यों नहीं आए ? यदि पहले आए होते, तो संभव है दोनों भयंकर भूल से बच गए होते ! कुछ भी हो, यह निश्चय है कि अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकती । तुम चाहे स्वर्ग में जाओ चाहे नरक में, मैं तुम्हारे ही साथ रहूँगी । मैं तुम्हारे साथ ही फाँसी पर चढ़ूँगी ।"

उसका भावावेग जब कुछ शान्त हुआ, तो उसने कहा—"आश्चर्य है ! तुम्हारे समान उदार-हृदय, सहृदय और समझदार व्यक्ति किसी की हत्या करे ! तुमने हत्या क्यों की ? अपनी दरिद्रावस्था से तंग आकर ?"

"नहीं सोनिया, मैंने रुपये के लोभ से हत्या नहीं की । मैंने हत्या की नेपोलियन बनने के लिये । मैंने सोचा कि यदि नेपोलियन के समान किसी [illegible] व्यक्ति को अपनी महत्त्वाकांक्षा की चरितार्थता के लिये रुपयों की आवश्यकता होती, तो क्या वह अर्थहीन जावन [illegible] भी उस कंजूस बुढ़िया की हत्या करने से हिचकिचाता ? कदापि नहीं । किसी महान उद्देश्य को सामने रखकर एक साधारण बुढ़िया की हत्या से पीछे रहनेवाला व्यक्ति निश्चय ही कायर है, यह सोचकर मैंने अपने संबंध में इस बात की परीक्षा करने का निश्चय किया कि मैं कायर हूँ या नहीं । इसी निश्चय के फलस्वरूप मैंने निरर्थक दो स्त्रियों की हत्या कर डाली । कुछ भी हो, अब मैं तुमसे यह पूछना चाहता हूँ कि अब मुझे क्या करना चाहिये ?"

सोनिया स्तब्ध होकर उसकी बातें सुन रही थी । सहसा उसने कहा—"तुम्हें प्रायश्चित करना होगा, नहीं तो तुम्हारा उद्धार नहीं हो सकता । तुम्हें बाहर सड़क में जाकर प्रत्येक व्यक्ति के आगे चिल्लाकर यह कहना होगा—'मैंने खून किया है ! मैं हत्याकारी हूँ !' अपना अपराध स्वीकार करके तुम्हें सहर्ष दण्ड को स्वीकार कर लेना चाहिये ! रात-दिन महापाप का भार अपनी छाती पर लेकर तुम जो घोर दुःखमय जीवन बिता रहे हो, उससे तुम्हें तभी मुक्ति मिलेगी, अन्यथा नहीं ।"

सोनिया की इस बात का बड़ा गहरा प्रभाव रास्कोलनिकाफ़ पर पड़ा। फिर भी अपराध स्वीकार करने के लिये उसका हृदय तत्काल सम्मत न हो सका। पर अन्त में उससे न रहा गया, और उसने अपराध स्वीकार कर लिया। उसे आठ वर्ष तक साइबेरिया में देश-निकाले की सज़ा हुई। सोनिया भी उसके साथ गई।

उसके चले जाने बाद उसकी मां के और बहन के दुःख का ठिकाना न रहा। विशेष कर उसकी मां की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो उठी। डूनिया राजूमिखेन के साथ में अपने भाई का दुःख थोड़ा-बहुत भूलने में समर्थ हुई। राजूमिखेन उन दोनों को सान्त्वना दिया करता था। रास्कोलनिकाफ़ की मां राजूमिखेन को अपने बेटे के समान ही चाहने लगी थी। निर्वासन में जाने के पहले रास्कोलनिकाफ़ ने डूनिया के आगे अपनी यह इच्छा परोक्ष रूप से प्रकट की थी कि यदि राजूमिखेन से डूनिया का विवाह हो जाय, तो उसे बड़ी प्रसन्नता होगी। डूनिया और राजूमिखेन वास्तव में एक-दूसरे को हृदय से चाहने लगे थे। डूनिया की मां की भी यह इच्छा थी कि उन दोनों का विवाह हो जाय। फलस्वरूप दोनों ने अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक विवाह कर लिया। विवाह के कुछ समय बाद रास्कोलनिकाफ़ की मां चल बसी। प्रारंभ में कुछ समय तक रास्कोलनिकाफ़ को साइबेरिया का निर्वासित जीवन अत्यन्त कष्टकर मालूम हुआ। पर सोनिया की अक्लान्त सेवा और आश्चर्यजनक त्याग ने धीरे-धीरे उसकी आत्मा को केवल विशुद्ध ही नहीं बनाया, बल्कि कष्ट सहने की महाशक्ति भी उसमें जगा दी। धीरे-धीरे उसे ऐसा अनुभव होने लगा कि उसका पाप धुलकर उसकी आत्मा में नव-जीवन के उस शुभ प्रभात की पुण्यच्छाया भासित होने लगी है जब सोनिया के निःस्वार्थ प्रेम के अमृतरसपूर्ण अनन्त सागर में निर्द्वन्द्व बहता हुआ वह अमर आनन्द का अनुभव करेगा।